सूत्रधार

हास्य-व्यग्य एकांकियों
का
एक अछूता सकलन

SOOTRADHAAR

(A Collection of saturical one act plays)

by

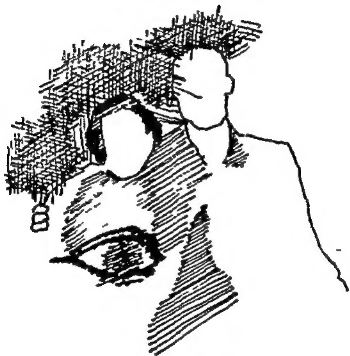
SUDHINDRA KUMAR

Rs 45.00

कादम्बरी प्रकाशन

5451 शिव मार्किट, न्यू चन्द्रावल
जवाहर नगर, दिल्ली-110007 (भारत)

सूत्रधार



सुधीन्द्र कुमार

मूल्य पैंतालीस रुपये
सर्वाधिकार सुधीन्द्र कुमार
संस्करण प्रथम 1991
आवरण चतनदास
प्रकाशक कादम्बरी प्रकाशन
5451 शिव मार्किट,
न्यू चन्द्रावल जवाहर नगर
दिल्ली 110007
लेजर कम्पोजिंग साकेत फोटो टाइपसेटर्स
97 सुन्दर ब्लाक शकरपुर
दिल्ली 110092 दूरभाष 224 0182
आफसेट मुद्रण नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस
बलबीर नगर शाहदरा दिल्ली 110032

ISBN 81-85050-29-5

निवेदन

ललित साहित्य का एक प्रेरक अनुभव भी होता है। विशेषकर समाजोन्मुखी साहित्य में साहित्यकार के सामाजिक अनुभव प्रतिबिम्बित होते हैं। समाज का परिदृश्य जैसा होता है, सामाजिक साहित्य उसे वैसा ही प्रतिबिम्बित करता है किन्तु प्रतिबिम्बन ही उसका एकमात्र लक्ष्य नहीं होता, उसमें साहित्यकार का स्वप्न भी जुड़ा हुआ होता है क्योंकि साहित्यकार अपने स्वप्न को साकार करने के लिए, अपनी इच्छा को प्रकाशित करने के लिए अपनी भावना को शब्दों में बाँधकर प्रस्तुत करता है। समग्र ललित साहित्य में केवल नाटक ही ऐसी साहित्य विधा है, जो अपने दृश्य और श्रव्य गुणों के कारण सामाजिक की चित्तवृत्ति को अधिक तीव्रता के साथ प्रभावित और प्रेरित करता है। इस विधा का चाक्षुष आयारफलक जितना सीमित होता है, उसकी विषयवस्तु जितनी गंभीर होती है और प्रस्तुति जितनी त्वरायुक्त होती है, दर्शक के हृदय में उतनी ही गहराई तक प्रभाव प्रक्षेप करता है। एकांकी नाटक साहित्य की ऐसी ही विधा है।

हास्य व्यंग्य एकांकी हँसी हँसी में गहरी बात कह जाने में निपुण होते हैं। केवल हास्य जगानेवाले एकांकी काँच पर की भाप की तरह अस्थायी छाप डालते हैं। वे मनोरंजन अवश्य करते हैं, गुदगुदाते भी खूब हैं, आँखों से आँसू भी बहा देते हैं। लेकिन वे पेट में दर्द करते हैं जबकि व्यंग्य एकांकी दिल में दर्द जगाते हैं। उससे पनपी मुस्कराहट कभी कभी हास्य बनकर गले से किलक स्वर भी निकाल देती है, पर उसके तले में पीड़ा की टीस होती है, इसलिए उसका प्रभाव दीर्घजीवी होता है। 'सूत्रधार' ऐसे ही एकांकियों का संकलन है। इन एकांकियों में समकालीन समाज की व्यंग्योन्मुखी छवियाँ हैं और इन छवियों में बड़ी विविधता है। इस संकलन में किशोरों से लेकर बुजुर्गों तक की छवियाँ आपको मिलेंगी। इन छवियों के पीछे किसी की विवशता दिखलाई पड़ेगी तो किसी की व्यग्रता, किसी की आतुरता मिलेगी तो किसी का शोषण मिलेगा किसी का बहुरूपियापन झलकेगा तो किसी का दर्द। मतलब यह कि इस एकांकी संकलन में सबके मतलब की बातें हैं। इन बातों में उपदेश नहीं झलकियाँ हैं जिनसे कोई मन बहलाना चाहे तो, सीखना चाहे तो सिखाना चाहे तो और 'टाइम पास' करना चाहे तो—अलबत्ता निराशा किसी को नहीं होगी। कान्तासम्मित उपदेश उपदेश नहीं होता, मनुहार होता है जिससे भले आदमी पिघल जाते हैं और

इन एकांकियों में झाँकिए और देखिए कि आप सूत्रधार हैं या पात्र अथवा मूक द्रष्टा मात्र ।

किन्तु केवल एक निवेदन अवश्य मान लीजिए। इन एकांकियों का किसी भी तरह का उपयोग करने से पहले मुझे सूचित अवश्य कर दीजिए।

सी 3ए / 20 बी जनकपुरी
नयी दिल्ली 110058

सुधीन्द्र कुमार

अनुक्रम

अतिम पडाव का दर्द

आशा सिंह	पति
तलविन्दर कौर	पत्नी
शर्मा	पडौसी
सुमन	शर्मा की पत्नी

[बैठक में एक ओर डाइनिंग टेबल, कुर्सियाँ, फ्रिज और दूसरी ओर सोफ़े, मेज, दीवान, स्टूल, कैलेण्डर, टी वी यथास्थान रखे हुए हैं। सामने की दीवार पर गुरु गोविन्द सिंह का भव्य चित्र टँगा हुआ है। उसके नीचे रखे दीवान पर पालथी मारे पैंसठ वर्षीय आशा सिंह बैठे हैं। उनके हाथ की माला उँगलियों के बीच घूम रही है और उनके होठ हिल रहे हैं, जिससे लगता है कि वह जप कर रहे हैं। थोड़ी देर बाद उनकी पत्नी तलविन्दर कौर ट्रे में चाय के दो प्याले लेकर आती है और सेण्ट्रल टेबल पर रख देती है। वे दोनों थमथम कर बातचीत करते हैं।]

तल० लो जी चाय पी लो। (आशा सिंह के पासवाले सोफ़े पर बैठ जाती है। आशा सिंह माला पूरी होने पर माथे से लगाते हैं और उसे थैली में रख देते हैं। वह खिसक कर सेण्ट्रल टेबल की ओर आते हैं, तभी तलविन्दर उनको एक प्याला थमा देती है। आशा सिंह कुछ देर तक चाय सुडकते रहते हैं।) प्रीतम सिंह की कोई चिट्ठी नहीं आई। कहीं वह बीमार तो नहीं हो गया ? (आशा सिंह निरुत्तर चाय सुडकते रहते हैं।) उसका बडा काका पतग उड़ाते वक्त छत से गिर गया था। प्रीतम सिंह ने चिट्ठी में लिखा था कि उसके बहुत चोट आई है। गुर किरपा से वह बच गया है। चाय के सग बिस्कुट लोगे ?

आशा० नहीं। (रुककर) तुम्हारे दर्द का क्या हुआ?

तस० (घुटनों पर हाथ फेरती हुई) अब तो कुछ कम है।

आशा० गोलियाँ टाइम से खाती रहोगी, तभी दर्द बन्द होगा।

तस० : अब क्या बन्द होगा। यह तो शरीर के साथ ही जायेगा।

आशा० फिर भी (चाय का घूट लेकर) आज माई नहीं आई?

तस० नहीं, मैंने उसे हटा दिया है।

आशा० क्यों?

तस० घर में काम ही कितना है? हम दो ही तो परानी हैं। जब तक देह में दम है, तब तक मैं कर लूँगी। बाद में माई लगा लेना।

आशा० तुम्हारी अक्ल तो, लगता है, घास चरने गई है। अरे भई, काम कितना ही कम सही, काम है तो। तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती। ब्लडप्रेशर हाई रहता है, जोड़ों में गठिया का दर्द रहता है। जब तब खाँसी बुखार हो जाता है।

तस० यह सब तो चलना ही है। काम करूँ, चाहे ना करूँ। काम से ज़रा वाहियात बात सोचने से छुटकारा मिल जाता है। तुम तो किताबें लिख पढ़ कर वक्त काट लेते हो, मैं कैसे काटूं? सारी उमर काम किया है। अब भी करती रहूँ, तो अच्छा है। पता नहीं, लोग खाली कैसे बैठ रोते हैं। मुझसे तो बैठा नहीं जाता।

आशा० ज़्यादा बकवास मत करो। माई को रख लो। मुझे पता है कि तुम्हारा शरीर काम के लायक नहीं रहा। ऐसे ही, अर्जुनसिंह ने एक लड़का भेजा था कि वह घर के काम में तुम्हारा हाथ बँटा देगा तुमने उसे भी कुछ दिनों के बाद वापस भेज दिया।

तस० (प्याला ट्रे में रखकर) हाँ अर्जुन ने हम पर बड़ी मिहरबानी की थी कि लड़का भेज दिया। उस लड़के का खरच भी भेज दिया होता, तो मैं जानती। रोज किलो आटा खा जाता था। हम भले ही सूखी रोटी खाएँ, उसे चुपड़ी रोटी चाहिए थी। सूखी रोटी उसके हलक से नीचे नहीं उतरती थी। रुपए की सब्जी खाता था दो की बताता था। हमें दूध मिले कि न मिले उसे सुबह शाम दूध पीने की आदत थी।

अर्जन ने कभी यह भी देखा कि हमारा घर कैसे चल रहा है, गुजारा कैसे हो रहा है ? लड़का भेज दिया, बड़ा फर्ज निभा दिया।

आशा० : जब तक वह लुधियाने में रहा, तब तक तो वह महीने दो महीने में एक बार हालचाल देख ही जाता था। अब अमरीका चला गया है, तो हमारे हालचाल, खर्च गुजारे के बारे में कैसे जान सकता है ?

रास० : रहने भी दो। मैं खूब जानती हूँ तुम्हारे अर्जन को। उसे हमारी फ़िकर होती तो अमरीका जाने से पहले हमसे मिलकर नहीं जा सकता था ? दिल्ली आया, पालम के पास होटल में ठहरा और दूसरे दिन फुर्र से उड़ गया। जाने से पहले अपने बालबच्चों के साथ 'पैरीपैणा' कहने नहीं आ सकता था ? बड़ा चालाक लड़का है वो। अमरीका जाकर चिट्ठी से माफ़ी माँग ली कि यहाँ आने के लिए उसे वक्त नहीं मिल पाया। मैं खूब जानती हूँ उसे।

आशा० खाक जानती हो उसे। बिजिनेसमैन है। वह अपना बिजिनेस देखे कि तुम्हें देखे।

रास० हाँ, हम बुड्ढों ठुड्ढों से उसे अब क्या मिलना है। बिजिनेस तो उसे लाखों रुपया देगा।

आशा० : अब रहने भी दो। ज्यादा बोलने से ब्लडप्रेशर बढ़ जाएगा।

रास० बढ़ जाने दो। जल्दी खेल खत्म हो। इस जिन्दगी में अब धरा भी क्या है ? सुबह से शाम तक उमर कैदियों की तरह इन्हीं कमरों में घूमते फिरते, उठते बैठते खाते पीते, सोते जागते रहो। हु। मुझे तुम्हारी फिकर न हो, तो मैं कोई दवाई-गोली न खाऊँ।

आशा० इसके अलावा और क्या कर सकते हैं ? तुमसे कितनी बार कहा है कि गुरबाणी पढ़ा करो, पर तुमने कभी मेरी बात मानी हो, तब ना।

रास० मेरा जी नहीं लगता। मन में क्लेस हो, तो चैन कैसे मिल सकता है।

[सलाइयाँ उठाकर अधबुना स्वेटर बुनने लगती हैं।]

आशा० : देखो, तुम माई को रख लो। तुम लेटे बैठे के काम कर लिया करो।

रास० मैं माई नहीं रख सकती। घर का खरच कितनी मुश्किलों से चल रहा है, यह तुम्हें क्या मालूम। तुम्हारी पेन्शन से तो राशन भी नहीं

आ पाता। अगर तुम्हारा दामाद देखभाल न करे, तो हमें खाने के भी लाले पड जाएँ। भगवान भला करे हमारी कुड़ी का। वह बेचारी कभी खुद, कभी अपने आदमी को भेज कर हमारी खोज खबर तो लेती रहती है और देख जाती है कि यहाँ किसी सामान की कमी तो नही है। कुछ भेजती ही रहती है। इतने लड़कों से तो हमारी यह एक लड़की ही लाख दरजे अच्छी है। शादी से पहले भी वह हमारी देखभाल रखती थी, नौकरी के साथ साथ घर के काम भी संभालती थी और अब शादी के बाद भी हमारा ख्याल रख रही है।

आशा० तुम तो जब बोलने पर आती हो तो बोलती ही चली जाती हो।

तल० बोलूँ नही, तो क्या करूँ ? मैं जानती हूँ कि तुम अपने बेटों के खिलाफ कुछ सुन नहीं सकते, इसलिए तिलमिला रहे हो।

आशा० (मुस्करा कर) मैं तिलमिला नहीं रहा हूँ। मैं तो यह मानता हूँ कि हमें किसी से कुछ उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हमने जिन्दगीभर अपना फर्ज निभाया, अब दूसरे अपना फर्ज निभा रहे हैं।

तल० अ हा हा हा ! दूसरे बड़ा अपना फरज निभा रहे हैं। या तो पुराने जमाने में वो कौन था ? हाँ, वो सरवन कुमार था जो वो पैदा हुआ था या अब तुम्हारे बेटे हुए हैं, जो अपना फरज पहचानते हैं।

आशा० तुम कैसी बातें कर रही हो। सबकी अपनी गृहस्थी है, सबकी अपनी परेशानियाँ हैं।

तल० : क्या कहने उनकी गिरस्ती के, क्या कहने उनकी परेशानियों के। कभी तुम्हारी भी तो गिरस्ती थी, तुम्हारी भी परेशानियाँ थीं। तुम्हारे तीन बच्चों पाँच भाजे भांजियों और तुम्हारी विधवा बहन के साथ तुम्हारे माता पिता का मैंने किस तरह धियान रखा था। तब तुम्हें कुल जमा सात सौ रुपए मिलते थे जिसमें से मैं महीने का खरच चलाती थी। उसी आमदनी से हमने आठ बच्चों को पढ़ाया लिखाया ब्याह किए। तुम समेत चार बड़ों की सेवा की तब कभी तुमने मेरे चेहरे पर शिकन देखी ? तुम्हारी अम्मा भी कुछ साल पहले मुझे असीसें देकर ही मरी हैं।

आशा० : उन बातों को बार बार दुहराने से क्या फायदा ? मैं जो कह रहा हूँ, वह तो सुनती नहीं हो ।

तल० : क्या ?

आशा० : यही कि तुम माई रख लो ।

तल० : देखो जी, साफ कहना, सुखी रहना । माई पैसे बढ़ाने को कह रही थी । सारे काम के अस्सी रुपये माँग रही थी ।

आशा० : साठ से एकदम अस्सी ।

तल० : हाँ, और चाय नाश्ता अलग माँग रही थी । जितनी तुम्हारी पेंशन आती है, उसमें उसकी तनखा बढ़ाना और चाय नाश्ता देना मुश्किल है ।

आशा० : और कोई देख लो ।

तल० : कोई मरी सीधे मुँह बात ही नहीं करती [redacted] । इनके दिमाग सातवें आस्मान पर चढ़ गए हैं । जिससे साठ रुपये लेने की बात करो, वही फटाक से कह देती है कि बीबी जी हमें तनखा नाश्ता मत दो, हमारे बच्चों के लिए एक टैम का खाना दे दिया करो ।

आशा० : (हँस कर) बड़ी अच्छी पेशकश है ।

तल० : देख लो । इस पर भी तुम कहते हो कि माई रख लो ।

आशा० : मैं तो तुम्हारी सेहत का ख्याल करके कह रहा हूँ ।

तल० : और मैं तुम्हारे पैसों का ख्याल करके कह रही हूँ ।

[आशा सिंह अखबार उठा लेते हैं और तलविन्दर बुनाई में लगी रहती हैं ।]

आशा० : (इधर उधर देखने के बाद) मेरा चश्मा कहाँ है ?

तल० : (सलाइयाँ स्वेटर एक ओर रखकर उठती हुई, झुकी कमर पर दोनों हाथ रखकर कराह उठती है) हाय रब्बा, इस कमर का दरद तो जैसे जान लेकर ही छोड़ेगा ।

आशा० : (उठने से रोकते हुए) तुम रहने दो, मैं ले लूँगा ।

तल० : रहने भी दो । तुमने अपने हाथ से कभी कोई काम किया भी है, जो अब करोगे ।

आशा० तभी तो मैं कहता हूँ कि माई रख लो। उठा बैठा जाता नहीं है घर का काम कैसे करोगी।

तल० तुमने तो बस एक ही रट लगा रखी है - माई रख लो माई रख लो। मेरी यह बात तुम्हारे कानों में नहीं घुस रही है कि उसे देने के लिए पैसे नहीं हैं। (कालबेल बजती है। तलविन्दर धीरे धीरे दरवाजे पर जाकर एक पत्र ले आती है) लो जी, लगता है प्रीतम की चिट्ठी आई है। मैं कह रही थी ना कि बहुत दिनों से उसकी कोई चिट्ठी नहीं आई है। लो, आज आ गई। (पत्र आशा सिंह को दे देती है फिर चश्मा लाकर देती है। आशा सिंह चश्मा लगाने के बाद पत्र को खोलकर पढ़ने लगते हैं) जरा उच्चा उच्चा बोल कर पढो जी, की लिखिया है?

आशा० लिखा है कि (पत्र पढते हैं) उसके काका के पैर की हड्डी टूट गई थी

तल० फिर?

आशा० उसके प्लास्टर चढ़ गया है।

तल० हूं।

आशा० वह आप दोनों को याद करता है। जल्दी आ जाइए।

तल० काका याद करता है, इसलिए जल्दी आ जाइए। वो खुद भी कभी हमारी याद करता है?

आशा० और आगे भी तो सुनो। (पत्र पढते हैं) आपकी बहू के कुछ होने वाला है।

तल० हाँ यह हुई न असली बात। काका याद नहीं कर रहा है, बहू याद कर रही है। वह अब बिस्तर पर पड़ गई होगी। घर का काम करने के लिए रोटियाँ थापने के लिए प्रीतम को मेरी याद आ रही है। मुझे नहीं जाना है उस मक्कार के पास। बुढ़ापे में भी मुझे चैन नहीं लेने देता। बुला ले न अब अपनी सालियों को सलहजों को। लाड़ लड़ाने को तो साली सलहजें, काम करने को मुझे नहीं जाना है उस बेशरम के पास।

आशा० : तुम्हें गुस्से का जब दौरा पड़ता है तो किसी को भी नहीं बख्शती हो।

तल० क्यों रखूँ। मैंने क्या किसी की कमाई खाई है?

आशा० आखिर वह है तो तुम्हारा बेटा। अगर वे मुसीबत में हैं तो हमारी याद ही करेंगे, और किसकी करेंगे।

तल० साली सलहजों की करें।

आशा० अरे, वे तो सुख के साथी हैं।

तल० और हम? हम केवल दुख के साथी हैं?

आशा० हम माँ बाप हैं। हमारा फ़र्ज

तल० (हाथ झटक कर)फरज, फरज, फरज। फरज केवल हमारे लिए रह गया है? उसका कोई फरज नहीं है कि अपने बूढ़े माँ बाप को अपने पास रखे, उनकी सेवा करे।

आशा० (झुंझलाकर) तुम्हारे सवालों से तो मैं तंग आ गया हूँ।

तल० और तुम्हारे फरजों से मैं तंग आ गई हूँ। (आशा सिंह पत्र पढ़ते हैं) और क्या लिखा है?

आशा० सुनाने से क्या फायदा? तुम तो बात बात पर मुझे काटने दौड़ती हो।

तल० (आशा सिंह को एकटक देखने के बाद धीरे धीरे सोफ़े पर बैठ जाती है और स्वेटर उठाकर बुनने लगती है) ठीक है, तुमको भी मेरी बातें काटनेवाली लगने लगी हैं। अब मैं कुछ नहीं बोलूँगी। थोड़े दिन और जीना है, फिर तुम्हें कोई नहीं काटेगा।

आशा० बस, कुछ कह दो, मरने की धमकी। यह नहीं सोचती हो कि बुढ़ापे को किसी तरह सुख चैन से काट लें। हमेशा जली कटी बातें कहने से तुमको सुख मिलता हो, तो मिलता हो, मुझे तो कम से कम नहीं मिलता। तुम्हें पता ही है कि मैंने कभी किसी की बुराई पसन्द नहीं की। कोई बुरा है तो बुरा बना रहे। हम तो अच्छे रहें।

तल० तुम अच्छे बने रहो। मेरे बदन में अब इतनी ताकत नहीं है कि मैं प्रीतम के घर का काम सम्भालूँ और उसकी बहू की सेवा करूँ। उसके पास पैसा है, पैसे से वह कामवाली रख सकता है और सेवादार भी।

आशा० : तो मैं लिख दूँ कि हम नहीं आ सकते है ? (तलविन्दर स्वेटर बुनती रहती है। आशा सिंह पत्र रखकर अखबार उठा लेते हैं। कालबेल बजती है, तो तलविन्दर उठना चाहती हैं, पर आशा सिंह उसे रोककर स्वय दरवाजे पर जाते हैं। मुस्कराकर)आओ बेटा आओ। आओ बहू, आओ। (तलविन्दर से) शर्मा साब आए हैं। साथ में बहूरानी भी हैं।

[शर्मा और उनकी सुमन पत्नी क्रमश आशा सिंह और तलविन्दर के आगे 'प्रणाम' कहते हुए झुकते है और वे दोनों उनके सिर पर हाथ फेर कर 'सुखी रहो', 'खुश रहो' कहते हैं।]

तल० आओ बैठो। (सुमन तलविन्दर के पास बैठ जाती है और शर्मा आशा सिंह के सामने) अब की बार बहुत दिनों में आना हुआ।

सुमन ऐसे ही जरा चक्कर पड गये थे।

तल० क्यों क्या हुआ ?

सुमन पिता जी बाथरूम में फिसल कर गिर पडे थे।

आशा० अच्छा। कब ?

शर्मा पन्द्रह दिन हो गये।

आशा० अब क्या हाल है ? ज्यादा चोट तो नहीं आई ?

शर्मा कूल्हे के बल गिरे थे पर वहाँ कुछ नुकसान नहीं हुआ दर्द मात्र है। न बचाव के लिए उन्होंने हथेली टिकाई थी इसलिए कलाई की हड्डी टूट गई है।

आशा० यह तो बहुत बुरा हुआ। फिर ?

शर्मा कलाई पर प्लास्टर चढा है।

आशा० फिर तो बीस पच्चीस दिन बाद पता चलेगा कि हड्डी जुड़ी है कि नहीं। बुढ़ापे का शरीर है।

शर्मा जी हाँ।

तल० (सुमन से) इसीलिए तुम लोग नहीं आ पाए। तभी तो मैं सोचूँ कि क्या हो गया तुम लोग क्यों नहीं आए। पहले तो हफ्ते में एक बार जरूर आते थे।

सुमन — आप दीपाली को तो जानती हैं न।

तल० — हाँ हाँ, उस चुनबुली को क्यों नहीं जानती ! तेरी ननद ही ना ?

सुमन — जी हाँ वही । उसके लडका हुआ था । वह टाइम से पहले हो गया था इसलिए बडा कमजोर था ।

तल० — फिर ? खैर तो है ?

सुमन — जी हाँ वह मरते मरते बचा है । डाक्टरों ने रात दिन मेहनत करके उसे बचा लिया है ।

तल० — शुक्र है । रब्ब का लाख-लाख शुक्र है ।

आशा० — (तलविन्दर से) कहीं प्रीतम के यहाँ भी ऐसा न हो जाए ।

शर्मा — उसके यहाँ क्या न हो जाए ?

आशा० — उसकी चिट्ठी आई है । उसने लिखा है कि उसकी बहू के बच्चा होने वाला है । बड़ा लडका पहले ही छत से गिर कर टाँग तुड़ा बैठा है ।

शर्मा और सुमन — (साश्चर्य) अच्छा !

तल० — हाँ, उसके घर में भी सनीचर बस गया लगता है । पहले उसका एक ट्रक लुढ़क गया था, जिसमें उसके डराईवर और कलीनर मारे गए । अब उसका काका गिर गया है । उसकी टाँग पर प्लास्टर चढ गया है ।

सुमन — आप देखने गयीं थीं क्या ?

[आशा सिंह और तलविन्दर एक-दूसरे को देखकर आँखें घुमा लेते हैं]

तल० — इनका ब्लडप्रेशर हाई रहता है । बदन में दर्द अलग रहता है ।

सुमन — इलाज तो चल रहा होगा ?

तल० — हाँ चल रहा है । यह तो चलता ही रहेगा । बुढापे का शरीर है । बूढ़ी देह बीमारी का घर होती है बहू ।

सुमन — फिर भी । शरीर स्वस्थ रहता है तो मन भी ठीक रहता है । बीमार शरीर में मन बुझ जाता है और कुछ भी अच्छा नहीं लगता ।

आशा० हाँ बहू, तू ही इसे समझा ले। यही बात मैं कहता हूँ तो इसे प्रतीत नहीं करती।

तल० तुम भी क्या आदमी हो जी! सबके सामने एक ही दुखड़ा रोने बैठ जाते हो।

आशा० फिर तुम मेरी बात क्यों नहीं मानती?

तल० तुम्हारी बात मानते मानते सारी जिन्दगी बिता दी है। अब आकर एक बात नहीं मानी है तो सबसे कहते फिर रहे हो। (झुंझलाकर सिर झटकती है।)

सुमन माता जी! एक बात मेरी समझ में नहीं आती। आपके दो खाते पीते बेटे हैं आप लोग उनके पास क्यों नहीं रहते?

[तलविन्दर आशा सिंह की ओर देखती है। आशा सिंह शर्मा से बातें करते रहते हैं]

आशा० और क्या चल रहा है?

शर्मा पिछले दिनों मैं एल०टी०सी० टूर पर था।

आशा० फ़ैमिली के साथ?

शर्मा जी हाँ सबको लेकर गया था।

आशा० पेरेण्ट्स को भी ले गये थे?

शर्मा जी हाँ उनको भी। उनका मन था कि रामेश्वरम् जाएँ, इसलिए मैंने दक्षिण भारत का टूर बनाया था।

आशा० बड़ा अच्छा किया। साउथ बहुत अच्छी जगह है। 'सादा जीवन उच्च विचार' उधर ही दिखाई देते हैं। उधर के मन्दिरों का तो कहना ही क्या। आसमान तक ऊँचे। कन्याकुमारी भी गये थे क्या?

शर्मा जी हाँ, यहाँ से सीधे मद्रास फिर रामेश्वरम्, मदुरै कन्याकुमारी, त्रिवेन्द्रम, ऊटी मैसूर, बंगलौर गए और वहाँ से वापस आ गए।

आशा० ओह लगभग सारा साउथ देख लिया। तिरुपति नहीं गए?

शर्मा उधर अगली बार जायेंगे। अब तिरुपति हैदराबाद, बम्बई, गोआ का प्रोग्राम बनायेंगे।

आशा० बहुत सुन्दर। बहुत अच्छा किया कि एल०टी०सी० का सही इस्तेमाल किया। बहुत से लोग तो एल०टी०सी० का पैसा घर बैठकर खा जाते हैं।

शर्मा जी हाँ, इन ट्रांसपोर्ट कंपनियों ने दस पन्द्रह परसेण्ट लेकर जाली रसीदें देने का धन्धा जब से चालू किया है, तब से यह करप्शन बहुत बढ गया है ।

आशा० पता नहीं, लोग कैसे ऐसा कर लेते हैं । मोरल वेल्यूज से ऐसे लोगों का कोई सरोकार ही नहीं रह गया है । गवर्नमेण्ट ने एक सुविधा दी है कि लोग अपने देश को देखें समझें, पर लोग हैं कि रुपया देखते ही बेईमानी की तरफ झुक जाते हैं । पता नहीं देश का क्या बनेगा । ऐसे लोग अपने बच्चों के सामने न जाने कौन सा आदर्श रख रहे हैं।

तत० ऐसे ही लोग सुखी रह रहे हैं आजकल । आदर्श की बातें करनेवाले एक आप ही बहुत हो । सारी जिन्दगी आदर्श की बातें करते रहे हो, उसी का फल है कि बेटे हमें कौडी को पूछते नहीं हैं और हर गलत सही तरीके से पैसा कमा रहे हैं। एक हम थे कि तेरह जनों की गिरस्ती चलाई और अब हमारे ये बेटे हैं कि हमें सहारा देने को तैयार नहीं हैं ।

आशा० (सक्रोध) तुम भी ऊलजलूल बोलने से बाज नहीं आती हो । बिलकुल सठिया गयी हो ।

तत० मेरे सठियाने में तो अभी पाँच साल और हैं ।

आशा० चुप कर ।

सुमन (तलविन्दर से) यह किसका स्वेटर बना रही हैं ?

तत० प्रीतम की बहू के होने वाले बच्चे का । बहू बेचारी को तो गिरस्ती के काम से वक्त नहीं मिलता होगा, सो बना नहीं पाई होगी । मैंने सोचा कि मैं खाली बैठी रहती हूँ तो बैठे बैठे उसके बच्चे के लिए एक स्वेटर ही बुन डालूँ ।

सुमन ठीक है । खाली समय है और बैठे बैठे का काम है । आपकी बहू भी खुश हो जाएगी कि सास जी ने प्यार से चीज बनाकर दी है ।

आशा० (क्रोध के स्थान पर धीरे धीरे मुस्कराहट लाकर) मुझसे तो तुम कह रही थी किसी पडोसिन के लिए बना रही हूँ ।

तल० (मुस्कराकर) पिछले दिनों लुधियाणे से मलहोत्रा आया था न ? यह मुझे पता गया था कि जनवरी में प्रीतम की बहू को कुछ होने वाला है। मैं तभी से बुनाई में लग गई थी। तुमको इसलिए नहीं बताया कि तुम मुझ पे हँसोगे कि एक तरफ तो बेटों को जली कटी सुनाती रहती है और दूसरी तरफ उनके बच्चों के लिए सवेटर बुन रही है।

आशा० मुझे पता है कि तुम लुधियाना भी जाओगी।

तल० अब क्या करूँ, मुझे तो बहुओं पर दया आती है। बेचारी मर्दों का मुँह देखकर बात करती हैं, वरना हैं बहुत अच्छी। लुधियानेवाली और अमरीकावाली दोनों ही अच्छी कुड़ियाँ है। मेरा और इनका बहुत धियान रखती हैं। (पुलक के साथ) जब भी मुझसे मिलती हैं या बिछुड़ती हैं तो सच्चे आँसू गिराती हैं। मैं जब भी उनके पास से आती हूँ मेरी टैची के तले में नोट भर देती हैं। अमरीकावाली तो, जब भी कोई अमरीका से आता है उसके हाथ कोई न कोई सामान पैसे और एक लम्बी चिट्ठी भेज देती है। चिट्ठी में हमेशा लिखती रहती है कि कोई जरूरत हो तो लिखना।

सुमन यह तो आपकी खुशकिस्मती है कि आपको ऐसी बहुएँ मिली हैं।

तल० सच बिलकुल तुझ पर गई है।

[सुमन दृष्टि झुका लेती है।]

आशा० तुम इन्हें बातें ही बातें पिलाओगी या कुछ

शर्मा नहीं, बाऊ जी। माता जी को कोई तकलीफ हम नहीं देंगे। हम लोग यहाँ आने से पहले एक और घर में गये थे। उन लोगों ने भरपेट खिला पिला दिया है। आप उनको जानते ही हैं कुलभूषण जी।

आशा० (जैसे याद आ गया हो) अरे हाँ, कुलभूषण जी। बड़े भले आदमी हैं। कभी कभी यहाँ भी आ जाते हैं। हमारा बहुत ध्यान रखते हैं।

शर्मा हाँ उनके यहाँ आज गृह प्रवेश था। खूब बढ़िया खाना खिलाया।

आशा० : हाँ वो हमें भी बुलाने आये थे। पर तुम तो जानते ही हो शर्मा कि इनके ब्लडप्रेशर के मारे हमारा कहीं आना जाना नहीं हो पाता।

तत० तुम चले जाते । वह बुरा मानेगा । तुमने मुझे पहले नहीं बताया । इतनी देर में मुझे कौन सी मौत लिवा ले जाती । सगुन देकर चले आते ।

आशा० मुझे पता है कि मुझे क्या करना चाहिए, क्या नहीं ।

तत० खाक पता है । बेचारे लोग इतनी इज्जत से बुलाने आते हैं और तुम हो कि मेरा नाम लेकर टाल जाते हो । तुम नहीं जाओगे तो तुम्हारे यहाँ कौन आयेगा ?

आशा० सबको पता है कि हमारी क्या मजबूरियाँ हैं । तुम इन लोगों को कुछ तो पिलाओ ।

सुमन (खड़ी होकर) हमें केवल पानी पीना है, वह मैं ले आती हूँ । क्या आप लोग भी पीयेंगे ?

आशा० नहीं, ऐसा अच्छा नहीं लगता । कुछ तो ले लो ।

सुमन (हाथ जोड़कर) नहीं सचमुच हमारी कुछ भी खाने पीने की इच्छा नहीं है । बस पानी पीयेंगे । मैं लेकर आती हूँ । (रसोई की ओर बढ़ती है)

तत० अरे, फीका पानी क्या पीना । (सुमन मुड़कर देखती है) फ्रिज में स्क्वैश की बोतलें रखी हैं, जो पीना हो वह पानी में मिला लाना।

सुमन जी, अच्छा । (रसोई में चली जाती है)

शर्मा (आशा सिंह से) आपका दिनभर क्या कार्यक्रम चलता रहता है ?

आशा० हमारा क्या कार्यक्रम चलेगा । रिटायर्ड आदमी हैं । सारी जिम्मेदारियाँ चुक गईं । सवेरे नाम सिमरन चलता है, दुपहर को सोना, शाम को कभी इस कमरे, कभी उस कमरे में टहलना और रात को किताब पढ़ते हुए सो जाना ।

शर्मा आप लिखने पढ़ने का कोई काम ले लिया करें । अच्छा समय कट जाता है और साथ में कुछ पैसा भी बन जाता है ।

आशा० भई शर्मा, अब न तो हमें पैसे की कोई हवस रह गई है और न किताबें पढ़ने में जी लगता है । थोड़ा अखबार पढ़ लेते हैं जिससे थोड़ा वक्त के साथ जुड़े रहते हैं या फिर तुम्हारी इन माता जी से झगड़ा कर जी बहला लेते हैं ।

शर्मा — क्या अब भी आपका झगड़ा हो जाता है ?

आशा० — क्यों नहीं। आखिर इनको भी तो समय काटना है।

तल० — क्यों मुझे बदनाम करते हो। मैं क्या झगड़ालू हूँ।

आशा० — नहीं, तो क्या मैं झगड़ालू हूँ ? तुम कुछ न कुछ ऐसा काम कर देती हो कि मुझे झगड़ा करना पड़े। जैसे आज तुमने बैठे बिठाए माई को ही निकाल दिया।

तल० — (शर्मा से) आज सवेरे से मेरे पीछे पड़े हैं कि मैंने माई को क्यों निकाल दिया है।

आशा० — (शर्मा से) क्या मैं गलत कह रहा हूँ। इन्हें ब्लडप्रेशर है, गठिया है, कई बीमारियाँ हैं। इन्हें आराम की जरूरत है, लेकिन नहीं, घर को काम ये खुद करेंगी, इसलिए माई को हटा दिया है।

शर्मा — नहीं माता जी यह तो मैं भी कहूँगा कि आपने ठीक नहीं किया। बाऊ जी ठीक कह रहे हैं। अब आपको आराम की जरूरत है।

तल० — बेटा, मैं इनकी तरह नहीं हूँ कि सबके आगे घर का दुखड़ा रोऊँ। मैं इनको बता चुकी हूँ कि मैंने माई को क्यों हटाया है।

आशा० — (सिर हिलाकर) रहने भी दो।

शर्मा — (कुछ देर तक सोचने के बाद) अगर आप लोग बुरा न मानें तो क्या एक बात पूछ सकता हूँ ?

तल० — क्या ?

शर्मा — आप दोनों की उम्र अब आराम की है। आप अपने बेटों के पास क्यों नहीं रहते हैं ?

आशा० — (तलविन्दर की ओर देखने के बाद) बेटे, बात यह है कि हमने जिन्दगीभर ईमानदारी से कमाया-खाया है। हमारे बेटे जिस तरह कमा खा रहे हैं, वह हमें पसन्द नहीं है। आँखों देखी मक्खी नहीं निगली जाती। उनके पास जाकर रहते हैं तो उनकी कमाई के तौर तरीके हमें पसन्द नहीं आते और

तल० : इन्हें बार बार टोकना पड़ता है। ये आदर्श की बातें करते हैं, जो उन्हें भाती नहीं हैं।

आशा० — और उनका खाना पीना भी मास मच्छी वाला है। घर में अफ़सरों और दोस्तों को बुलाकर शराब उड़ती है। हमारी वजह से उनके सामने समस्या खड़ी हो जाती है और भी बीसियों बातें हैं। सब बताने से क्या फ़ायदा।

तल० — बहुएँ मेरी टैची में रुपये रख देती है तो मना करती हूँ कि मत रखो। इन्हें ये रुपये अच्छे नहीं लगते तो कसम खाकर कहती हैं कि ये रुपए उनके मायके से मिले हैं, नहीं दे रही हैं। और अगर निकाल भी दूँ तो ये रोने लगती हैं।

आशा० — बहुएँ हमें दोनों ही बढ़िया मिली हैं। उन घरों में वे बेचारी वैसी ही रहती हैं, जैसे कीचड़ में कमल होता है। बेटे अपने होकर भी अपनी आदतों से पराए लगते हैं और बहुएँ दूसरे घरों से आकर भी (तलविन्दर की ओर संकेत कर) इनकी कोख से पैदा हुई लगती हैं।

तल० — दोनों ही चिट्ठियाँ लिखकर बुलाती रहती हैं। अमरीकावाली की चिट्ठी कुछ दिन पहले आई थी। उसने अमरीका बुलाने के लिए टिकट भेजने की बात लिखी है। ये ही वीसा और पासपोर्ट नहीं बनवा रहे हैं।

आशा० — क्यों नहीं बनवा रहा हूँ, यह भी तो बताओ।

[सुमन ट्रे में चार गिलास शर्बत बनाकर ले आती है और सबके आगे ट्रे घुमाती है। सब एक-एक गिलास उठा लेते हैं। सुमन अपना गिलास लेकर खाली ट्रे मेज पर रख देती है। फिर तलविन्दर के पास बैठ जाती है।]

तल० — इसीलिए न कि अर्जन सिंह माँस-शराब खाता पीता है?

आशा० — नहीं।

तल० — इसीलिए न कि उसने अपने लड़के के केस कटवा दिये हैं?

आशा० — नहीं। इसलिए, क्योंकि वहाँ सर्दी बहुत पड़ती है और सर्दी से तुम्हारे हाथ पैरों में सोजिश आ जाती है।

तल० — मेरी वजह से क्या तुम सबसे रिश्ता तोड़ लोगे? हमेशा घर में घुसे रहते हो। अमरीका तो क्या जाओगे तुम पड़ोसियों के यहाँ भी तो नहीं जाते हो।

आशा०	इस क्लर्क-बस्ती में कौन किसे जानता है। वर्किंग डेज में लोग सुबह से निकलकर शाम को थके-हारे लौटते हैं। छुट्टी के दिन में बच्चों को घुमाने निकल जाते हैं और रात को टी वी के आगे बैठ जाते हैं।

लाल०	हाँ, अब वो जमाने तो रहे नहीं जब कि लोग एक दूसरे से कोई न कोई नाता रिश्ता जोडकर बात करते थे, इज्जत करते थे, सुख दुख में साथ देते थे। अब तो वो जमाना आ गया है, जब अपने बेटों को अपने माँ-बाप भी बोझ लगते हैं।

आशा०	बस, यही मैं कहना चाह रहा था। हम किसी पर बोझ न बनें इसीलिए हम किसी के पास नहीं रहना चाहते।

शर्मा	आप दोनों एक ही बात को कन्फर्म कर रहे हैं और वह बात है जैनेरेशनगैप की। यह गैप मेरी राय में दोनों ओर से पैदा किया गया है। माफ कीजिए, अभी आप कह रहे थे कि आप अखबार इसलिए पढते हैं कि आप वक्त के साथ जुड सकें, पर अपने लड़कों के साथ रहने की बात आते ही आप वक्त से कट जाना चाहते हैं। आप बुजुर्ग हैं समझदार हैं। आपको समझाना शोभा तो नहीं देता पर जो कुछ मैं समझता हूँ, उसे कहे देता हूँ। आज के समय में समझौते करके चलना होता है। एडजस्टमैण्ट्स करने पड़ते हैं। हर आदमी एक खास उम्र में आजाद रहना चाहता है, पर समाज में रहने के लिए सबको किसी न किसी स्तर पर, लेवल पर आपस में जुड़ना ही पड़ता है। कोई भी अकेला नहीं रह सकता।

आशा०	हम रह रहे हैं।

शर्मा	कहाँ रह रहे हैं? आप माता जी से जुडे हुए हैं। माता जी आप से जुड़ी हुई हैं। मैं आपसे जुड़ा हुआ हूँ, माताजी से जुड़ा हुआ हूँ, शीला से जुड़ा हुआ हूँ। शीला और माता जी मुझसे आपसे जुड़े हुए हैं। हममें कोई भी है ऐसा जो कह सके कि मैं बिलकुल स्वतंत्र अपने बलबूते पर जीवन की नैया खे सकता हूँ। अपने बलबूते पर नैया खेने के लिए भी चप्पू की जरूरत होती है।

आशा० वह तो ठीक है पर

सुमन एक बात मैं भी जोड़ूँ। हम पति पत्नी से परिवार बनता है। पति और पत्नी को आपस में भी बहुत सारे एडजस्टमैण्ट्स करने पड़ते हैं। तब परिवार चलता है। क्षमा कीजिए, छोटे मुँह बड़ी बात है। आप और माता जी आपस में कितनी बार नहीं झगड़े होंगे, पर आज भी आप दोनों के सम्बन्ध कितने मजबूत हैं, क्योंकि आप दोनों का झगड़ा अपने अपने लिए नहीं, दूसरे के भले की चिन्ता के कारण होता है। इसी तरह आपको अपने बेटों के साथ निभाना पड़ेगा और बेटों को आपके साथ।

आशा० मैं तो निभाने को तैयार हूँ, पर बेटे तो नहीं हैं।

तस० बेटों को क्यों बदनाम करते हो जी !

आशा० लो, अभी तक तो अपने बेटों की बुराई कर रही थी अब बेटों की तरफ से बोलने लगी।

सुमन माँ जो हैं।

आशा० (घड़ी देखकर) तुम्हारी दवाई का टाइम हो गया।

तस० खा लूँगी।

आशा० खा लूँगी नहीं, खा लो।

तस० (उठती हुई) ओह ! उठा ही नहीं जाता। बड़ा दरद है। (झुकी कमर पर हाथ रखकर अंदर चली जाती हैं)

आशा० (तलविन्दर को जाती हुई देखकर) ऐसी हालत में तुम्हारा लुधियाना जाना मुश्किल है।

तस० (अन्दर से) अगर नहीं जाएँगे, तो वे लोग सोचेंगे कि हमें उनकी परवाह नहीं है न आने का बहाना बना लिया है।

आशा० उन्हें सोचने दो। उन्होंने कौन सी तुम्हारी परवाह की है, जो हम करें। (शर्मा से) तुम्हारी बात सोलहों आने सच है, पर तुम देख ही रहे हो कि (पत्र दिखाकर) इस चिट्ठी में प्रीतम ने अपने घर के सब हाल लिख दिये हैं, पर हमारे बारे में कुछ भी नहीं पूछा है। हम दोनों के लिए बस 'पैरीपैणा' लिखा है।

तल० (बैठक में आती हुई) तुम ठीक कहते हो। मेरा लुधियाने जाना मुश्किल लग रहा है। कमर में बहुत दरद है। लगता है, ब्लडप्रेशर भी बढ़ गया है। (बैठ जाती है)।

आशा० यही तो मैं कह रहा हूँ। अब तुम अपनी फ़िकर करो, दुनिया की चिन्ता छोड़ो। हमने दुनिया के लिए बहुत कुछ कर दिया। कोई याद नहीं रखता कि किसी ने उनके लिए क्या क्या किया है। (शर्मा से) बेटे। तुम प्रीतम को एक तार दे दो कि हमारा लुधियाना जाना मुश्किल है क्योंकि तुम्हारी माँ की हालत अच्छी नहीं है। (पत्र देते हुए) पता इसके पीछे लिखा है।

[शर्मा पत्र ले लेते हैं।]

तल० मेरी हालत के बारे में कुछ मत लिखना। बेचारी बहू घबड़ा जाएगी।

आशा० तो मेरी हालत खराब है, यह लिखवा दूँ?

तल० (कानों को हाथ लगाकर) हाय मैं मर जावां। तुम्हारी हालत क्यों खराब हो? तुम जो चाहो, सो लिखवा दो। मैं कुछ नहीं बोलती।

[शर्मा और सुमन खड़े हो जाते हैं।]

आशा० (शर्मा से) तुम वही लिख देना, जो मैंने बताया है। पैसे और लेते जाओ।

शर्मा जी नहीं, अभी पैसे रहने दीजिए। रसीद देने आऊँगा, तब देखा जायेगा।

आशा० जाते-जाते जरा डॉ सक्सेना से कह देना कि वह आकर इनका चैक अप कर लें और हाँ, तुम्हारे यहाँ कमला काम करने आयेगी उसे इधर भेज देना। घर का काम इनके बूते का नहीं है।

शर्मा ठीक है। अच्छा हम चलते हैं। मैं तार दे दूँगा और डॉ सक्सेना और कमला को भेज दूंगा। प्रणाम।

[शर्मा और सुमन आशा सिंह और तलविन्दर के पैरों को हाथ लगाकर चले जाते हैं। आशा सिंह और तलविंदर आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाये रहते हैं।]

अभिनन्दन

डॉ० प्रसादी लाल त्रिवेदी	विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष
नरोत्तम	शिष्य
मुकुन्द	शिष्य
चरणदास	शिष्य
वसंत	प्रकाशक
डॉ० यवन	प्राध्यापक

[डॉक्टर प्रसादी लाल त्रिवेदी का भव्य कक्ष। कक्ष की सजावट सुरुचिपूर्ण। डॉक्टर महोदय दो शिष्यों के बीच सोफ़े पर बैठे हुए हैं। कमरे में अनेक साहित्यकारों के बीच उन के चित्र लगे हुए हैं।]

त्रिवेदी : (एक दायीं ओर बैठे शिष्य से) तो नरोत्तम ! तुमने कार्यक्रम के अनुसार ही सारी व्यवस्था कर ली है ना?

नरोत्तम : जी, डॉक्टर साहब ! मैंने आपके अभिनन्दन समारोह की तैयारी पूर्ण कर ली है। आपके जीवन और कृतित्व के सम्बन्ध में लेख लिखवाये जा चुके हैं और अब मैं उनको छाँट रहा हूँ ताकि सुन्दर और आपके अनुकूल सामग्री ही प्रेस में जा सके।

त्रिवेदी किस किस के लेख आ गये हैं?

नरोत्तम लगभग डेढ़ सौ लोगों ने लेख भेजे हैं, जिनमें डॉ० चरितनाथ यवन, डॉ० लखपति 'सुप्त', डॉ० मेघनाथ, डॉ० भगवानुस्वरूप 'पायल' आदि भी, हैं।

त्रिवेदी (कुर्ते के बटन पर एक हाथ की उँगलियाँ फिराते हुए) उमाप्रिय त्रिवेदी और राधादास वाजपेयी ने कुछ नहीं भेजा? (दूसरे शिष्य की ओर देखते हुए) क्यों मुकुन्द मैंने तुमसे इन दोनों के पास जाने और उनके लेख लिखवाकर लाने को कहा था-- उसका क्या किया?

मुकुन्द	जी जी, मैं उन दोनों के पास बनारस और सहारनपुर गया था, लेकिन उन्होंने तो आपका सन्देश सुनते ही ऐसा मुँह बना दिया, जैसे कि मैंने उन्हें कुनैन खिला दी हो।
त्रिवेदी	(उठकर कुर्सी पर बैठते हुए) सठिया गये हैं ससाले। अपने आपको सबसे बड़ा आचार्य समझते हैं। (मुकुन्द से) मैंने तुम्हें इन दोनों स्थानों पर जाने के लिए जो किराया दिया था, सब बराबर कर दिया होगा?
मुकुन्द	(जेब से रुपये निकालकर डॉक्टर त्रिवेदी की ओर बढ़ाते हुए) जी नहीं, सारा खर्च मैंने किया है, आपका एक पैसा भी नहीं लिया। लीजिए अपने रुपये।
त्रिवेदी	(रुपये लेकर जेब में डाल लेते हैं) हाँ। तुम तो जानते ही हो, अभिनन्दन ग्रंथ और समारोह पर लगभग दस हजार रुपये खर्च हो जायेंगे। सोच समझ कर खर्च करने में ही बुद्धिमानी है। अच्छा, मैं तुम लोगों के लिए चाय बनवाता हूँ (अन्दर चले जाते हैं)
मुकुन्द	(कुछ क्षण तक नरोत्तम की ओर देखकर) इस भागदौड़ में मेरे सौ रुपये उड़ गये और उन्होंने चुपचाप ही रुपये अपनी जेब में सरका लिए।
नरोत्तम	(पास खिसकते हुए) भाई जान लैक्चररशिप भी तो तुम्हें ही लेनी है। जितनी सेवा करोगे उतनी मेवा मिलेगी।
मुकुन्द	मैं तो बाज आया ऐसी सेवा से। जब से अभिनन्दन की बात चली है, तब से अब तक मैं पाँच सौ रुपये खर्च कर चुका हूँ और अभी न जाने कितना और करना पड़ेगा।
नरोत्तम	तो फिर इस विषय में एम०ए० और पी-एच०डी० क्यों की? किसी और विषय में जाते तो यह सब न करना पड़ता। पहले तो बिना सोचे समझे ओखली में सिर दे दिया अब मूसलों से डर रहे हो।
मुकुन्द	ये मूसल तो असह्य है।
नरोत्तम :	सह्य क्या है? इनका व्यवहार? आचार? स्वभाव? इनका चरित्र? कुछ भी तो नहीं लेकिन ये विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष हैं और यहाँ की आन्तरिक राजनीति में प्रभावशाली स्थान रखते हैं

इसलिए सब कुछ मुस्कराकर सहना पड़ेगा। ची चपड़ करोगे तो गन्ने की चूसी हुई गडेली की तरह थूक दिये जाओगे।

मुकुन्द (चुप)

नरोत्तम और मैं किसलिए अपना तन, मन, धन इस अभिनन्दन में लगा रहा हूँ ? जानते हो ? नहीं तो सुन लो। मुझे अपनी पुस्तक पाठ्यक्रम में लगवानी है, डी०लिट्० के शोधप्रबन्ध पर अच्छी रिपोर्ट लिखवानी है, और अन्त में रीडरशिप प्राप्त करनी है। लेक्चरर भी मैं यों ही नहीं बन गया था। उसके लिए मुझे सैकड़ों रुपये का आँख मूँद कर प्रसाद चढ़ाना पड़ा था। रुग्ण होने पर दवा और फल खिलाने पड़े थे और स्वस्थ होने पर दावतें।

मुकुन्द (आँखें फाड़कर) सच ?

नरोत्तम और लो, तो मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ। विश्वास न हो तो पता कर लो विभाग के दूसरे लेक्चररों और रीडरों से कि उन्होंने कैसे वे स्थान प्राप्त किये हैं। अरे भैया, अगर कुछ लेना है तो उसके लिए कुछ देना भी होता है। प्रत्येक सफलता संघर्ष के पश्चात् ही प्राप्त की जा सकती है।

मुकुन्द मैं समझता था कि (अन्दर की ओर देखकर चुप हो जाता)

[हाथ में कागज़ों का बंडल लेकर त्रिवेदी जी का प्रवेश। उनके पीछे चाय लिये हुए नौकर आता है। जब तक त्रिवेदी जी सोफ़े पर बैठकर हाथ के कागज़ों को खोलकर उलटते-पलटते हैं, तब तक नौकर प्यालों में चाय डालकर सबको देता है और बाहर चला जाता है। तीनों बातचीत के बीच चाय पीते रहते हैं।]

त्रिवेदी देखो नरोत्तम, तुम भी सुनो मुकुन्द मैंने अपने जीवन और कृतित्व के उल्लेखनीय पक्षों पर कुछ नोट्स तैयार किये हैं। अधिक समय नहीं मिला इसलिए पूरे लेख नहीं लिख सका। तुम दोनों मिलकर इन नोट्स के आधार पर ज़रा सुन्दर ढंग से दो लेख लिख डालो। उनपर अपने नाम दे देना।

नरोत्तम जी, अच्छा। (त्रिवेदी जी से कागज़ लेकर देखने लगता है।)

त्रिवेदी — क्यों मुकुन्द, तुम बनारस में कालिका प्रसाद मिश्र से भी मिले होंगे?

मुकुन्द — (जाँघों पर दोनों कुहनियाँ टिकाकर हाथ मलता हुआ) जी, मिला था। वह कह रहे थे कि मैं लेख लिखकर डाक से भेज दूँगा।

त्रिवेदी — कब तक?

मुकुन्द — जी जी जी यह तो मैंने पूछा नहीं।

त्रिवेदी — (सक्रोध) पूछा नहीं , कौन सा ऐसा काम तुमने किया है जो पूरा हुआ हो? तुम तो बिलकुल बेकार के आदमी हो।

[मुकुन्द नरोत्तम की ओर देखता है। नरोत्तम उसकी ओर कनखियों से रोष प्रकट करता है।]

नरोत्तम — (मुकुन्द की ओर दृष्टि फेरे हुए) कल शाम को ही तो तुम कह रहे थे कि मिश्र जी 20 तारीख तक लेख भेज देंगे।

मुकुन्द — (जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो, त्रिवेदी जी से) हाँ, हाँ, जी हाँ, वह कह रहे थे कि मैं त्रिवेदी जी द्वारा सुझाये गये विषय, त्रिवेदी जी की चारित्रिक महत्ता पर लेख लिखकर 18 तारीख को डाक से भेज दूँगा।

त्रिवेदी — (सहज होकर) हाँ, यह हुई न कुछ बात। मैं तो भई, सिद्धान्त का आदमी हूँ। जो काम करना होता है, ईमानदारी से करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि दूसरे व्यक्ति भी ऐसे ही हों। तुमने मेरी पुस्तकों में से सूक्तियाँ तो छाँट ही ली होंगी!

मुकुन्द — जी हाँ। कल रात को मैंने उन्हें क्रमबद्ध रूप भी दे दिया है। आज शाम को आपको दिखा दूँगा।

त्रिवेदी — ठीक है। (नरोत्तम से) मैंने तुम्हें अपनी विनोदप्रियता के सम्बन्ध में कुछ प्रसंग सुनाये और लिखाये थे, उनको ठीक तरह से लिख लिया है ना?

नरोत्तम — जी हाँ आप जब कहेंगे तभी लिखा दूँगा। [कुछ क्षण सोचकर] एक बात सुनाऊँ डॉक्टर साहब! मैंने आपकी विनोदप्रियता के कुछ अंश कल रात की एक साहित्यगोष्ठी में सुनाये, तो लोग हँसते हँसते लोटपोट हो गये। एक दो सज्जन बाद में मेरे पास

आये और बोले कि कुछ प्रसंग हमें लिखा दीजिए, हम 'कर्मयुग' में प्रकाशित करवायेंगे। (त्रिवेदी का मुख प्रसन्नता से खिल जाता है।) मैंने तो उनसे कह दिया कि यह सामग्री मैं अभी नहीं दे सकता। पहले गुरु जी का अभिनन्दन ग्रंथ छप जाय, उसके बाद दे सकूँगा।

त्रिवेदी — (प्रसन्नता उड़ जाती है) दे देते। कोई बात नहीं थी। तुम तो जानते ही हो कि यह विज्ञापन का युग है।

नरोत्तम — जी अच्छा, मैं आज ही दे दूँगा। आप आज्ञा दें तो मैं स्वयं भी कुछ पत्रिकाओं में भेज दूँ।

त्रिवेदी — हाँ, हाँ, भेज दो। एकाध मुकुन्द के नाम से भी भेज देना।

नरोत्तम — जी, अच्छा। (मुकुन्द की ओर देखता है, वह फीके ढंग से मुस्करा देता है।)

[एक छात्र का प्रवेश। वह त्रिवेदी जी के चरणस्पर्श कर खड़ा रहता है।]

त्रिवेदी — (नरोत्तम और मुकुन्द से) अब तुम दोनों जाओ और बताया हुआ काम आज रात तक पूरा कर लेना।

दोनों — (खड़े होकर) जी, अच्छा। (क्रमशः त्रिवेदी जी के चरण स्पर्श कर बाहर निकल जाते हैं।)

त्रिवेदी : आओ चरणदास, बैठो। (चरण दास एक कुर्सी पर बैठ जाता है।) सुनाओ, क्या समाचार हैं?

चरण — मैं छात्रावास में गया था जी। मैंने वहाँ चर्चा चलायी थी जी कि हम लोगों को मिलकर त्रिवेदी जी का स्वागत समारोह करना चाहिए

त्रिवेदी : अभिनन्दन समारोह।

चरण — हाँ, जी, अभिनन्दन समारोह। मैंने सभी लड़कों से कहा था जी कि हम लोगों को त्रिवेदी जी के स्वागत में अभिनन्दन-समारोह करना चाहिए। सो बहुत से लड़के बोले जी कि हमें अभिनन्दन करके उनसे क्या लेना है। जिनको कुछ लेना हो, वे करें अभिनन्दन।

त्रिवेदी — मूर्ख हैं।

हैं, कोई नहीं खरीदता। दो तीन साल बाद उनको औने पौने भाव में निकालना पड़ता है।

त्रिवेदी यह आप क्या कह रहे हैं ? अपने विभागाध्यक्ष काल में मैंने आपकी इतनी पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में लगवायी हैं। उनमे अब तक आप लाखों रुपया कमा चुके होंगे।

बसत यह तो ठीक है डॉक्टर साहब लेकिन हमें तो अपने व्यवसाय में लाभ की दृष्टि से हर कदम उठाना पड़ता है।

त्रिवेदी इस बात की आप चिन्ता न करें बीस पच्चीस प्रतियाँ मैं अपने मित्रों में बाँटने के लिए खरीद लूँगा, सौ के लगभग मेरे शिष्य खरीद लेंगे और पचास-साठ प्रतियाँ मैं पुस्तकालयों में बिकवा दूँगा।

बसत यह तो आपकी कृपा है, लेकिन यदि आप यह आज्ञा देते कि मेरी इतनी टीकाओं कुंजियों और पाठ्यक्रम में लगाई जाने वाली पुस्तकों को प्रकाशित करना है, तो यह सादर सिरमाथे थीं। अभिनदन ग्रथ को छापना बडे खतरे का काम है। उसमें घाटा ही घाटा है।

त्रिवेदी घाटा क्यों है ? लगभग पाँच सौ पृष्ठ छपेंगे। उसका मूल्य पाँच सौ एक रुपये रख देना। जो दो सौ प्रतियाँ मैं बिकवाऊँगा, उनसे आपका सारा पैसा निकल आएगा और शेष बिकने में आपको लाभ ही लाभ है। अच्छा --यह बताइए कि आप क्या लेंगे ठडा कि गर्म

बसत (हाथ जोड़कर) कुछ नहीं। धन्यवाद। आपका ही खा रहा हूँ।

त्रिवेदी नहीं सो कैसे हो सकता है। कुछ तो लेना ही चाहिए। (बसत को कुछ बोलने का अवसर दिये बिना अन्दर की ओर) अरे भोला ! जरा कुछ फल काट ला और दो बोतलें फ्रिज में से निकाल ला। (बसत से) और यह सब क्या मेरा है ! आपकी और अपने शिष्यों की वजह से ही तो मैं आर्थिक और मानसिक रूप से निश्चिंत होकर साहित्य सेवा कर पाता हूँ। अरे हाँ एक बात तो बताइए। मैंने प्रेम

प्रताप भट्ट की लिखी जिस पुस्तक के लिए भूमिका लिखी थी, उसके मुखपृष्ठ पर आपने पहले मोटे अक्षरों में मेरा नाम सशोधक और भूमिका लेखक के रूप में क्यों दे दिया है ? आपको पता है कि मैंने उस पुस्तक का पहला पृष्ठ तक नहीं पढा है।

बसत (दृष्टि नीचे झुकाने के बाद ऊपर उठाकर) हैं हैं डॉक्टर साहब, आपको भी पता है कि बडे आदमी की छाया में सभी काम आसानी से हो जाते हैं। उस भट्ट को कौन जानता है ? उसका नाम पढकर तो कोई भी उस पुस्तक की एक भी प्रति नहीं खरीदेगा, इसलिए किसी न किसी रूप में आपका नाम देना आवश्यक हो गया। सभी नये लेखकों की पुस्तकें हम इसी शर्त पर छापते हैं कि या तो वे अपनी पुस्तक पर रायल्टी न लें या फिर उस पुस्तक पर किसी बड़े लेखक की भूमिका या नाम देने की स्वीकृति दें। दूसरी स्थिति में हम लेखक और उस प्रसिद्ध लेखक के बीच जिसका नाम पुस्तक पर छपता है, रायल्टी का फिफ्टी फिफ्टी बँटवारा कर देते है।

त्रिवेदी तो क्या उस पुस्तक की आधी रायल्टी आप मुझे देंगे ?

[नौकर फलों की तश्तरी और बोतले लेकर आता है।]

बसत अवश्य ।

त्रिवेदी कितनी ? (फलों की तश्तरी लेकर बसत की ओर बढाते हुए) लीजिए, फलाहार कीजिए।

बसत (एक फाक उठाकर मुँह में रखता हुआ) धन्यवाद। वह तो [illegible] पर निर्भर है। काफी मोटी रकम मिल जायेगी।

त्रिवेदी (एक बोतल बसत को थमाकर दूसरी बोतल स्वय ले लेते हैं) हाँ, सौदा बुरा नही है। इस तरह तो मुझको आपको और भट्ट को तीनों को लाभ ही लाभ है। अजी, हम तो चाहते हैं कि साहित्य की वृद्धि हो चाहे उसके लिए कैसा भी मार्ग अपनाना पडे मेरी तो यही मगल कामना है।

[नौकर अन्दर चला जाता है।]

बसंत — बस, आपकी कृपा चाहिए। लोग कहते हैं कि हिन्दी में धरा ही क्या है। हमें ऐसे लोगों का भ्रमजाल तोड़ना है।

त्रिवेदी — अवश्य। तोड़ना ही चाहिए। (पीते हुए) तो फिर अभिनन्दन ग्रंथ का क्या रहा?

बसंत — डॉक्टर साहब मैं आपको स्थिति बता ही चुका हूँ। हाँ, यदि आप कुछ आर्थिक सहयोग देने को तैयार हों तो । मैं बाद में आपके रुपये लौटा सकता हूँ।

[डॉ० धवन प्रवेश करते हैं। त्रिवेदी और बसंत उठकर 'नमस्कार' के साथ स्वागत करते हैं और तीनों बैठ जाते हैं। धवन कुछ चिन्तातुर हैं।]

त्रिवेदी — (बसंत से) मैं तैयार हूँ। इस बारे में फिर बात करूँगा थोड़ी देर धवन साहब से बात कर लूँ।

बसंत — अवश्य अवश्य। (सोफ़े पर आराम से अधलेटा हो जाता है।)

त्रिवेदी — कहिए धवन साहब, वह लेख लिख लिया आपने?

धवन — डॉक्टर साहब आपका लेख तो अब विधाता स्वयं लिख रहा है।

त्रिवेदी — (सावधान की मुद्रा में) क्या मतलब? (धवन बसंत की ओर देखते हैं। त्रिवेदी बसंत की ओर देखने के बाद धवन से) कोई बात नहीं। ये भी अपने ही हैं।

धवन — कुलपति महोदय ने आपके विरुद्ध शिकायतों की जाँच के लिए एक समिति का गठन किया है।

त्रिवेदी — (चौंककर) समिति का गठन! क्या मतलब? कैसी शिकायतें?

धवन — कुलपति के पास आपकी बहुत सी शिकायतें पहुँची हैं, जिनमें कुछ ये हैं (जेब में से कागज़ निकालकर पढ़ने लगते हैं) (1) आपने पिछले छह वर्षों में विश्वविद्यालय से एल०टी०सी० लेकर रेल गाड़ी की द्वितीय श्रेणी में यात्रा की और प्रथम श्रेणी का किराया वसूल किया। (2) आपने अपने पी एच०डी० के छात्रों से शोधकार्य करवाने की बजाय व्यक्तिगत कार्य करवाया और सिफ़ारिशी पत्र

लिखकर उन्हें पी एच०डी० की उपाधि दिलवायी। (3) आपने अपने शोधछात्रों से उपाधि मिलने तक भेंटें ली और अन्त में दक्षिणा के नाम से सोने की अँगूठियाँ जजीरें बिजली के अनेक प्रकार के सामान तथा अन्य ऐसी ही अनेक कीमती वस्तुएँ ली (4) विभाग और कॉलेजों में अपने अपने प्रिय व्यक्तियों को रीडर और लेक्चरर लगाया तथा अपने व्यक्तियों को रखवाने के लिए अपने प्रभाव का दुरुपयोग किया

त्रिवेदी (क्रोध में तमतमाकर खडे हो जाते हैं) सब बकवास है। सब झूठ है। आप बकते हैं।

पवन (खडा होकर) मैं अपनी आर से कुछ नहीं कह रहा। ये सब बातें तो कुलपति के व्यक्तियों ने मुझे बतायी हैं। कल तक शायद आपको नोटिस भी मिल जाये।

त्रिवेदी (हाथ पटकते हुए) मैं सबको देख लूँगा। उनको भी जिन्होंने मेरी शिकायतें की हैं।

बसत (उठता हुआ) क्षमा कीजिए डॉक्टर साहब, मैं आपका अभिनन्दन ग्रथ किसी हालत में नही छाप सकूँगा। कहीं आपके मामले में मैं भी न फँस जाऊँ। अब मुझे भय हो गया है कि कहीं मेरे द्वारा छापी गयीं आपकी पुस्तकों की बिक्री ठप न हो जाय।

त्रिवेदी हाँ हाँ जाइए आप सब। मैं देख लूँगा सब को।

बसत (हाथ जोड़कर) एक बात और कह दूँ चलते चलते। जब जनता ने आपका अभिनन्दन करने का निश्चय किया है तो वही आपका अभिनन्दन ग्रथ भी छपवा डालेगी। अच्छा, नमस्कार।

[बसत निकल जाता है। पवन भी सिर झुकाए चल देते हैं। त्रिवेदी क्रोध और चिन्ता में बायीं हथेली पर दायें हाथ की मुट्ठी मारते हैं।]

कवि की दुनिया

कवि
कवि पत्नी
कवि मित्र
डाकिया
दो दुकानदार
दुनियाँ

[इधर उधर बिखरी हुई पुस्तकें। एक ढीली-सी पुरानी खाट पर दुबले-पतले कवि बैठे हुए कुछ लिख रहे हैं। बायीं ओर रसोई है, जिसके दरवाजे पर चादर लटका कर पर्दे का काम लिया गया है। अन्दर से बर्तन उठाने-रखने की आवाज आ रही है। दायीं ओर बाहर से आने-जाने का दरवाजा है।]

कवि (अचानक उछल कर) अजी सुनती हो। जरा इधर तो आओ।

पत्नी (रसोई से) क्या काम है जी ? इधर खाना बनाऊँ कि तुम्हारे पास आऊँ !

कवि ओफ, तुम जरा देर के लिए ही आ जाओ। (हाथ के कागज की ओर देखकर) देखो, मैंने कितनी सुन्दर कविता लिखी है। वाह, वाह क्या कहने ! (गुनगुनाते हैं)

पत्नी मेरे पास फालतू कामों के लिए टैम नहीं है। अपने आप पढ के अपने आप खुश हो लो।

कवि ओफ्फो, थोड़ी देर को आ जाओ। खड़ी खड़ी सुन जाओ, फिर पका लेना खाना।

[कवि पत्नी आटा लगे हाथों रसोई से बाहर आती है। स्वस्थ शरीर, ग्रामीण वेश।]

पत्नी तुम्हारे मारे मेरी जान आफत में है। अपने आगे क्या किसी की चलने दोगे। सुनाओ, क्या लिखकर कागज बिगाड़ रहे हो?

कवि तुम इसे कागज बिगाड़ना कहती हो! और मेरी कविता के पीछे तो न जाने कितने लोग दीवाने बने फिरते हैं।

पत्नी फिरते होंगे सिरफिरे लोग। सुनाओ तो, क्या लिखा है।

कवि सुनो। (खँखारकर कर)

बिखरी अलकें, उठती साँसें

हैं दिखा रहीं तड़पन दिल की।

प्रिये !

पत्नी यह 'प्रिये' कौन है जी ? मैं देख रही हूं कि तुम दिन रात किसी न किसी औरत पर कविता लिखते रहते हो।

कवि (मुँह बिगाड़ कर) तुम तो बात बात में शंका करने लगती हो। यह छायावादी कविता है, किसी औरत पर नहीं।

पत्नी धरे रहो अपने इस छायावादी को, मेरी तो रोटी जल गई।

[रसोई में घुस जाती है]

कवि (कविता एक ओर फेंककर) भैंस के आगे बीन बजाओ, भैंस खड़ी पगुराय। तुम क्या समझो कि कविता किसे कहते हैं।

पत्नी (एकदम बाहर आकर) यह भैंस किसे कह रहे हो जी ? जरा जबान सभाल कर बातें किया करो।

कवि मैंने तो कहावत बोली है।

पत्नी क्या जरूरत थी कहावत बोलने की ? मुझे भैंस की तरह समझते हो, तभी तो ऐसी बात कह रहे हो।

कवि (खाट से उतरते हुए) तुमसे कौन मगज मारे। जाओ, खाना बनाओ।

पत्नी मैं नहीं बनाती। तुम्हें खाना हो तो बनाओ।

[वहीं बैठ जाती है]

कवि मत बनाओ, मैं बना लूँगा। जब देखो, तब बेकार का झगड़ा मोल लेने बैठ जाती है।

कवि मित्र (बाहर से) कवि जी अन्दर हैं क्या ?

[कवि-पत्नी घूँघट काढ़ कर झटपट रसोई में चली जाती है]

कवि आओ भाई ! अब के तो बड़े दिनों में दर्शन दिए ?

मित्र (अन्दर आकर) आज जरा अवकाश मिल गया इसलिए चला आया।

कवि वैसे क्यों आते ?

मित्र (हँसकर) अरे, सो कोई बात नहीं है। यह भी अपना ही घर है।

कवि आओ बैठो। हमें तो भई तुम जानते ही हो औघड़दानी कवि हैं, इसलिए कुर्सी वुर्सी तो है नहीं। इसी खाट पर विराजो।

मित्र हाँ, हाँ इसी पर बैठे लेता हूँ। वैसे तुम्हें आए गए के लिए कुर्सियों का प्रबन्ध कर ही लेना चाहिए।

[खाट की पाटी पर झटके से बैठता है, जिससे वह टूट जाती है। मित्र उचक कर खड़ा हो जाता है]

कवि अरे रे SS हमारे यहाँ एक ही तो खाट थी, उसका भी आपने क्रिया कर्म कर दिया।

[कवि-पत्नी थोड़ा-सा पर्दा हटाकर झाँकती है, फिर बड़बड़ाकर अन्दर हो जाती है]

मित्र चलो फर्श पर ही बैठे लेते हैं। लाओ एक चादर बिछा लें। (कवि कुछ क्षण उसकी ओर देखकर एक चादर पकड़ा देता है। चादर बिछाकर बैठता हुआ) आओ बैठो।

कवि (खाट उठाकर दीवार के सहारे रखते हुए) कहिए, कैसे आना हुआ ?

मित्र मुझे एक कवि सम्मेलन में जाना है उसी सम्बन्ध में मैं आपके पास आया हूँ।

कवि (बैठते हुए) वैसे आप अकारण आते ही कब हैं ? आप किसलिए आए हैं, यह मैं जानता हूँ। आप एक कविता लेने आए हैं ना ?

मित्र ही ही ही आप अन्दर की सब बातें जानते हैं इसीलिए तो मैं आपका लोहा मानता हूँ।

कवि   मुझे खेद है कि मैं इस बार आपकी सेवा न कर सकूँगा।

मित्र   वाह मित्र ! अगर आप ही ऐसी बात करेंगे, तो हम किधर के रह जायेंगे ? वैसे तो मैं जाना ही नहीं चाहता परन्तु लोग भूत की तरह पीछे पड़ जाते है 'नही भाई ! आपको अवश्य आना पडेगा। आपके बिना कवि सम्मेलन की शोभा ही नही है। वास्तव में यह मेरी नहीं, आपकी ही प्रशसा है।

कवि   ऐसी प्रशसा जाय जहन्नुम में ! यह कौन जानता है कि यह कविता मैंने लिखी है? आप कविता पाठ करते हैं तो सब आपको ही उसका रचयिता समझते हैं।

मित्र   नहीं मित्र ! ऐसा मत कहो। अब मैं दो एक कवि सम्मेलनों में आपको भी आमन्त्रित करवाने वाला हूँ।

कवि   (प्रसन्न होकर) अच्छा ! कब ?

मित्र   (काम बनता देखकर चेहरे पर चमक आ जाती है) बस थोडे दिन और प्रतीक्षा कीजिए। लेकिन एक शर्त है   । शर्त भी क्या है, एक मामूली सा प्रस्ताव है।

कवि   यह क्या ?

मित्र   अगर आपको कविता पढने के लिए पचास रुपये मिलें तो दस रुपए मेरे रहेंगे।

कवि   आप भी कैसी बातें करते हैं। अब तक आप मेरी न जाने कितनी कविताएँ ले जा चुके हैं और उनका पारिश्रमिक हड़प कर चुके है। मैंने कभी आपसे इस तरह का हिसाब किताब किया है ?

मित्र   यह तो ठीक है, लेकिन आप सोच लीजिए। मैं बीस प्रतिशत ही तो ले रहा हूँ, बाकी सब आपके। मैंने आपके साथ रियायत की है, और लोग तो 'फिफ्टी फिफ्टी' करते है। आप अपने आदमी हैं यह सोचकर मैंने इतना कर दिया है।

कवि   अच्छा भई, यही सही। अपनी दाल रोटी तो चले।

[डाकिया हाथ में दो मनीआर्डर लेकर प्रवेश करता है। उसके पीछे दो दुकानदार 'बिल' लेकर आते हैं]

डाकिया — बाबू जी ! आपके मनीआर्डर हैं।

[कवि जी एकदम उठकर आते हैं।]

पहला दु० — यह कपड़े का 'बिल' है।

दूसरा दु० — यह परचून का 'बिल' है।

कवि — (मुँह लटकाकर) कितना कितना है ?

पहला दु० — तीस रुपये पच्चीस पैसे।

दूसरा दु० — मेरा पचास रुपये पचपन पैसे का है।

कवि — कुछ दिन बाद ले जाते तो अच्छा था।

पहला दु० — नहीं सा'ब। दो महीने हो गए। आपने अभी तक एक कानी कौड़ी भी नहीं दी है।

दूसरा दु० — आगे से हम आपको उधार सौदा देना बन्द कर देंगे।

डाकिया — बाबू जी ! मुझे देर हो रही है।

कवि — (झल्लाकर) भाड़ में गया बाबू जी !

डाकिया — पहले दस्तखत करके रुपये ले लीजिए, फिर इनसे निबट लीजिए।

कवि — (मनीआर्डर फार्म लेकर) कितने रुपये हैं ?

डाकिया — एक अखबार के तो पच्चीस रुपये हैं और दूसरे के पन्द्रह रुपये पचहत्तर पैसे। कुल मिल कर चालीस रुपये पचहत्तर पैसे हैं। (रुपये निकाल कर गिनता है)

कवि — (हस्ताक्षर करके फार्म लौटाते हुए) लो भई ! (उसके हाथ से रुपये लेना चाहते हैं)

डाकिया — (पीछे हटकर) ठहरिए जी। पहले गिन तो लेने दीजिए। (दुबारा रुपये गिनता है।)

[दोनों दुकानदार और कवि सतृष्ण दृष्टि से देखते रहते हैं। डाकिया कवि को रुपये देकर चलने लगता है।]

कवि — (डाकिये का हाथ पकड़कर) अरे भई, पैसे तो और दे।

डाकिया — बाबू जी ! पिछले त्यौहार पर आपने बख्शीश नहीं दी थी।

कवि : तो दस बीस पैसे ले ले। इसका क्या मतलब है कि पचहत्तर पैसे डकार कर चल दिया ?

डाकिया (हाथ छुड़ाकर) आप भी कैसे आदमी हैं साहब ! ये सुननेवाले क्या कहेंगे 'कैसे कजूस आदमी हैं। (निकल जाता है। कवि कुछ क्षण उसे देखता रहता है।)

पहला दु० हाँ सा'ब ! मेरा 'बिल' चुकवा करा।

कवि तुम्हारा कितना है ?

पहला दु० कितनी बार और पूछेंगे ? कह तो दिया तीस रुपये पच्चीस पैसे हैं।

दूसरा दु० मेरा भी हिसाब साफ कीजिए। मेरा 'बिल पचास रुपये पचपन पैसे का है।

कवि किसको पहले दूँ ?

पहला दु० पहले मुझे। मेरा पूरा चुकता हो जाएगा।

दूसरा दु० वाह रे वाह, पहले मुझे दीजिए।

पहला दु० तुझे क्यों दे ? मैं इनके यहाँ अब तक पचास चक्कर लगा चुका हूँ। पहले मुझे मिलने चाहिए।

दूसरा दु० अबे, तूने तो पचास चक्कर ही लगाए हैं, मेरे तो जूते के तले ही घिस गए हैं।

पहला दु० उठा लाया होगा किसी कबाडी के यहाँ से।

दूसरा दु० जबान सँभाल कर बात कर।

कवि अरे भई लड़ते क्यों हो ? लड़ना ही है तो बाहर जाकर लड़ो।

पहला दु० बाहर क्यों जायँ ? हमने क्या कोई चोरी की है ? लाइए, रुपये दीजिए।

कवि अच्छा, दोनों दस दस रुपये ले लो। बाकी फिर

दूसरा दु० वाह, यह भी कोई हिसाब हुआ ! लाइए, चालीस रुपये मुझे दीजिए। दस रुपये बाद में दे देना। पचपन पैसे माफ किए।

पहला दु० लाइए तीस रुपये दीजिए। पच्चीस पैसे मैंने माफ किए।

कवि लो, बीस बीस ले जाओ। बाकी के फिर। (दोनों को रुपये देते हुए) अब रह गए, दस तुम्हारे और तीस तुम्हारे।

दोनों दु० और पैसे ?

कवि वे तो तुमने माफ कर दिए थे ना ?

दूसरा दु०	पूरे रुपये देंगे, तब माफ करते। अब तो पैसे भी हिसाब में लगेंगे। [दोनों निकल जाते हैं]
कवि	(धीरी चाल से मित्र के पास बैठते हुए) देख लीजिए, यह है हम कवि लोगों की दुर्दशा। दो रचनाओं के पैसे आए थे, वे झट उड़ गए। ये दुकानदार गिद्ध की तरह डाकिये को ये ताकते रहते हैं कि यह कब रुपये लाए और वे 'बिल' लेकर चलें।
झुनियाँ	(प्रवेश कर, दरवाजे से) बाबू जी ! आज पहली तारीख है।
कवि	तो मैं क्या करूँ ?
झुनियाँ	करना क्या है, पैसे निकालो। तीन महीने से एक पैसा नहीं दिया है। बताओ भला यह भी कोई बात है ?
कवि-पत्नी	(शीघ्रता से बाहर आकर) क्यों गला फाड़ रही है ?
झुनियाँ	देखो, बीबी जी ! तीन महीने से पैसे नहीं मिले हैं। बताओ भला, यह भी कोई बात है ?
पत्नी	जा, कल मिलेंगे। आज नहीं हैं।
झुनियाँ	मैं तो !
पत्नी	जाती है कि नहीं ?
झुनियाँ	मैं कल से काम पर नहीं आऊँगी। काम करवाने को तो ये कहेंगी 'झुनियाँ ! जरा यहाँ झाड़ू लगा दे। झुनियाँ, जरा यहाँ धुलाई कर दे। जब पैसा देने का बखत आवे है, तो 'कल लेना। फिर लेना। बताओ भला यह भी कोई बात है।
पत्नी	(झाड़ू उठाकर) अब जाती है कि नहीं ? मत आना कल से काम पर जा। (झुनियाँ बड़बड़ाती हुई चली जाती है। मित्र की ओर घूमकर) कहिए मित्तर जी ! आप कैसे बैठे हैं ?
मित्र	(सकपकाकर) नमस्ते भाभी जी ! [कवि घबड़ाकर कभी मित्र की ओर और कभी पत्नी की ओर देखते हैं।]
पत्नी	नमस्ते। आप कैसे बैठे हैं ?
मित्र	वैसे ही। कवि जी से एक कविता लेने आया हूँ।

पत्नी - अब तक आप ढेरों कविताएँ ले जा चुके हैं, आपने कितनों का मेहनताना चुकाया है ?

मित्र क्या मतलब ?

पत्नी (झाड़ू एक ओर फेंककर) मतलब यह है कि आप अब तक जितनी कविताएँ ले जा चुके हैं उनका कितना पैसा इन्हें दिया है ?

कवि यह तुम । (कभी मित्र को, कभी पत्नी को देखते हैं)

पत्नी (झिड़ककर) तुम चुप रहो जी । हाँ मित्तर ! कितना पैसा दिया है आपने अब तक ?

मित्र एक भी नहीं । (खिसियाहट भरी हँसी से) भाभी जी ! आप भी खूब मजाक पसन्द हैं ।

पत्नी मैं मजाक नही कर रही । निकालो रुपये । पहली कविताओं के पैसे दो, तब और माँगना ।

मित्र मेरे पास खुले रुपये नहीं हैं ।

पत्नी कितने का नोट है ? लाओ, बाकी पैसे मैं दूँगी ।

मित्र (कवि की ओर देखकर) इस अपमान का क्या मतलब है ?

पत्नी इसमें अपमान की क्या बात है ? अब तक तुम इन्हें बहुत मूड़ चुके हो । अब मैं देखती हूँ कि तुम कैसे इनको मुफ्त में दुहते हो, और हाँ, यह खाट तुमने तोड दी है, इसके पैसे कौन देगा ?

कवि यह तुम क्या कर रही हो ?

पत्नी तुम्हें बोलने की कोई जरूरत नही है । हाँ, महाशय जी, निकालो रुपये ।

मित्र मैं नहीं देता । (खड़ा हो जाता है)

पत्नी मैं कहती हूँ, दे रुपये । (पास आती जाती है)

मित्र (क्रोध से चीखकर) मै एक पैसा नही दूँगा ।

पत्नी कैसे नहीं दोगे ! हेकड़ी तो देखो जरा । एक तो चोरी ऊपर से सीनाजोरी । (मित्र के दोनों हाथ पीछे की ओर पकड़कर, कवि से) निकालो इसकी जेब से

कवि (हाथ पीछे कर) मैं तो नही निकालता !

पत्नी — निकालता है या नही ?

[कवि सहम कर मित्र की ओर बढ़ते हैं । मित्र जोर लगाकर अपने हाथ छुड़ाना चाहता है, लेकिन कवि पत्नी की मजबूत पकड से नहीं छुड़ा पाता ।]

मित्र — देखो, मेरी जेब में हाथ मत डालना । यह क्या दिनदहाडे लूट मचा रखी है ?

पत्नी — चुप होता है कि नही, या लगाऊँ झाडू मुह पर ? तू बडा रात में लूटने आता है ! निकालो जी, इसकी जेब से पैसे ।

[मित्र हाथ छुड़ाने की असफल चेष्टा करता है । कवि उसकी जेब से दस-दस के कई नोट निकालते है]

मित्र — (चीख कर) ये अनाथालय के रुपये हैं, इन्हें मत छुओ ।

पत्नी — (हाथ नचाकर) अ हा हा, बडा आया अनाथों पर रहम खानेवाला । अनाथालय के नाम से न जाने कितनों की जेब से रुपये उडा लाया है और घर जाकर गुलछर्रे उड़ायेगा । (कवि से) कितने हैं जी ये ।

कवि — (गिनते हुए) एक,दो,तीन चार,पाँच छह,सात,आठ नौ दस, ग्यारह,बारह, एक सौ बीस ।

पत्नी — (मित्र का हाथ छोडकर रुपये लेती हुई) जाओ मित्तर ! घर जाकर आराम करो ।

मित्र — (हाथ सहलाता और आँखें बचाता हुआ) रुपये वापस दे दो, नहीं तो !

पत्नी — नहीं तो क्या ? क्या कर लेगा ? क्या फाँसी पर चढवा देगा ? चल निकल भाग यहाँ से ।

मित्र — मैं कहता हूँ

पत्नी — (झाडू उठाती हुई) 'मैं कहता हूँ के बच्चे जाता है कि नहीं ?

मित्र — ठीक है । मैं अभी थाने जाकर रिपोर्ट लिखाता हूँ कि तुम लोगों ने मुझे लूट लिया है ।

पत्नी — ठीक है । जा लिखा दे । आने दे पुलिस को । मैं भी कह दूँगी कि तू हमारे घर में चोरी करने के लिए घुसा था ।

[मित्र गर्दन झटककर चला जाता है]

कवि — यह तुमने क्या कर डाला ?

पत्नी — काँटे से ही काँटा निकलता है जी ! तुम्हारी तरह नहीं हूँ, जो लुटेरों से लुटती रहूँ। मेरे घर में तुम्हीं एक दानी करण बहुत हो।

कवि — वह पुलिस को लिवा लायेगा तब ?

पत्नी — ले आए पुलिस। मैंने बड़े बड़ों की हेकड़ी मिट्टी में मिला दी है। मेरे बाप ने इन जैसे सैकड़ों को यों चुटकी से उड़ा दिया है। चलो जल्दी से बिस्तर, बर्तन बाँधो। (रुपये आँचल में बाँध लेती है) बहुत कर ली कविताई। यहाँ अपने आप तो फटेहाल रहोगे ही, मुझे भी भूखा मारोगे।

कवि — क्या मतलब ?

पत्नी — तुम्हें भी मतलब समझाना पड़ेगा। सीधी तरह से गाँव चले चलो। वहाँ अपने खेत हैं, उनसे अपनी जिन्दगी मजे में कट जायेगी। तुम्हारी इस कोरी कागजी दुनिया से पेट नहीं भरने का। तुम बाँधो बिस्तर, मैं बर्तन बाँधती हूँ। खाना मैंने बना लिया है, उसे स्टेशन पर खा लेंगे।

[कवि कपड़े समेटने लगता है और कवि-पत्नी रसोई में घुस जाती है]

गिरगिट

रजना	
प्रदीप	रजना का प्रेमी
पिता	रजना का पिता

[साधारण साजसज्जावाला कमरा । कुछ किताबें मेज पर, कुछ कुर्सियों पर, कुछ दीवान पर बिखरी हुई । दीवार पर एक कैलेण्डर जिसकी ओर देखती हुई रजना देख रही है]

रजना — आज पाँच तारीख हो गयी । बहुत इंतजार था इस दिन का । आज इंटरव्यू है । (मुड़कर दीवान की ओर आती हुई) हुंह, इंटरव्यू क्या, तमाशा होता है । किसको लिया जाना है, यह पहले से ही तय होता है । फिर भी तैयारी तो करनी ही है । (बैठकर एक किताब उलटती है । अचानक जैसे कुछ याद हो आता है, उठकर खड़ी हो जाती है) अरे, सब्जी जल गयी ।

[अन्दर चली जाती है । अन्दर से करछुल चलाने की आवाज आती है ।]

प्रदीप — (इधर उधर देखता हुआ प्रवेश करता है) शायद सब्जी जल गयी ?

रजना — (अन्दर से) अरे, आ गये तुम । बैठो तुम सब्जी जलने की बात करते हो । यहाँ जो हमारा दिल जल रहा है उसे भी कोई देखता है ?

प्रदीप — (हँसकर दीवान पर बैठता हुआ) आजकल दिल विल जलने की बात करना बिलकुल बकवास है । किसी की जलन देखने की किसको फुर्सत है ।

रजना — अब तो इस आग में झुलसना ही हमारी नियति है, ऐसा मेरा विश्वास जमता जा रहा है ।

प्रदीप जमाओ जरूर जमाओ अपना विश्वास । फ़िलहाल एक कप चाय पिलाओ । (एक किताब उठाकर देखने लगता है) ये किताबें क्यों बिखरा रखी हैं ?

रजना आज दो बजे इंटरव्यू की औपचारिकता निभाने जाना है । उसी की तैयारी कर रही थी ।

[चाय लेकर कमरे में आ जाती है]

प्रदीप अरे हाँ, आज तो तुम्हें इंटरव्यू देने जाना [redacted] । तभी तो मैं कहूँ कि आज तुम फ़िलासफ़र की टोन में क्यों बोल रही हो । दिल और आग की तपिश का कारण अब मेरी समझ में आया ।

[चाय ले लेता है और सुड़कता रहता है]

रजना निराश आदमी ही शायद सबसे अधिक फ़िलासफ़ी झाड़ता है ।

प्रदीप तुम निराश क्यों होती हो ? पहले इंटरव्यू तो दो । क्या पता, आशा लेकर जाओ तो अच्छी खबर लेकर लौटो ।

रजना (सूखी हँसी के साथ) हुआ हमेशा उल्टा है । मैं अब तक आशा लेकर ही इंटरव्यू के लिए जाती रही हूँ और निराशा लेकर लौटी हूँ। तुम कहते हो कि मैं आशा लेकर जाऊँ । मुझे तो इंटरव्यू के ये तमाशे अब बहुत बुरे लगने लगे हैं ।

प्रदीप लेकिन बिना इंटरव्यू के नौकरी भी तो नहीं मिलती । अनएम्प्लायमेण्ट की बड़ी भारी प्रॉब्लम [redacted] ।

रजना यह जानते हुए भी तुम्हारी शर्त है कि मैं कोई अच्छी नौकरी पा लूँ, तभी मुझसे शादी करोगे । (किताबें व्यवस्थित करने लगती है)

प्रदीप (रुक रुक कर) तुम जानती ही हो रजना, कि आजकल सारे सुख पैसे से ही खरीदे जा सकते हैं और पैसा कमाने के लिए पति पत्नी दोनों का कमाना बहुत जरूरी है ।

रजना (प्रदीप की ओर घूरती हुई) तुम्हारे लिए पैसा ही सब कुछ है, भावना का कोई मूल्य नहीं है । क्या पैसे से प्यार भी खरीदा जा सकता है ? गृहस्थी का सुख भी खरीदा जा सकता है ?

प्रदीप देखो रजना, ज्यादा भावुक होने की जरूरत नहीं है। मैं क्या चाहता हूँ, यह तुम अच्छी तरह समझती हो। जिस तरह तुम इंटरव्यू को बकवास समझती हो, उसी तरह मैं भावुकता को बकवास चीज समझता हूँ। बी प्रैक्टीकल। लाइफ इज नाट ए बेड ऑफ़ रोजेज। मैं जीवन में खुशहाली के लिए पैसे का महत्व समझता हूँ, भावुकता का नहीं।

रजना शायद तुमने नौकरीपेशा महिलाओंवाले घरों में झाँककर नहीं देखा कि किस तरह की टूटन थकावट चिड़चिड़ापन और अव्यवस्था उनके घरों में बिखराहट भर देते हैं। लेकिन तुम्हें तो समझाना बेकार है। (किताबें उठाकर मेज पर सजाती है)

प्रदीप (खड़ा होकर) बिलकुल। मैं यहाँ उपदेश सुनने के लिए नहीं आया हूं। (कप प्लेट को नीचे रख देता है।)

रजना (एक कुर्सी पर बैठ जाती है) पिताजी ठीक ही कहते थे कि प्रदीप के चक्कर में मत पड़ो। वह तुमसे ज्यादा पैसे को प्यार करता है।

प्रदीप तो फिर क्यों नहीं पिता जी की सलाह मानी ? इस धरती में मैं ही एक लड़का थोड़े ही हूँ।

रजना तुम्हारे लिए मेरे दिल में

प्रदीप फिर वही दिल। मेरे लिए दिल का मतलब माँस के एक टुकड़े के सिवाय कुछ भी नहीं है। दिल से ज्यादा दिमाग़ से काम लो। (रजना स्तब्ध सी प्रदीप को देखती है, तभी छड़ी लिये हुए, टोपी पहने उसके पिता का प्रवेश। रजना खड़ी हो जाती है। पिता पहले रजना की आँखें, फिर प्रदीप का गम्भीर मुँह देखने के बाद अपनी छड़ी टिकाने के लिए स्थान ढूँढते [redacted] और छड़ी को दीवान पर रखकर एक कुर्सी पर रखकर एक कुर्सी पर बैठ जाते [redacted]। टोपी उतारकर जाँघ पर रख लेते हैं।)

प्रदीप (हाथ जोड़कर) नमस्ते पिता जी ।

पिता (प्रदीप को बिना देखे रजना से) क्या बात है रजना, रोकर धुली हो क्या ?

रजना नहीं पिताजी ऐसी कोई बात नहीं है। आज इंटरव्यू है न। तैयारी कर रही थी। शायद इसीलिए मेरी आँखें लाल हों।

पिता बैठो प्रदीप बेटा, खड़े क्यों हो ?

प्रदीप बस पिताजी अब चलता हूँ। काफी देर हो गई है।

पिता अरे बैठो भी। अब मैं आया हूँ, तो कुछ देर तो बैठो। (प्रदीप बरबस सा दीवान पर बैठ जाता है) रजना बेटा, दो कप चाय तो बना लाओ।

रजना (अन्दर जाने को तत्पर) अच्छा पिताजी।

प्रदीप नहीं पिताजी, मैं नहीं पिऊँगा। मैंने अभी चाय पी है।

पिता तो क्या हो गया। एक कप मेरे साथ भी सही। ले दे कर हम चाय ही तो पिला सकते हैं, बेटा। रिटायर होने से पहले और बात थी। तुम तो अच्छी तरह जानते हो।

[रजना अन्दर चली जाती है।]

प्रदीप जी हाँ, लेकिन ... । (आगे बोलने को जैसे शब्द नहीं मिल पाते)

पिता चौराहे पर राष्ट्रीय कॉलेज के मैनेजर मिल गये थे। उनसे देर तक बातें होती रहीं। उन्हें मालूम था कि मेरी बेटी उनके कॉलेज में इंटरव्यू के लिए आ रही है।

प्रदीप (जैसे बात करने को शब्द मिल गये हों) तो फिर क्या हुआ ?

पिता होना क्या था। वह अपने आप ही कहने लगे कि एक बहुत बड़े आदमी का एक केन्डीडेट के लिये फ़ोन आ गया है, मैं अब कुछ नहीं कर सकता।

प्रदीप अच्छा। (कुछ क्षण बाद) लेकिन आप तो कर सकते हैं।

पिता क्या ?

प्रदीप आपके पढ़ाये हुए कई लोग मन्त्री हैं या बड़े ऑफ़ीसर तो हुए हैं। आप भी किसी से टेलीफ़ोन करके या मिलके

पिता (खड़े होकर अपनी टोपी कैलेण्डर की कील पर टाँगते हुए) बस, यही तो मुझसे नहीं हो सकता। मैंने जीवनभर अपने शिष्यों को ईमानदारी, सच्चरित्रता और आदर्श की शिक्षा दी है। मुसीबत में भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। अपना सिर ऊँचा करके [redacted] हूँ और हमेशा ऊँचा रखकर चलना चाहता हूँ।

प्रदीप (एक पैर दूसरे पैर पर रखता हुआ) ये सब पुराने ज़माने की बातें हैं। आउट ऑफ़ डेट।

पिता तुम मुझे पुराना [redacted] लो या आउट ऑफ़ डेट। मेरे विश्वास अपने हैं और तुम्हारे विश्वास तुम्हारे। मैं किसी हालत में अपने आदर्शों की हत्या नहीं कर सकता।

[कुछ क्षण मौन। रजना चाय के प्याले पिता और प्रदीप को थमा कर अन्दर चली जाती है।]

प्रदीप बुरा मत मानियेगा पिताजी! आजकल सीधे और ईमानदार आदमी ही आदर्श और सिद्धान्तों को मरे बच्चे वाली बंदरिया की तरह छाती से चिपटाये घूम रहे हैं। वे सब जगह दुत्कारे जा रहे हैं या उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। (पिता घूरकर प्रदीप को देखते हैं लेकिन प्रदीप प्याले की ओर देखता हुआ बोलता रहता है) इस तरह न तो रजना को कभी नौकरी मिल सकती है और न आप

पिता : देखो प्रदीप! (चाय सुड़ककर) रजना को नौकरी मिले या न मिले, एक बात साफ़ है कि मैं उसके लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाऊँगा। रजना अपने बलबूते पर हमेशा टॉप करती रही है। यू जी सी फ़ैलोशिप लेकर उसने पी एच०डी० की है। मुझे यह पक्का विश्वास है कि सफलता कभी न कभी तो उसके आगे हाथ फैलायेगी ही।

प्रदीप ये सब डे ड्रीम्स हैं, दिवास्वप्न हैं। बिना तिकड़म और मिलीभगत के आजकल कोई काम नहीं सधता।

पिता तुम कुछ भी कहो। (रजना तैयार होकर बाहर आती है) अच्छा रजना बेटी, तुम इटरव्यू के लिए तैयार भी हो गयीं ? शुभकामनाएँ! (प्याला नीचे रख देते हैं।)

रजना मैं शायद जल्दी ही लौट आऊँगी पिताजी! रसोई में खाना तैयार रखा है। आपके साथ प्रदीप भी खा सकते हैं। (बाहर चली जाती है।)

प्रदीप खाने वाने का चक्कर छोड़िए पिताजी मैं भी अब जाना चाहता हूँ। (प्याला नीचे रख देता है और खड़ा हो जाता है।)

पिता अरे बैठो भी। बड़े दिनों बाद आये हो। (खड़े होकर प्रदीप के कंधे दबाकर बैठा देते हैं और रसोई से खाना उठा लाते हैं। प्रदीप अनुत्साह के साथ बैठ जाता है। दोनों खाते खाते बातें करते रहते हैं।)

पिता लगता है, आज सब्जी जल गयी है।

प्रदीप हाँ, जब मैं आया था, तब जल रही थी। (मुस्करा उठता है।)

पिता बेचारी अकेली जान, इटरव्यू की तैयारी करे और खाना भी पकाए, घर की सफ़ाई करे और कपड़े भी धोये। अकेली जान को सौ झमेले हैं।

प्रदीप वह तो सब महिलाओं को करना पड़ता है। विदेशों में क्या स्त्रियाँ घर और बाहर का काम नहीं करतीं ?

पिता तुम लोगों में यही एक बड़ी कमी है कि तुम लोग महिलाओं की नौकरी के मामले में कोई समझौता करने को तैयार नहीं हो लेकिन उनके आराम और भावात्मक सुख के बारे में सोचने की फुर्सत तुम लोगों को नहीं है। विदेशों में--विदेशों से तुम लोगों का मतलब इंग्लैंड, अमरीका से ही है ना ? वहां नौकरीपेशा महिलाओं के

आराम के लिए घर और रसोई के इतने सारे उपकरण हैं, घूमने मनोरंजन करने की जितनी सुविधाएँ हैं, उन्हें तुम लोग यहाँ दे सकते हो ?

प्रदीप हमारे पास अधिक पैसे हों, तो वे सारी सुविधाएँ खरीदी जा सकती हैं।

पिता (पानी पीकर गिलास नीचे रख देते हैं) पैसे से हर चीज नहीं खरीदी जा सकती, प्रदीप ! थके हुए पति का पत्नी द्वारा मुस्कराहट के साथ किया जानेवाला स्वागत तुम पैसों से नहीं खरीद सकते। बच्चों को दिया जानेवाला प्यार तुम पैसों से नहीं खरीद सकते। नौकरी के कारण पैदा होनेवाले तनाव को तुम पैसों से दूर नहीं कर सकते और ।

प्रदीप यहाँ मैं आपसे सहमत नहीं हूँ पिताजी ! क्षमा कीजिए, जिन घरों की महिलाएँ नौकरी नहीं करतीं क्या वहां पत्नी का प्रेम, बच्चों को प्रॉपर प्यार और तनाव का अभाव मिलता है ?

पिता तुम लोगों को तो समझाना ही बेकार है। स्वार्थ के आगे भावना का कोई मूल्य नहीं है तुम्हारे लिए।

प्रदीप यही भावना, यही दिल रजना को दुःख देते हैं, यही आपको।

पिता हमें तो तुम दुःख देते हो और कोई नहीं देता।

प्रदीप मैं आप लोगों को दु ख देता हूँ तो आप लोग मुझे छोड़ क्यों नहीं देते?

पिता यही तो मेरी मुश्किल है। अगर रजना बीच न होती तो मैं तुम को कब का । वैसे तुम भी रजना को छोड़ना नहीं चाहते, हालाँकि उसका कारण दूसरा है।

प्रदीप वह क्या ? (हँसता है, खाना छोड़ देता है और पानी पीता हुआ पिता को देखता रहता है)

पिता वह यह कि रजना को तुम भविष्य में सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गी समझते हो और मैं यह बात अच्छी तरह समझता हूँ कि जिस दिन

तुमको यह भरोसा हो जायेगा कि रजना तुम्हारे लिए पैसे कमाकर नहीं दे सकती, उसी दिन तुम उसको छोड़ दोगे।

प्रदीप (हँसकर खड़ा होता हुआ) आप भी क्या बात करते हैं (गिलास रख देता है।)

पिता (गिलास उठाकर पानी पीते हुए) ठीक कहता हूँ।

प्रदीप देखिए पिताजी, मैं जैसा भी हूँ, अन्दर बाहर से एक सा हूँ। मेरे भी कुछ आदर्श हैं, कुछ सिद्धान्त हैं।

पिता (ठहाका लगाते हुए) तुम्हारे भी कुछ आदर्श हैं ? कुछ सिद्धान्त हैं ? (हँसते हुए गिलास रखकर, दीवान पर मसनद का सहारा लेकर तिरछे लेट जाते हैं)

प्रदीप क्या ? नहीं हैं ? क्या मैंने दहेज न लेने की प्रतिज्ञा नहीं कर रखी है?

पिता (बैठकर दीवार से पीठ टिकाते हुए) मैं तुम्हारी प्रतिज्ञा के ढोंग को अच्छी तरह से समझता हूँ। दहेज लेने की इस प्रतिज्ञा के साथ क्या तुमने यह प्रतिज्ञा नहीं कर रखी है कि जब तक रजना की नौकरी नहीं लग जाती, तब तक तुम उससे शादी नहीं करोगे ?

प्रदीप प्रतिज्ञा तो नहीं, हाँ, शर्त जरूर है।

पिता तो प्रतिज्ञा और शर्त में अन्तर क्या रहा ? मैं तुम्हारी इस चतुराई को अच्छी तरह समझता हूँ। तुम जानते हो कि दहेज माँगने पर तुम्हें क्या मिलेगा दस हजार, बीस हजार, तीस हजार या मेरे जीवनभर की कमाई, मेरी जायदाद और मेरी कुल जमा राशि। लेकिन रजना तुमको इससे ज्यादा कमाकर दे देगी और मेरी जमीन जायदाद, जमा रुपया तो रजना की मार्फत तुमको अपने आप मिल ही जायेंगे।

प्रदीप आप भी क्या बात करते हैं, पिताजी ! मैं इतना नीच नहीं हूँ।

पिता : (छत की ओर देखते हुए, व्यंगात्मक स्वर में) हाँ, इतने नीच नहीं हो।

प्रदीप (तमतमाकर) आप मुझे गाली देते हैं।

पिता (हँसकर) मैं नहीं, तुम्हीं अपने आपको गाली दे रहे हो।

प्रदीप मैं जा रहा हूं। फिर कभी इस घर में कदम नहीं रखूँगा। रजना से कह दीजिये कि ।

पिता नाराज मत हो बेटा ! मेरी कमजोर नब्ज तुम्हारे हाथ में है, इसलिए तुम कुछ भी कह सकते हो। तुम इस घर में कदम नहीं रखोगे तो मुझे तुम्हारे घर में कदम रखना पड़ेगा।

प्रदीप क्या मतलब ?

पिता मतलब यह बेटा, कि रजना मेरी कमजोर नब्ज है और रजना न जाने क्यों तुम्हें चाहती है।

प्रदीप मैंने तो रजना से नहीं कहा कि वह मुझे चाहे।

पिता यही तो इन हिन्दुस्तानी लड़कियों की खराबी है कि ये एक बार जिसे अपने मन में बसा लेंगी, उसे फिर निकाल नहीं सकतीं।

प्रदीप (जैसे कुछ सोच नहीं पा रहा कि वह जाये या रुके, कुछ टहलकर) देखिए पिताजी, मैं रजना की इसी बात के कारण रुका हुआ हूं, नहीं तो मैं कब का किसी और लड़की से शादी कर चुका होता। इतना बडा लेखक हूं, बड़ा ऑफीसर हूं। लडकियों की मेरे लिए कमी नहीं है। कई लड़कियाँ और उनके बाप मेरे चारों ओर मँडराते रहते हैं।

पिता अब मेरा मुँह ज्यादा मत खुलवाओ। तुम जैसा आदमी कब से किसी की भावना को समझने लगा ?

प्रदीप आपने मुझे समझ क्या रखा है ? आप सरासर मेरा अपमान किये जा रहे हैं। क्या आप समझते हैं कि मैं झूठ बोल रहा हूं ?

पिता (खड़े होते हुए) तुम सरासर झूठ बोल रहे हो। मैं तुम्हारे ही दोस्तों से सुन चुका हूं कि लड़कियों को तुम पानी का गिलास समझते हो। जब प्यास लगने पर दूसरा गिलास उठा लिया। इसी तरह एक बार जूठा करके छोडा गया गिलास तुम दुबारा अपने होठों से नहीं

लगाना चाहते यह बात न उन लड़कियों को मालूम होगी और न उनके पिताओं का, जो तुम्हारे चारों ओर मँडराते रहते हैं।

प्रदीप अब तो बस, हद हो गई। (खड़े होकर) मुझे आई फील मोस्ट इन्सल्टेड। आश्चर्य है कि आप पिछले दो सालों में मुझे इतना इस रूप में पहचान पाये हैं। आपकी रजना क्या मुझे यों ही चाहती है ? या तो रजना बेवकूफ है या या आप ।

पिता (दोनों हाथ पीछे टिकाकर दीवान पर बैठते हुए) तुम कुछ भी कहो। बेवकूफ कहो या कुछ और। मैं तुमसे रजना से भी अधिक जानता हूँ। रही तुम्हारी बड़े लेखक होने की बात, सो तुम्हें कौन कितनी घास डालता है या तुम किसके आगे पीछे कितना घूमफिरकर छप पाते हो, या तुम अच्छी तरह से जानते हो। रहा कम्पनी में बड़े आफ़ीसर होने का सवाल, सो मै राष्ट्रीय कॉलेज के मैनेजर से तुम्हारा सारा चिट्ठा सुन चुका हूँ। वही तुम्हारी कम्पनी में तुम्हारे बॉस हैं ना ?

प्रदीप (अशक्त सा कुर्सी पर बैठता हुआ) जी ।

पिता वह मेरे अच्छे मित्र हैं, यह तुम अच्छी तरह जानते हो ?

प्रदीप जी ।

पिता मैं उनसे सुन चुका हूँ कि तुम ऑफ़िस के काम से ज्यादा ऑफ़िस की लडकियों पर ध्यान देते हो।

प्रदीप जी जी यह सब बिलकुल गलत है, बकवास है।

पिता गलत हो या सही राष्ट्रीय कॉलेज के इटरव्यू के बाद तुम्हारी कम्पनी के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स की आज बैठक हो रही है। उसमें तुम्हारा केस आ रहा है

प्रदीप क्या क्या ?

पिता क्या दुबारा बताऊँ ?

प्रदीप नहीं।

[कुछ क्षण स्तब्धता]

प्रदीप आपने मेरे डायरेक्टर से कुछ कहा नहीं?

पिता (सीधे बैठकर) क्या कहता?

प्रदीप यही कि प्रदीप मेरा होनेवाला दामाद है। वह तो आपके गहरे दोस्त हैं।

पिता (हँसकर) होनेवाले दामाद हो हुए तो नहीं हो। होनेवाले और हुए में तो बड़ा भारी फ़ासला होता है। क्या पता यह फ़ासला कभी पूरा हो कि न हो।

प्रदीप (चापलूसीभरे स्वर में) वाह पिताजी, होगा क्यों नहीं? रजना और मैं एक दूसरे को चाहते हैं पसन्द करते हैं।

पिता (खड़े होते हुए) वाह, तुम तो बड़ी जल्दी गिरगिट की तरह रंग बदल लेते हो। कुछ देर पहले तो अपने आगे पीछे घूमनेवाली लड़कियों और उनके बापों की चर्चा करके रजना के प्रति वैराग्य दिखा रहे थे अब केवल रजना को चाहने की बात करने लगे।

[बर्तन उठाने लगते हैं, तभी प्रदीप लपककर बर्तन थाम लेता है]

प्रदीप लाइए, मैं अन्दर रख आता हूँ। आप क्यों कष्ट करते हैं?

पिता नहीं। तुम बैठो, मैं रख आता हूँ।

[प्रदीप बर्तन लेकर अन्दर चला जाता है]

रजना (प्रवेश करके पिता से लिपटती हुई) ओह पिताजी! मेरा सलेक्शन हो गया। (अन्दर से आते हुए प्रदीप को देखकर अलग खड़ी हो जाती है। पिता प्रसन्नतापूर्वक और प्रदीप भावहीन दृष्टि से रजना को देखने लगते हैं) आप तो कह रहे थे कि किसी बड़े आदमी का फ़ोन आ गया है, इसलिए मैनेजर मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते।

पिता : (हँसकर) मैंने प्रदीप की प्रतिक्रिया देखने के लिए यह बात बनाकर कही थी।

रजना कोई और केण्डीडेट मेरी योग्यता की टक्कर का था ही नहीं। और, हाँ, जब मेरा इंटरव्यू हुआ तो मैनेजर उठकर जा चुके थे। मैं तो बड़ी घबरा रही थी और निराश भी, लेकिन पता नहीं कैसे जो जो सवाल मुझसे पूछे गये, मैं फटाफट उनके उत्तर देती गई और इंटरव्यूअर बार-बार 'वैरीगुड' कह उठते थे।

पिता वैरी गुड। लेकिन रजना ! एक बुरी बात हो रही है।

रजना वह क्या ?

पिता तुम्हारे सलैक्शन के दिन ही प्रदीप की नौकरी से छुट्टी हो रही है।

रजना अच्छा हुआ। गुड न्यूज। आज एकसाथ दो अच्छी खबरें !

प्रदीप (तिलमिलाकर) रजना।

रजना अब मेरा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

प्रदीप क्या कह रही हो ?

रजना सुनाई नहीं दिया ?

प्रदीप पिताजी, रजना को आप समझाइए न कि

पिता मैं तो इसे दो साल से समझा रहा हूँ। अब यह अपने आप समझ रही है, तो और अच्छा है।

रजना पहले मेरी बुद्धि पर पर्दा पड़ गया था, आज मैंने उसे उतार फेंका है।

प्रदीप रजना तुम्हें हो क्या गया ? नौकरी मिलते ही मुझसे आँख फेर बैठीं।

रजना हाँ क्योंकि यदि मुझे आज नौकरी न मिली होती तो तुम मुझसे आँखें फेर लेते और यदि प्रमिला को मिल जाती तो उससे गाँठ जोड़ लेते।

प्रदीप रजना !

पिता यह प्रमिला कौन है ?

रजना प्रमिला नाम की एक लड़की भी आज इंटरव्यू देने आई थी। वह उदास थी इसलिए बातचीत में मैंने उसकी उदासी का कारण पूछा तो उसने क्या उत्तर दिया ? जानते हैं आप ?

पिता	तुम्हीं बताओ।
प्रदीप	(बेचैन सा) रजना, तुम भी क्या बेकार की बातें ले बैठीं।
रजना	उसने इन साहब का नाम और पद बताते हुए कहा कि इन्होंने उसे नौकरी मिलने पर उससे शादी करने का वायदा कर रखा है।
प्रदीप	ऐसी तो बीसियों लड़कियाँ मेरे चक्कर लगाया करती हैं, मैं किस किस से शादी कर सकता हूँ ? मैं उनको टरकाने के लिए कोई न कोई बहाना बना देता हूँ। मैं तो केवल तुम्हें
रजना	मेरा नाम तुम्हारी जबान पर फिर कभी नहीं आना चाहिए। समझे? दिल तुम्हारे लिए माँस का टुकड़ा है, भावुकता ही तुम्हें मुझसे ज्यादा प्यार है। अब मैं तुम जैसे आदमी से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। (कमरे को व्यवस्थित करने लगती है)
प्रदीप	पिताजी यह मेरी लाइफ का सबसे बड़ा सवाल पैदा हो गया है।
पिता	(मुस्कराकर) यह सवाल रजना के कारण पैदा हुआ है या अपनी नौकरी जाने के कारण ?
प्रदीप	(कुर्सी पर बैठकर) दोनों के कारण।
पिता	बिलकुल गलत। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम रजना को लेकर कभी सवालों से नहीं घिरे हो। उल्टे मैं और रजना तुम्हारे कारण सवालों से उलझे हैं। मैं तुम्हारी नीयत अच्छी तरह से जानता हूँ। पूछो, तो बताऊँ।
प्रदीप	क्या ?
पिता	तुम्हारी नीयत यह है, मुझसे साफ साफ क्यों कहलाते हो, कि तुम अब एक पत्थर से दो शिकार करना चाहते हो। रजना से शादी करके तुम उसकी कमाई खाना चाहते हो और मेरे दामाद बनकर अपनी नौकरी बचाना चाहते हो। हर तरह से तुम्हें अपनी चिन्ता है, हमारी नहीं।
	[प्रदीप चिन्तित मुद्रा में चहलकदमी करने लगता है]
रजना	पिताजी आप इस आदमी की जितनी परतें उधेड़ते हैं, उतना ही मुझे डर लगने लगता है।

[पिता मुस्कराते रहते हैं।]

प्रदीप रजना, विश्वास करो। मैं अब भी तुमको ।

[रजना छड़ी उठाकर पिताजी को देती है।]

पिता (छडी पकड़ते हुए) इसका मैं क्या करूँ ?

रजना साम, दाम, दण्ड और भेद में से तीन का प्रयोग तो आप कर चुके हैं दण्ड का प्रयोग अभी तक आपने नहीं किया है। इस भूत पर अब इस चौथे उपाय का प्रयोग और कर देखिए।

प्रदीप यह मेरा अपमान है।

रजना तुम्हारा आदर, तुम्हारा सम्मान था ही कब जो आज अपमान होगा।

प्रदीप देखो रजना, मैं फिर कभी इस घर में कदम नहीं रखूँगा।

रजना रखने ही कौन देना चाहता है ? (पिता से छडी लेती हुई) लाइए पिताजी, मैं ही इसका प्रयोग करके देखूँ।

[प्रदीप झटके से निकल जाता है। पिता और रजना एक-दूसरे की ओर देखकर ठहाका लगाते हैं।]

दायरे के भीतर-बाहर

पिता	रामकिशोर
माता	रामकिशोर की पत्नी
माधुरी	रामकिशोर की बहू
अमित	रामकिशोर का बेटा
मिट्ठू	रामकिशोर का पोता
खन्ना	रामकिशोर का मित्र
रिक्शा वाला कुली ताँगे वाला	

[ट्रेन चलने की ध्वनि]

पिता देखो ! तुम्हारे कहने से मैं दिल्ली जा रहा हूँ। अगर मुझे लगा कि मेरा थोड़ा सा भी तिरस्कार हो रहा है तो मैं वापस चला आऊँगा।

माता जरूर चले आना।

पिता : (स्वगतकथन) अमित को बिना खबर किये जा रहे हैं। वह हमें देखकर दु खी होगा या खुश कौन कह सकता है ? यह जाकर ही पता चलेगा। लेकिन ऐसी नौबत ही क्यों आने दी जाय ? (रुककर) मैं भी क्या करूँ, अमित की माँ मानती ही नहीं थी। बार बार कहती थी -

[हल्का संगीत]

माता अमित को देखे हुए बहुत दिन हो गए। चलो कुछ दिन उसके पास रह आयें। अकेले पड़े पड़े जी ऊब गया है।

पिता जी ऊब गया है तो चले जाओ उसके पास। मैंने कब मना किया है?

माता : मैं अकेली जाऊँगी ? तुम क्यों नहीं चलते ?

पिता : मेरी इच्छा नहीं है।\

माता   क्यों झूठ बोलते हो ! जब तब तो कहते रहते हो कि घर में पड़े-पड़े जी नहीं लगता। चलो, कहीं घूम आयें।

पिता   मैं कोई दिल्ली जाने को थोड़े ही कहता हूँ।

माता   तो कहाँ जाने के लिए कहते हो ?

पिता   बस, यों ही कहीं। जहाँ तुम्हारा जी चाहे।

माता   वाह, यह भी खूब रही। एक तरफ तो मेरी इच्छा पूछते हो, दूसरी तरफ मेरी इच्छा पूरी करने से इन्कार कर देते हो। तुम कहीं नहीं जाओगे। इस चारदीवारी में पड़े पड़े

पिता   एक तो मैं वैसे ही परेशान रहता हूँ, ऊपर से तुम मेरे प्राण खाये जाती हो। मेरी यह चारदीवारी मेरे लिए स्वर्ग है। तुम्हें जहाँ जाना हो, जाओ।

माता   दुनिया में और लोग भी रिटायर होते हैं, लेकिन कोई भी तुम्हारी तरह सारी दुनिया अपने में समेटकर घर में बन्द नहीं हो जाता। न कहीं आना, न जाना। न मिलना, न जुलना। न हँसी, न बात। हर समय चिड़चिड़ाते रहते हो।

पिता : हाँ, हाँ, मैं चिड़चिड़ाता रहता हूँ। चिड़चिड़ाऊँगा। तुम्हें क्या ?

माता   हाँ मुझे क्या ? मेरी तो कोई हस्ती ही नहीं है। मुझे तो सुख-दुःख का अनुभव होता ही नहीं है, केवल तुम्हें होता है। मैंने तुम जैसा स्वार्थी आदमी नहीं देखा, जो केवल अपनी ही सोचता रहता है, दूसरों की पसन्द नापसन्द को देखकर भी अनदेखा करता है।

[संगीत समाप्त]

माता : क्या सोच रहे हो ?

पिता   कुछ नहीं।

माता : कुछ तो !

पिता   कुछ खास नहीं। यही सोच रहा था कि आजकल जमाना बड़ा खराब आ गया है। कोई किसी की परवाह नहीं करता। भाई भाई की परवाह नहीं करता, बेटा बाप की नहीं

माता   और बाप बेटे की नहीं।

पिता — क्या मतलब ?

माता — मुझे मालूम है कि तुम अमित को दिमाग में रखकर ये सारे सिद्धान्त बघार रहे हो। बेटा लाख कोशिश करके बाप को खुश रखना चाहे, लेकिन तुम्हें उसकी क्या परवाह। तुम्हें तो उन बड़े बूढ़ों की बातें प्यारी लगती हैं, जो अपनी कमियाँ न देखकर केवल अपनी सन्तान में कमजोरियाँ खोजने और बखानने के आदी होते हैं।

पिता — (खीझकर) तुम चुप रहो। तुम्हें अभी तक इतनी तमीज भी नहीं आयी कि कौन सी बात किस जगह पर की जानी चाहिए, इसका ध्यान रखो।

माता — ठीक है, तुम्हें तो बहुत तमीज है।

[गाड़ी रुकने और रेलवे स्टेशन का शोर, जो नीचे के संवादों के साथ-साथ कम होता जाता है]

पिता — किससे चलें ? टैक्सी या बस से ?

माता — टैक्सी कर लो। बस से इतनी दूर जाना बड़ा मुश्किल होगा।

पिता — (कुछ क्षण ठहरकर, कुछ कड़वे स्वर में) बस से जाना बड़ा मुश्किल होगा ! बस, हिला दी तोलेभर की जीभ। क्या मुश्किल होगा ? दो कदम पर ही तो बस स्टैण्ड है और आध पौन घण्टे में कोई न कोई बस मिल ही जाएगी। मेरे पास इतना पैसा नहीं है फिजूलखर्ची के लिए। टैक्सी में जाने की इच्छा थी तो बुला लिया होता अपने बेटे को।

माता — देखो जी तुम्हीं ने पूछा था कि टैक्सी से चलें कि बस से। जैसी तुम्हारी मर्जी हो वैसा करो मुझसे क्यों पूछते हो ? मेरा क्या है मैं तो पैदल भी जा सकती हूँ मैं तुम्हारे आराम के लिए कह रही थी, लेकिन तुम्हें बसों में धक्के खाने से डर नहीं लगता तो मुझे क्या ? चलो, बस से चलते हैं।

रिक्शावाला — बाबूजी ! रिक्शा ! कहाँ चलना है ? फुहारा फतहपुरी, लालकुआ, जामा मस्जिद।

पिता — नहीं भैया रिक्शे में नहीं जाना।

तॉंगेवाला — सेठ जी ! तॉंगे में चलेंगे ?

पिता — नहीं।

कुली — सामान सिर पर ले चलूँ सा'ब ?

पिता — तू मुझे सिर पर ले चल। बोल, कहाँ ले चलेगा ?

माता — अजी, इसपर क्यों बिगड रहे हो। चलो न यहाँ से बाहर। यहाँ खडे रहोगे तो दस आदमी पूछेंगे ही।

पिता — चलो।

[सड़क का शोर]

पिता — देखो, बचकर चलना। देख के। अरे ओ तॉंगेवाले। दीखता नहीं है क्या ? सिर पर चढा चला आ रहा है।

तॉंगेवाला — मैं कहाँ सिर पर चढा चला आ रहा हूँ। आप ही घोडे के आगे चले आ रहे हैं।

पिता — (सक्रोध) क्या कहा ? मैं क्या पागल हूँ ? अन्धा हूँ, जो मुझे दीखता नहीं है।

तॉंगेवाला — मुझे क्या मालूम !

माता — अरे ओ भैया तॉंगेवाले ! तू जा। (पति से) तुम तो बेकार ही सबसे उलझने लगते हो। देखो वह बस जानेवाली है। जरा जल्दी चलो। सँभल के। देखो, केले का छिलका पड़ा है। रपट न जाना। लो बस में चढो। वह सीट खाली है उसपर बैठ जाओ।

पिता — तुम बैठो। मेरा क्या है मैं तो खडा खड़ा भी जा सकता हूँ मर्द आदमी हूँ। तुम चार दिन पहले ही बुखार से उठी हो।

माता — नहीं, तुम बैठो।

पिता — मैंने कहा ना बैठ जाओ।

माता — तुम तो, बस, अपनी जिद के आगे किसी की चलने थोड़े ही दोगे। लो, मैं ही बैठ जाती हूँ। जब खडे खड़े थक जाओ तब बता देना।

[कण्डक्टर की सीटी के साथ बस चलने की आवाज, जो धीरे-धीरे मन्द होती जाती है। मन्द संगीत उभरता है।]

माधुरी — अरे, माता जी, पिता जी आप ! प्रणाम !

माता सुखी रहो।

माधुरी आप लोग कैसे आए ? बस से या ट्रेन से ?

माता ट्रेन से आए हैं। अमित कहाँ है ?

माधुरी ऑफिस गए हुए हैं।

माता और बच्चे ?

माधुरी सुधा को हमने पिलानी भेज दिया है। वहीं होस्टल में रहकर पढ़ती है। आपको हमने लिखा भी था। मिट्टू स्कूल गया है, तीन बजे तक आएगा। आप लोग आराम कीजिए। आपका कमरा खोले देती हूँ और अभी चाय बना कर लाती हूँ।

माता अरे इसकी क्या जरूरत है !

माधुरी नहीं। ऐसा कैसे हो सकता है ?

[अल्प विराम]

माता तुम चुपचाप कैसे हो ?

पिता मुझे बहू का यह पूछना अच्छा नहीं लगा कि आप कैसे आये, क्यों आये। मैं पहले ही कहता था कि दिल्ली मत चलो।

माता आप तो बस बाल की खाल उतारने में माहिर है। बहू ने कब पूछा कि क्यों आये ? उसने यही तो पूछा है कैसे आये बस से या रेल से।

पिता मैं आदमी की नस नस पहचानता हूँ। मैं आदमी की शक्ल से ही उसका मन पढ़ सकता हूँ।

माता यह तो मैं जानती हूँ कि आप दूसरों के भीतर से दोष ढूँढ निकालने में बहुत माहिर है। बड़े बड़े ज्योतिषी पंडित ज्ञानी आपके आगे पानी भरते हैं।

पिता मेरी बात को मजाक में मत उड़ाओ। अभी तो यह शुरूआत है। पहला ही दिन है। देखती जाओ किसका क्या रुख रहता है। मैं किसी के टुकड़ों पर पलने की इच्छा से यहाँ नहीं आया हूँ। मैं रिटायर हो गया हूँ तो क्या हुआ ? मेरे पास अपनी उम्र काटने के लिए काफी पैसा है। कोई यह न समझे कि मैं लाचार होकर यहाँ आया हूँ।

माता — हे भगवान् ! कौन तुम्हें लाचार समझ रहा है ? कौन तुम्हें टुकडे देने की बात कह रहा है ? देखो, मैं कहे देती हूँ तुम हर-एक पर शक करने की अपनी इस गन्दी आदत को छोड दो वरना

पिता — तुम्हें तो, बस, केवल मुझमें ही दोष नजर आते हैं और बाकी सब दूध के धुले लगते हैं।

माधुरी — (पास आती हुई) आप यह चाय पी लीजिए, फिर दूध गर्म करके देती हूँ। आप सुबह-सवेरे के घर से चले हैं और अभी तक नाश्ता भी नहीं किया होगा। पहले हाथ मुँह तो नहीं धोना है ?

माता — नहीं, हम लोग आगरा से फारिग हो कर चले थे।

माधुरी — तो मैं आपके नहाने के लिए पानी गर्म कर दूँ।

माता — अरे नहीं बहू। हम ठंडे पानी से नहा लेंगे। अभी सर्दियाँ नहीं आयी हैं।

माधुरी — लेकिन पिताजी तो गठिया की वजह से हमेशा गर्म पानी से नहाते हैं। मैं उनके लिए पानी गर्म किये देती हूँ। कपडे धोने के लिए पानी गर्म होने रखा है। पहले आपका पानी रख दूँ।

[अल्प विराम]

माता — देखो तुम बेकार बहू पर शक कर रहे थे। तुम्हारा कितना ध्यान रख रही है !

पिता — अभी तो पहला दिन है। देख लेना, थोड़े दिनों के बाद क्या रुख रहता है।

[संगीत]

मिट्टू — ममी, दादा जी और दादी जी कब आये ?

माधुरी — चुप अभी खाना खाकर सोये हैं। तू अपने कपड़े बदल और कुछ खाना हो तो खा ले।

मिट्टू — दादाजी मेरे लिए कुछ लाये हैं ?

माधुरी — जब उठ जाएँ, तब पूछ लेना। अभी तो कपड़े बदल, कितने गन्दे कर रखा है।

[संगीत]

माता बहू ! माधुरी ! अभी तक मिट्ठू नहीं आया क्या ?

माधुरी आ गया है माता जी, लेकिन आप दोनों को सोते देखकर खेलने चला गया है।

माता अमित कितने बजे आता है ?

माधुरी करीब छह बजे तक आते हैं। कभी कभी बस मिलने में देर हो जाती है तो सात आठ भी बज जाते हैं।

माता इतने साल हो गये उसे नौकरी करते, कोई सवारी क्यों नहीं खरीद लेता ?

माधुरी बस माताजी यों ही। वे कहते हैं कि दिल्ली में बस से यात्रा करना ही सुरक्षित है।

माता सो तो है।

मिट्ठू ओ हो दादीजी, नमस्ते। मेरे लिए क्या लायी हो ?

माधुरी बस घर में घुसने की देर नहीं हुई कि माँगना शुरू। दादीजी क्यों लाएँ। तू दादीजी के लिए कुछ ला। फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ ।

मिट्ठू मैं क्या नौकरी करता हूँ, जो कुछ लाऊँगा।

माधुरी तो क्या दादीजी नौकरी करती है ?

मिट्ठू ठीक है मैं दादाजी से माँग लूँगा। वे तो नौकरी करते हैं।

माधुरी नहीं उनसे भी कुछ नहीं माँगना। तेरे पापा आयेंगे तो कुछ लेकर आयेंगे।

माता बेटा मिट्ठू, तू फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ है तो इधर आ। तुझे पुच्ची दे दूँ।

[चूमने की ध्वनि]

मिट्ठू नहीं दादीजी कोरी पुच्ची नहीं चलेगी।

माता शाम को मैं तेरे लिए कुछ मँगवा दूँगी। बोल क्या लेगा ? मिठाई ? कपड़े ? खिलौने ?

माधुरी : नहीं माताजी इसे कुछ नहीं चाहिए। सब कुछ तो है इसके पास।

माता : ठीक है लेकिन हम लोग बाहर से आये हैं तो कुछ लेकर ही आना चाहिए था।

पिता — अजी सुनती हो ?

माता — क्या है ?

पिता — इधर आना।

माता — कहिए, क्या बात है ?

पिता — मिट्टू क्या कह रहा था ?

माता — कुछ नहीं। बस तुमने तो आज हमें दुःखी किया। आगरा से यहाँ आये हैं और बच्चे के लिए कुछ लेकर नहीं आये।

पिता — मैं क्या कमाई करता हूँ, जो सामान खरीद कर लाता।

माता — पर बच्चे को क्या पता कि तुम्हारी नौकरी खत्म हो गयी है।

पिता — वाह ! मैं रिटायर हो गया और मिट्टू को पता ही नहीं चला। अमित और माधुरी के बीच मेरे रिटायरमेण्ट के बारे में क्या कभी बात नहीं हुई होगी ? इसका मतलब यह है कि मेरे रिटायरमेंण्ट को इन लोगों ने गम्भीरता से नहीं लिया है।

माता — तुम बैठकर मतलब निकालते रहो, मैं चली बहू के पास। (दूर जाती हुई) तुम्हें इन लोगों की राजी खुशी पूछने की न तो उत्सुकता है और न फुरसत ही। मैं तो कम से कम पूछ लूँ।

मिट्टू — दादाजी, प्रणाम। मेरे लिए क्या लाये हैं आगरे से ?

पिता — बेटा ! मैं जल्दबाजी में भूल आया। लो दस पैसे। बाजार में कुछ खा पी लेना।

मिट्टू — दस पैसे में आजकल क्या आता है दादाजी ! पप्पा ऑफिस जाते समय मुझे रोज एक रुपया देते हैं।

पिता — तू ठहरा अमीर बाप का बेटा। हम तो भाई, गरीब आदमी हैं।

मिट्टू — ऊँ हूँ। मैं नहीं जानता। मुझे एक रुपया दीजिए, दादाजी !

माधुरी — मिट्टू ! चल, बाहर आ। दादाजी को क्यों परेशान कर रहा है ?

माता — अरे उसे एक रुपया दे दो ना ! खाली हाथ चले आये हो फिर भी बच्चे को एक रुपया नहीं दे सकते।

माधुरी — नहीं माताजी, इसकी यह आदत बड़ी खराब है। कोई भी घर में आ जाय, सबसे चीजें माँगता है।

माता — बच्चा है। हमसे नहीं माँगेगा तो किससे माँगेगा। लो, अमित आ गया।

अमित — अरे माताजी ! प्रणाम। आप कब आयीं ? पिताजी कहाँ हैं ?

माता — सुखी रहो। वे अन्दर हैं। मिट्ठू से उलझ रहे हैं।

[अल्प विराम]

अमित — प्रणाम पिताजी ! आप लोग कब आये ?

पिता — दोपहर को आ गये थे।

अमित — किस ट्रेन से ? जी टी से ?

पिता — हाँ।

अमित — आपने आने से पहले मुझे क्यों नहीं लिख दिया ? मैं स्टेशन से आपको ले आता।

पिता — कोई बात नहीं। मैंने सोचा कि तुम बहुत व्यस्त आदमी हो। हम ठहरे बेकार आदमी। अपने आप पहुँच जाएँगे। बस में बैठे और चले आये।

अमित — आप टैक्सी में आते माधुरी टैक्सी भाड़ा दे देती।

माता — ये तो, अमित अब सठिया गये हैं

मिट्ठू — 'सठिया क्या होता है पप्पा ? मैंने तो सुना था कि दादाजी को गठिया का रोग है। यह 'सठिया' कौन सा रोग होता है ?

[सब हँसते हैं]

अमित — मिट्ठू, तुम बाहर जाओ। तुम्हारे क्रिकेट के साथी तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।

मिट्ठू — अच्छा पप्पा ! मैं जाता हूँ।

अमित — माधुरी ! मैं पिताजी को घुमाने ले जा रहा हूँ। जब तक हम लौटें तुम तब तक खाना तैयार कर लेना। तुम्हें तो मालूम ही है कि पिताजी शाम को जल्दी खाना खाते हैं। माताजी आप भी घूमने चलिए।

माधुरी — अच्छा लेकिन जरा जल्दी घूम के लौटिए।

माता — नहीं अमित, तुम दोनों चले जाओ। मैं बहू के काम में हाथ बँटा लूँगी।

पिता   किसके यहाँ घूमने चलोगे ?
अमित : जिसके यहाँ आप चलना चाहें । मेहता सा'ब, शर्माजी, सुब्रह्मण्यम् । बोलिए, किसके यहाँ चलेंगे ?
पिता   मुझे किसी के घर में घुसकर बैठ जाना पसन्द नहीं है । घर में बैठे बैठे टाँगे अकड गयी हैं । कहीं घूमने चलना हो तो चलो, किसी के घर नहीं जाना चाहता।
अमित   तभी तो मैंने आपसे कहा कि जहाँ आप जाना चाहें, चलें । आपने पूछा कि किसके यहाँ जाना है तो मैंने नाम गिना दिये ।
पिता   मुझे कहीं नहीं जाना । तुम लोग घूम आओ । मुझे तो स्वाध्याय पसन्द है । कुछ पत्र-पत्रिकाएँ दे दो, पढ़ता रहूँगा ।
[सगीत]
माधुरी   पिताजी के स्वभाव में एकदम कितना परिवर्तन आ गया है । हालाँकि खर्च के मामले में पहले भी बचतशील थे लेकिन जब से रिटायर हुए हैं तब से, कहना चाहिए कि आत्मकेन्द्रित हो गए हैं । माताजी का स्वभाव तो पहले जैसा ही है ।
अमित   पिताजी में तुम्हें जो कुछ परिवर्तन दिखायी दे रहा है, वह रिटायरमेण्ट का स्वाभाविक परिणाम है । असुरक्षा भय, चिन्ता भले ही वे बेबुनियाद हों ऐसी हालत में आदमी को सताते ही हैं ।
माधुरी   मैं दोपहर से ही देख रही हूँ कि पिताजी जरा जरा सी बात पर कड़वे हो उठते हैं । पहले तो हँसकर बात कर भी लेते थे, लेकिन अब चेहरे पर मुस्कराहट तक नहीं आती । जरा मिट्टू को कम्बल उढा देना, आज कुछ सर्दी हो गयी है ।
अमित   लो । तुम भी ओढ लो । आजकल की रातें ठंडी होने लगी हैं ।
माधुरी   देखो ना ! मिट्टू ने अपनी आदत के अनुसार पिताजी से पूछा कि मेरे लिए क्या लाये हैं दादाजी, तो उन्होंने उत्तर दिया है कि हम तो गरीब आदमी हैं तुम अमीर बाप की सन्तान हो । आप ऑफ़िस से आये तो हालचाल पूछने का मौका तो दिया नहीं, अपने रिटायरमेण्ट खर्च आदि का सवाल उठाकर बेकार का तनाव पैदा कर दिया ।

अमित — चलो, छोड़ो। अब सो जाओ। रात बहुत हो गयी।

[संगीत]

पिता — क्यों ? सो गयी क्या ?

माता — नहीं तो।

पिता — क्या सोच रही हो ?

माता — कुछ नहीं।

पिता — वाह ! कभी ऐसा भी हो सकता है ? हरेक आदमी का दिमाग़ जागते में कुछ न कुछ सोचता है और सोते में सपने देखता है।

माता — तुम क्या सोच रहे हो ?

पिता — मैं सोच रहा था कि हमारा यहाँ निभाव होगा कि नहीं।

माता — क्यों ? यह सोचने की क्या जरूरत पड़ गयी ?

पिता — यह सोचना बहुत जरूरी है। सावधानी से देखते रहना है कि कहीं हम लोग इन्हें भार तो नहीं लग रहे हैं।

माता — ये लोग हमें भले ही भार न समझें, लेकिन आप ऐसा जरूर सुचवाकर रहेंगे।

पिता — क्यों ? मैं क्यों ?

माता — जब से यहाँ आए हो तब से अब तक की अपनी करतूतों पर ध्यान दो तो तुम्हें खुद पता चल जायेगा। मिट्टू को तुमने उदास कर दिया। अमित को बिना बात के दुःखी कर दिया। हर बात में तुम शक करने लग जाते हो। तुम ही क्लेश पैदा करते हो।

पिता — हाँ मैं ही सारे झगड़ों की जड़ हूँ। बहू ने आते ही पूछा कि कैसे आए। मिट्टू ने मुझसे कुछ माँगा और मैंने नहीं दिया तो बहू नाराज होकर मिट्टू को डाँटने लगी। वह डाँट वास्तव में मुझपर थी। अमित से जरा मैंने कह दिया कि मैं किसी के घर नहीं जाऊँगा तो उसने दुबारा घूमने के लिए नहीं कहा। इन बातों पर तुम थोड़े ही ध्यान दोगी। अब तो तुम भी मुझे भार समझने लगी हो। हमेशा अपने बहू बेटे के पक्ष में बोलोगी।

माता : हाय राम ! तुम पड़े पड़े ये सब सोच रहे हो ? बहू ने तो वैसे ही मिट्टू को रोका था, गुस्सा कहाँ दिखाया था ? बात का, वह भी बिना बात का, बतगड़ बनाना तो कोई तुमसे सीखे । तुम केवल अपनी सोचते हो और चाहते हो कि सब लोग केवल तुम्हारे बारे में सोचें । न कोई चौका बर्तन करे, न कपड़े धोए, न घर की सफाई करे, न बाजार से सामान लाये, न ऑफिस स्कूल जाए, केवल तुम्हें खुश रखने में लगा रहे । जब तुम घूमना नहीं चाहते, तो अमित क्यों पीछे पड़े ? आखिर वह भी तो ऑफिस से थका हारा आया है, यह भी तुमने सोचा ?

पिता : मैं कब कहता हूँ कि सब लोग मेरी चिन्ता करें । मेरा क्या है, मैं तो रिटायर्ड आदमी हूँ, बेकार हूँ, फ़ालतू हूँ । तुम लोग चाहते होगे कि मैं जल्दी मर मरा जाऊँ । तुम लोगों का भार हल्का हो ।

माता : (तल्खी के साथ) तुम्हारे मुँह से कभी अच्छी बात नहीं निकलती है । कौन कहता है कि तुम फालतू हो, बेकार हो ? यों ही बोले जा रहे हो ?

पिता : कहने की जरूरत क्या है ? प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण नहीं चाहिए । सबका आचरण मैं पढ़ सकता हूँ । भगवान् ने थोड़ी बहुत अक्ल दी है । अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि कौन क्या चाहता है ।

माता : खाक अकल दी है । तुम्हारा तो बुराई खोज निकालने का स्वभाव ही बन गया है। कोई तुम्हारी सुख सुविधा के लिए चाहे जितना कर ले, तुम्हारे आगे उसकी कुछ भी कीमत नहीं है । मैं तो, सच, तंग आ गयी हूँ तुम्हारी इस आदत से ।

पिता : तंग आ गयी हो तो छोड़ दो मुझे । मेरा क्या है । किसी तरह काट लूँगा अपनी जिन्दगी । मैं तुम्हारे भरोसे थोड़े ही जी रहा हूँ ।

माता : तुमसे तो बात करना भी मुश्किल है । न जाने क्या ऊलजलूल बक देते हो । कुछ भला बुरा नहीं सोचते हो, फिर कहते हो भगवान् ने मुझे अकल दी है । सोना हो तो सो जाओ, नहीं सोना है तो सोचते रहो । मेरी नींद मत खराब करो।

[संगीत]

पिता : (स्वगतकथन) अब तो सब मुझे उपेक्षा की निगाह से देखने लगे हैं। यहाँ तक कि मेरी पत्नी भी कहने लगी है कि वह मुझसे तंग आ गयी है। ठीक है, डूबते सूरज को कौन प्रणाम करता है? सारे सम्बन्ध स्वार्थ के हैं। जब तक मैं नौकरी करता था, तब तक मेरी लल्लो चप्पो, अब अपने बेटे की खुशामद करती है। अब बेशर्म होकर कहती है मैं तो तंग आ गयी हूँ तुमसे। (प्रकट) हुँह। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारे बच्चे।

माता किसको भाड़ में भेज रहे हो इस अँधेरी रात में?

पिता किसी को नहीं।

माता तो फिर सोते क्यों नहीं? बड़बड़ा क्यों रहे हो? कम्बल उढ़ा दूँ? कुछ ठंड हो गयी है।

पिता ऐसे ही ठीक है।

[रात की झंकार का संगीत]

[पक्षियों की कलरव-ध्वनि के बाद स्त्री-पुरुषों के बात करने और बच्चों के खेलने-हँसने की ध्वनि]

अमित आइए पिताजी! इधर अच्छी घास है, यहाँ बैठते हैं। मिट्टू! टोकरी में से चादर निकालकर यहाँ बिछा दो और अपनी मम्मी को बुला लाओ न जाने किससे बातें कर रही है।

मिट्टू : अभी बुलाकर लाया।

माता लाओ, मैं चादर बिछा दूँ।

अमित नहीं। आप रहने दीजिए। मैं बिछाए देता हूँ। लीजिए, आप लोग बैठिए, मैं फल लेकर आता हूँ।

माता बड़ा अच्छा पार्क है।

पिता (चुप)

माता देखो, वह बच्चा अपने दादा को घोड़ा बनाए घूम रहा है।

पिता (चुप)

माता : क्या सोच रहे हो?

पिता अमित बहुत खर्चीला है। यहाँ हम लोग बस से भी आ सकते थे, लेकिन यह टैक्सी

माता वह हमारे सुख-आराम के लिए टैक्सी में लाया है, यह थोड़े ही सोचोगे।

पिता ये सब खर्चीले चोंचले दिल्ली में ही हैं, आगरे में टैक्सी नहीं चलती है तो क्या हम लोग कहीं आते जाते नहीं हैं ?

माता तो फिर तुम आगरे में ही रहो, क्यों दिल्ली आ गये ?

पिता मैं कब आ रहा था ? तुम्हीं पीछे पड़ी थीं कि चलो, लड़के के पास चलें। यहाँ अकेले तबीयत नहीं लगती।

माता औं हाँ, तुम्हारी तो बड़ी तबीयत लग रही थी। बार बार कहते थे लड़के की कोई चिट्ठी नहीं आयी। मिट्टू की बड़ी याद आती है।

पिता अच्छा, रहने दो, तुमसे तो बात करना बेकार है।

माता (स्वगतकथन) इतना अहकार भी किस काम का। वैसे अपने आपको बड़ा साधु सन्त दिखाते हैं और घर में सबके सामने अपनी नाक टेढ़ी किये रहते हैं।

माधुरी (निकट आती हुई) माताजी, पार्क के दरवाजे पर जो औरत मुझसे बात कर रही थी, वह पिताजी को जानती है। वह कह रही थी कि उसके ससुर और हमारे पिताजी एक साथ नौकरी करते थे। वह अभी अपने ससुर को यहाँ भेज रही है।

पिता तुमने क्यों बता दिया कि मैं यहाँ आया हुआ हूँ।

माधुरी : (सभीत) उसने आपको पार्क में देखकर अपने आप मुझसे कहा। वह हमारी पड़ोसिन है, इसलिए हम सबको जानती है।

पिता : (स्वगतकथन) बड़ा मूर्ख है, अमित भी। मुझे यहाँ क्यों ले आया ?

मिट्टू दादाजी वह लड़का अपने दादाजी की पीठ पर घूम रहा है, आप भी घोड़ा बनकर मुझे घुमा दीजिए।

पिता (सक्रोध) भाग जा यहाँ से ! गधा कहीं का।

माधुरी जाओ बेटा उधर बच्चों के साथ खेलो।

माता क्या बात है, बच्चे पर क्यों बिगड़ते हो ?

पिता (स्वगतकथन) कहीं यह खन्ना तो नहीं आ रहा ? यह दिल्ली में कहाँ से आ मरा ! (प्रकट) आओ खन्ना साहब ! दिल्ली कब आये ?

खन्ना हल्लो रामकिशोर ! तुम कब आये ?

पिता कल । ने टी से ।

खन्ना नमस्ते, भाभी जी !

माता नमस्ते ।

खन्ना यह क्या आपकी बहू है ?

माता हाँ जी ।

माधुरी नमस्ते जी ।

खन्ना चिरंजीव हो ! फलो फूलो ! सास ससुर की खूब सेवा करो ! तो, आज सब लोग पिकनिक मनाने आये हैं ।

पिता लड़के ने कहा कि आज इतवार है । चलो, पार्क में पिकनिक मना आयें । मेरी तो इच्छा नहीं थी, लेकिन यह जबर्दस्ती ले आया है !

खन्ना जबर्दस्ती ले आया तो उसने कौन सा अपराध कर दिया ? अरे भई, रिटायर्ड आदमी का मनोरंजन यही तो है कि वह अपनी फ़ेमिली में खुशी के मौके पैदा करे, घूमे फिरे ! क्यों भाभी जी ?

माता नहीं भाई साहब, यह तो चाहते हैं कि दिन रात घर में घुसे रहें । नई बहू की तरह घर की चारदीवारी में बन्द रहना चाहते हैं ।

खन्ना (हँसते हुए) आजकल की बहुएँ इतना तो नहीं शर्मातीं ।

माता जितना ये रिटायर होकर शर्माते [illegible] । (हँसती [illegible]

पिता मैंने को सी चोरी की है, जो शर्माऊँ ।

खन्ना चोर भी शर्माते हैं, यह तो आज ही पता चला । (हँसते हैं) रामकिशोर ! मैंने सुना है कि ज से रिटायर हुए हो, तब से सबसे मिलना-जुलना छोड़ दिया है ।

पिता (स्वगतकथन) जरूर अमित ने बताया होगा या बहू ने शिकायत की होगी । क्या जरूरत थी यह सब बताने की ?

खन्ना और एक हम हैं कि जब से रिटायर हुए हैं, बस मिलना जुलना शादी ब्याह और पार्टी पिकनिक में जाना और बढ़ा दिया है ।

माता भाई साहब, इन्हें भी कुछ समझाइए ।

पिता मैं क्या कोई बच्चा हूँ ?

माधुरी लीजिए, आप लोग चाय पीजिए। (आवाज लगाकर) मिट्टू ! इधर आओ, चाय पीओ।

मिट्टू (दूर से) अभी आया।

खन्ना लाओ बहू तुम्हारा नाम क्या है बेटी ?

माधुरी माधुरी।

खन्ना वाह कितना मधुर नाम है माधुरी। चाय के साथ कुछ खिलाओगी या कोरी चाय ही पीनी पड़ेगी ?

[पिता के अतिरिक्त सभी हँसते हैं]

माधुरी (हँसती हुई) क्यों नहीं। बिस्कुट हैं, लीजिए। वे भी आ गये।शायद केले ला रहे हैं।

खन्ना 'वे' यानी तुम्हारे पतिदेव ? रामकिशोर ! ये तुम्हारे साहबजादे हैं?

पिता हाँ, यह अमित है, और अमित ! ये खन्ना साहब हैं। हम दोनों एकसाथ एक ही पोस्ट पर काम करके रिटायर हुए हैं। ये भी आगरे के रहने वाले हैं।

अमित जी हाँ, मैं जानता हूँ। पड़ौसी जो हैं। नमस्ते।

खन्ना नमस्ते बेटा ! आओ। बैठो। निकालो केले।

[पिता के अतिरिक्त सब हँसते हैं।]

खन्ना रामकिशोर भाई, तुम क्यों अरस्तू के अवतार बने बैठे हो ? क्या किसी डॉक्टर ने हँसने से मना कर दिया है ?

माता इनकी हँसी तो इनकी नौकरी के साथ ही चली गई है।

खन्ना बेटा अमित ! तुम इन्हें प्रसन्न रखने की कोशिश किया करो।

अमित जी।

माता इन्हें कोई प्रसन्न नहीं कर सकता। देखिए, पार्क में कितने बूढ़े, बच्चे और नौजवान लोग हैं, सब हँस खेल रहे हैं। हरियाली छायी है। फूल खिले हैं। तितलियाँ उड़ रही हैं। चिड़ियाँ चहक रही हैं। इन सबकी तरफ इनका कोई ध्यान नहीं है। इनको तो बस, यह सदमा बैठ गया है कि लड़का हम सबको टैक्सी में बैठाकर क्यों लाया है ?

फिजूलखर्ची क्यों कर दी ? यह क्यों कह दिया ? यह क्यों कर दिया?

पिता (स्वगतकथन) यह औरत, न जाने क्यों हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ी है। मूर्ख कहीं की । हुँह ।

खन्ना भई रामकिशोर, तुम्हारी यह एप्रोच ठीक नहीं है । तुम चाहते हो कि तुमने सारी जिन्दगी पैदल घसीट ली तो तुम्हारा लड़का भी वैसा ही करे । तुमने हमेशा घर का पका खाना खाया, इसलिए तुम्हारा लड़का होटलों में न खाये । तुम रिटायर हो गये हो तो सब हँसना बन्द कर दें । नहीं भई यह नहीं चलेगा । जिन्दगी एडजस्टमैण्ट से ठीक लाइन पर चलती है । ऐसा नहीं करोगे तो खुद तो दु:खी रहोगे ही, दूसरों को भी दु:खी रखोगे ।

पिता मैं कब कहता हूँ कि सब लोग दु:खी रहें ?

माधुरी लीजिए पिताजी, चाय पीजिए ।

खन्ना कहने से कोई थोड़े ही दु:खी होता है देखने से भी तो होता है । रिटायर तो मैं भी हुआ हूँ, लेकिन स्पोर्ट्समैन्स स्पिरिट से मैंने सारी हालत को सँभाल लिया है। मेरे लड़के, मेरी बहू, मेरे पोते पोतियों से जाकर पूछो उनमें से किसी को भी मुझसे कोई शिकायत हो तो मैं अपनी मूँछे मुड़वा दूँगा । वो बैठे हैं, जाकर पूछ लो । मैं यहीं बैठा हूँ ।

पिता उसकी क्या जरूरत है ? होगा ऐसा ही ।

खन्ना होगा नहीं, है ।

पिता (स्वगतकथन) तुम्हारी बात दूसरी है । तुम मस्त आदमी हो । मुसीबत में भी मुस्कराते हो । दूसरों को पता तक नहीं चल पाता – यहाँ तक कि तुम्हारे बच्चों तक को नहीं कि तुम किसी परेशानी में हो लेकिन मैं । शायद अमित की माँ ठीक ही कहती है कि मैं ही समस्याएँ पैदा कर देता हूँ । समस्याएँ मेरे पास कम आती हैं, मैं स्वयं उनके पास पहुँचने की कोशिश अधिक करता हूँ । मैं क्यों नहीं खन्ना का स्वभाव अपना पाता ? शायद मेरे संस्कार

ही ऐसे हैं। लेकिन संस्कार या स्वभाव बनाना आदमी के अपने हाथ में भी तो होता है - यह मैं क्यों नहीं सोचता ?

मिट्ठू मेरी चाय ?

माधुरी पहले इन्हें नमस्ते करो।

पिता : नमस्ते नहीं, इनके पैर छूओ। ये भी तुम्हारे दादा जी हैं।

मिट्ठू परनाम दादा जी !

खन्ना जिओ बेटा, सुखी रहो। किस क्लास में पढ़ते हो ?

मिट्ठू चौथी में। हमेशा फर्स्ट आता हूँ।

खन्ना अच्छा ! लो, इनाम में एक टाफ़ी खाओ।

मिट्ठू थैंक यू।

माता : आप अपनी जेब में हमेशा टाफ़ियाँ भरे रहते हैं क्या ?

खन्ना हाँ, बहू के बच्चे जब कभी पिट जाते हैं तो वे मेरी गोद में आ जाते हैं और मेरी टाफियाँ उनके रोने पर ब्रेक लगाती है।

[सब हँसते हैं]

पिता (स्वगतकथन) मैं मिट्ठू के लिए कुछ नहीं लाया, यह मेरी बड़ी गलती है। उसे एक रुपया दे देता, तो मेरा क्या घट जाता ? बेकार बच्चे का दिल दुखाया और दूसरों की नजर में गिरा।

अमित चाचा जी, खाना खाइए।

खन्ना नहीं बेटा, मेरा खाना मेरी बहू लायी है।

माधुरी क्या कोई स्पेशल चीज है ?

खन्ना हां, खीर है। चलो रामकिशोर तुम्हें भी तो खीर बहुत अच्छी लगती है।

माता : तभी ये ऑफिस से लौटकर कहते थे कि खन्ना साहब की बहू खीर बहुत अच्छी बनाती है !

पिता (स्वगतकथन) मेरी बहू क्या खन्ना की बहू से कम है ? मेरी कितनी चिन्ता करती है। अमित मेरी प्रसन्नता के लिए क्या क्या नहीं करता भाड़ में जाय मेरा शक्की स्वभाव।

खन्ना तो आइए, आप सब उधर ही चलिए। आप हमारी बहू के हाथ की खीर खाइए और हम आपकी बहू के हाथ का खाना खाएँगे। क्यों रामकिशोर, क्या ख्याल है?

पिता ख्याल तो नेक है।

[सब हँसते हैं]

खन्ना और शाम को बस से घर वापस चलेंगे।

अमित बस से क्यों टैक्सी से चलेंगे। बस में आप लोगों को तकलीफ होगी।

पिता हाँ टैक्सी में आराम रहता है।

खन्ना बिलकुल, बिलकुल। यही तो मैं तुमसे सुनना चाहता था। मुझे बड़ी खुशी हुई तुम्हारे मुँह से ऐसा सुनकर।

[संगीत]

दीवारें

लता	
पिता	
माँ	
सोमनाथ	लता का प्रेमी

[कमरा। एक आरामकुर्सी पर आँखें मूँदे लता के पिता कुछ सोच रहे हैं। दोनों हाथों की उंगलियाँ एक-दूसरे में फँसाकर सिर के नीचे दबा रखी हैं और पैर फैलाकर एक छोटी मेज पर टिका रखे हैं। सोफ़े पर बैठी लता की माँ स्वेटर बुन रही हैं। एक ओर बिछे दीवान पर बैठी लता अपने पिता को देख रही है, शायद उनकी आँखें खुलने की प्रतीक्षा में है। उसकी आँखें पिता की आँखों और कलाई पर बँधी घड़ी के बीच भटक रही हैं]

लता (पिता की आँखें खुलने पर) पिताजी इन दिनों मुझे कुछ ऐसा लगता है कि आपको कोई बड़ी चिन्ता सता रही है। न आप पहले की तरह हँसते हैं, न मुस्कराकर बात करते हैं, और कभी कभी तो ऐसा होता है कि मैं या माता जी आपसे कुछ कहते हैं और आप कुछ सोचते ही रहते हैं, जवाब नहीं देते।

पिता क्या बताऊँ बेटी। बस, कुछ ऐसी ही बातें हैं। तुझे बताने से क्या लाभ?

[पैर नीचे टिकाकर सीधे बैठ जाते हैं]

लता : हो सकता है, मैं आपकी चिन्ता दूर करने में कुछ सहायक हो सकूँ।

पिता नहीं बेटा नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है।

लता देखो ना माँ, पिताजी हर समय कुछ न कुछ सोचते ही रहते हैं। खोये खोये से रहते हैं। पता नहीं ऑफ़िस में कैसे काम करते हैं

रात में तो मैं इन्हें करवटें बदलते देखती हूँ। हर समय चिन्ता जैसे घुन की तरह इन्हें खाये जा रही है। मैं कारण पूछती हूँ तो कह देते हैं कि तुझे बताने से क्या लाभ। अब मैं बच्ची थोड़े ही हूँ, एम०एस-सी० में पढ़ती हूँ।

[मसनद का सहारा लेते हैं]

माँ — तू बच्ची होती तो चिंता किस बात की थी। बड़ी हो गयी है, इसी बात से ही तो ये परेशान हैं।

लता — (विराम के बाद) क्या मतलब ?

माँ — तेरी शादी की चिंता है इन्हें।

लता — क्या ? (सीधी बैठ जाती है)

पिता — अरे, इस बेचारी को क्यों परेशान करती हो। यह बड़ी हो गयी है तो इसके लिए यह क्या करे ? यह तो एक दिन होना ही था। शादी ब्याह की चिन्ता तो हमें करनी है, इसे नहीं।

लता — पिताजी, इतनी जल्दी क्या है ? अभी तो मुझे एम०एस सी० करनी है, नौकरी की तलाश करनी है, अपने पैरों पर खड़ा होना है।

पिता — यह सब भी हो जाएगा। आजकल अच्छे लड़के आसानी से नहीं मिलते। मिलते हैं तो उनके बापों के मुँह फटे हुए हैं। कोई कम पढ़ा लिखा है तो कोई व्यसनी। किसी का परिवार अच्छा नहीं है तो कोई कुरूप होता है।

लता — नहीं पिताजी, मुझे कोई जल्दी नहीं है। आप मेरी चिन्ता छोड़ दीजिए। मुझे अपना भला बुरा स्वयं सोचने दीजिए।

माँ — तुझे सोचने से रोक कौन रहा है ? तेरे भले के लिए ही तो ये परेशान हैं।

लता — नहीं माँ, मुझे ऐसी भलाई नहीं चाहिए, जिससे किसी को परेशानी हो।

माँ — तो कैसी भलाई चाहिए ? आखिर तू चाहती क्या है ?

लता — मैं चाहती हूँ कि मुझे पढ़ाई में ध्यान लगाने दीजिए। अच्छी डिवीजन के बिना नौकरी नहीं मिलती और डिवीजन पाने के लिए दिमाग की शान्ति चाहिए।

पिता तू अपनी पढ़ाई करती रह। मैं अपना काम कर रहा हूँ। तू अपना काम कर।

लता नहीं पिताजी। यह मेरे कैरियर का सवाल है। आप मेरी शादी की चिन्ता मत कीजिए। मैं कुछ साल तक शादी नहीं करना चाहती।

माँ हाय राम ! कैसी कैंची की तरह जबान लड़ा रही है। शरम तो नहीं आती।

लता शर्म किस बात की ?

माँ (चिढ़ाने के स्वर में) शरम किस बात की।

लता (थोड़ा रुककर) मुझे अपना भविष्य बनाना है और आप लोगों को अपना भार उतारने की पड़ी है। आप निश्चिन्त रहिए। मैं आप लोगों पर भार बनकर नहीं रहना चाहती। जैसे ही पढ़ाई पूरी कर लूँगी, कोई नौकरी तलाश लूँगी और अगर शादी करनी होगी, तो

माँ शादी कर लेगी। देखा तुमने। तुमने ही इसे सिर पर चढ़ा रखा है। कल की छोकरी, आज की दादी। कैसा जमाना आ गया है। शरम हया नाम को भी नहीं है।

पिता छोड़ो भी तुम बेकार जमाने को कोसने बैठ जाती हो। आख़िर वह यूनीवर्सिटी में पढ़ती है। बीस तरह के लड़के लड़कियों से मिलती है। अख़बार किताबें पढ़ती है। आजकल लड़के-लड़की का फ़र्क ख़त्म होता जा रहा है। यही बात तुम्हारे किसी बेटे ने कही होती, तो तुमको शायद इतना बुरा न लगता। ठीक है बेटी तुम जैसा चाहोगी वैसा ही होगा।

माँ तुम भी कैसी बातें करते हो जी। रवि लड़का है, कुछ गड़बड़ काम करे तो दुनिया कहेगी कोई बात नहीं, लड़का है और अगर यह कुछ ऐसी वैसी बात कर बैठे तो जिन्दगीभर के लिए दाग़ लग जाएगा।

पिता (कुछ चिढ़कर) तुम चुप रहो। तुम्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि किस समय क्या बात कहनी चाहिए। लता, तुम जैसा चाहोगी, वैसा ही

होगा। बेटी के जवान हो जाने पर पिता का चिन्तातुर होना नेचुरल है स्वाभाविक है। तुम अपनी पढ़ाई में दिमाग लगाओ। कोई अच्छा लड़का मिल जाएगा तो मैं तुमसे पूछकर ही ब्याह करूँगा। तुम्हें पसन्द आये तो करना। न आये तो मत करना।

लता पिताजी ।

पिता क्या ? (विराम) क्या बात है ?

लता मैं मैं मैं

पिता हाँ, हाँ, कहो।

लता मेरा परिचय एक से है।

माँ क्या ?

पिता तुम चुप रहो जी। हाँ तो फिर ?

लता मैं उन्हें दो साल से जानती हूँ। बहुत अच्छे हैं ?

पिता कौन ? तुम्हारे प्रोफ़ेसर ?

लता नहीं। वो

पिता साफ़ साफ़ कहो ना। हिचकिचा क्यों रही हो ?

लता मैं डरती हूँ कि आप मेरी पसन्द का विरोध करेंगे।

पिता क्या किसी से ? कौन है वह ?

माँ मैं न कहती थी ।

पिता तुम जरूर हर बात में टाँग अड़ाओगी। कभी तो अपने मुँह को बन्द रखा करो। हाँ लता, कौन है वो ?

लता उनसे मेरी मुलाकात अपने प्रोफ़ेसर गांगुली के घर हुई थी। वो भाभा इन्स्टीट्यूट में सीनियर रिसर्च आफ़ीसर हैं। हम दोनों दो साल से एक दूसरे को जानते हैं। उनका कहना है कि मैं एम०एस सी० पूरी कर लूँ, फर्स्ट क्लास ले आऊँ वो बम्बई में कोई अच्छी नौकरी मिल सकती है।

माँ वो सुन । (अपने पति से) फिर तुम कहोगे कि मैं बहुत बोलती हूँ। इससे कुछ नहीं कहोगे, जो जिससे जी में आया उसी से गाँठ जोड़ने को तैयार बैठी है।

पिता — तो क्या बुरा कर रही है। इतना अच्छा लड़का इसको मिल रहा है कि मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था। मैं ढूँढता कोई आफ़िस का कलमघिस्सू। सारी जिन्दगी 10 बजे से 5 बजे के बीच घर से आफ़िस के बीच पैण्डुलम बने घूमना और घर का खर्च चलाने के लिए ओवर टाइम काम करना।

माँ — जिसके घर का पता, न जात का। धरम का पता, न ईमान का। जिससे जरा नैन मटक्का हुआ, उससे ब्याह रचा लिया। मुझे तो नहीं पसन्द यह सब। आखिर जात-गोत-वंस भी तो देखना होता है।

पिता — हाँ, लता। कुछ इसका भी पता किया?

लता — पिताजी, आजकल कौन देखता है इन चीजों को और क्या जरूरत है इन बातों की।

पिता — फिर भी दुनियादारी के लिए यह जरूरी है। समाज में रहना है तो समाज की परंपराओं को मानना ही पड़ेगा। क्या जाति है उसकी?

लता — यह आप न पूछें तो अच्छा रहे।

माँ — (स्वेटर एक ओर पटककर) बताने में क्या हर्ज है? तेरे बाप को सब कुछ तो पसन्द आ गया है, अब जाति भी पसन्द करा दे।

पिता — (क्रुद्ध दृष्टि के साथ) तुम्हारी तलवार तो हर समय म्यान से बाहर रहती है।

लता — उनके पिता व्यापारी हैं।

पिता — यानी कि बनिया हैं?

लता — नहीं, खत्री हैं।

[स्तब्धता]

पिता — तू ब्राह्मण है, वह खत्री है यह शादी जरा मुश्किल है बेटी और फिर हम लोग यू पी के हैं और वह पंजाबी हैं।

लता — मैं जानती थी पिताजी कि आप थोड़े प्रगतिशील थोड़े रूढ़िवादी हैं। उनसे परिचय की घनिष्ठता के साथ साथ मेरा भय भी बढ़ता रहा था कि आप केवल जाति के आधार पर मेरे फ़ैसले का विरोध कर सकते हैं। प्रांत का तो मैंने सोचा ही नहीं था कि यह समस्या भी सामने आ सकती है।

पिता — यह तो देखना ही पड़ता है लता ! समाज की मर्यादाओं को मानना ही पड़ता है। आखिर बीसियों बातों में हमें समाज का सहारा लेना होता है।

लता — आपने समाज की मर्यादाओं को मानकर ही भैया की शादी एक ऊँचे ब्राह्मण कुल में की थी। माँ बड़ी तलाश के बाद ऊँचे जाति गोत्र वंश की बहू लायी थी इस घर में। परिणाम क्या हुआ? भाभी और भैया में कभी बनी? न जाने कितने लोग भाभी के मित्र थे जो शादी के बाद भी मित्र बने रहे और एक दिन एक ठाकुर के साथ वह भाग गयीं। आप तो जानते ही [illegible] पिताजी कि गुण तो व्यक्ति में होते हैं, जाति गोत्र या वंश में नहीं। यही बात प्रेम के मामले में कही जा सकती है। वो पंजाबी हैं तो क्या हुआ? उनकी तारीफ मैं खुद क्या करूँ आप जाकर मेरे प्रोफ़ेसर गांगुली से पूछ लीजिए। मेरी बात को आप शायद भावुकता मानें।

पिता — यह तो ठीक है लेकिन फिर भी

लता — अब मैं आपको क्या समझाऊँ पिताजी ! तर्क दूँगी तो आप सोचेंगे कि मैं अपनी बात को सही सिद्ध करने की कोशिश कर रही हूँ। लेकिन मैं कोशिश नहीं करना चाहती हूँ केवल कहना चाहती हूँ कि जिन बातों ने आदमी आदमी के बीच दीवारें खड़ी कर दी हैं उन्हें तोड़ने की बहुत जरूरत है आज।

पिता — यह सब पढ़ तो मैंने भी रखा है लेकिन हम लोग परंपराओं से इतने अधिक जुड़ गये हैं कि   ठीक है जो तुम ठीक समझती हो वही मुझे मंजूर है।

लता — (गद्गद् होकर खड़ी हो जाती है) पिताजी, आप कितने अच्छे हैं।

माँ — यानी कि तुम अपनी इस लाडली की बातों में आ गये। शास्त्रों, पुराणों में जो लिखा है वह झूठ और जो तुम्हारी बेटी कहती है, वह सच।

[खड़ी हो जाती है]

पिता – मेरा ख्याल है कि तुम भी अब पढ़ाई लिखाई शुरू कर दो ताकि तुम्हारे दिमाग के बन्द दरवाजे खुलें और उसमें कुछ रोशनी घुसे, कुछ ताजी हवा जाये। जाओ, मेरे लिए एक गिलास पानी ले आओ।

माँ ताजी हवा तुम्हें ही मुबारक हो।

[असंतुष्ट-सी गर्दन मटकाकर अंदर जाती हैं, तभी बाहर की घंटी बजती है। पिता उत्सुक दृष्टि से लता को देखते हैं और लता अपनी कलाई घड़ी को।]

पिता जा बेटी, देख तो कौन आया है !

लता वो ही होंगे। पाँच बजे आकर आपसे बात करने का वायदा किया था।

पिता (खड़े होकर) अरे तो जा बुलाकर ला। मैं भी देखूं, कैसे हैं तेरे 'वो' (लता सकुचित सी जाती है ! पिता अपने कपड़े ठीक करते हैं। कुछ बिखरी चीजों को तरतीब देते हैं। माँ पानी का गिलास लेकर आती है) देखो, लता जिस लड़के के बारे में बात कर रही थी ना, वह आया है।

माँ तो मैं क्या करूँ ?

पिता (झल्लाये स्वर में) करना क्या है जरा चाय का पानी रख दो और तुम अपना रूप ठीक बना आओ, फिर बैठो और लड़के को देख समझ लो। (पानी लेकर पी लेते हैं)

माँ (गिलास लेकर अंदर जाती हुई) रूप तुम्हारी बेटी बनायेगी या मैं बनाऊँगी ?

पिता (बुदबुदाते हैं) हाँ, तुम्हें रूप बनाने की क्या जरूरत है। तुम्हारी भौंहें और आंखें हमेशा धनुषबाण सी रहती हैं और जुबान कटारी की तरह चलती हैं। (तभी लता और सोमनाथ को आया देखकर मुस्कराते हैं) आओ बेटे ! बैठो। (सोमनाथ से हाथ मिलाते हैं और कन्धे पर हाथ रखकर सोफे पर बैठाते हैं। स्वयं आरामकुर्सी पर बैठ जाते हैं। पिता सोमनाथ और लता कुछ क्षण एक दूसरे की

ओर देखते हैं कि कौन बात शुरू करे) मकान ढूँढने में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई बेटा क्या नाम है तुम्हारा ?

सोमनाथ सोमनाथ !

पिता बहुत सुन्दर !

सोमनाथ लता ने पता ठिकाना इतनी पक्की तरह और नक्शा बनाकर समझा दिया था कि भूलने की गुंजाइश ही नहीं थी। शायद यह जासूसी उपन्यास पढ़ने की शौकीन है।

[सब ठहाका लगाते हैं। लता अन्दर चली जाती है]

पिता (बात का छोर ढूँढकर) कहाँ रहते हो ?

सोमनाथ जी, मैं तो भाभा इंस्टीट्यूट के पास ही एक फ्लैट में रहता हूँ। माता-पिता अम्बाला में रहते हैं।

पिता वैरी गुड। (भीतर की ओर) अरे लता की माँ ! तुम भी आकर यहाँ बैठो ना। क्या कर रही हो ?

माँ (भीतर से) अभी आई। (सामने आती है तो सजी सँवरी दीखती है)

सोमनाथ (खड़ा होकर) नमस्ते माताजी !

माँ (कनखियों से सोमनाथ को देखकर) नमस्ते (दीवान पर बैठ जाती है)

पिता (पत्नी का चेहरा पढ़ते हुए, सोमनाथ से) इंस्टीट्यूट में कब से हो ?

सोमनाथ लता ने आपको कुछ नहीं बताया ?

पिता उसने कहाँ बताया है। उसने तो तुम्हारे बारे में ही अभी, तुम्हारे आने से थोड़ा पहले ही बताया है। (हँसते हैं। सोमनाथ मुस्कराता है और माँ सोमनाथ को गंभीरतापूर्वक देखती रहती है। पत्नी से) लता कहाँ गई ? क्या कर रही है ? सोम के आने से पहले तो इतना चपड़चपड़ कर रही थी कि । मुझे नहीं पता था कि यह इतनी शर्मीली भी है। (सोमनाथ से) तुम दोनों एक-दूसरे को कब से जानते हो ?

सोमनाथ — प्रोफ़ेसर गांगुली के घर चार पाँच महीने पहले हम दोनों मिले थे। उनका स्टूडैन्ट रह चुका हूँ और लता उनकी स्टूडैन्ट है।

पिता — (पीठ टिकाकर) उनको तुम दोनों के इस नये रिश्ते के बारे में जानकारी है?

सोमनाथ — जी हाँ। वह हमें आपके बाद आशीर्वाद देने को तैयार हैं। वैसे उन्होंने शुभकामना प्रकट कर दी है।

माँ — तभी लता प्रोफ़ेसर गांगुली से इनके बारे में पूछ लेने को कह रही थी।

पिता — अरे हाँ, शायद वह सब कुछ हमें बताने में सकुचा रही थी, इसलिए हमें प्रोफ़ेसर गांगुली के पास तुम्हारे बारे में बात करने के लिए भेज रही थी। चलो, अब तुम ही आ गये हो तो हमारे जाने की जरूरत नहीं रही। (भीतर की ओर) अरे लता! जल्दी से चाय लाओ ना, बेटे।

लता — (भीतर से) अभी लाई, पिताजी!

[ट्रे में चाय का सामान लाती है और मेज पर रखकर माँ के पास बैठ जाती है। एक कप में चाय बनाकर पिता को देती है। सब चाय का बनना और देना देखते रहते हैं। इससे लता का संकोच बढ़ता जाता है, जिससे हाथ काँप उठता है और एक चम्मच चीनी चाय में डालने की बजाय ट्रे में फैला देती है। पिता और सोमनाथ लता की ओर देखकर हँस पड़ते हैं।]

माँ — (चम्मच लता के हाथ से लेकर) ला, मैं चाय बना दूँ।

लता — नहीं माँ, मैं बनाये देती हूँ।

माँ — (चाय तैयार करके सोमनाथ को देती हुई, लता से) तू बात कर।

[कुछ क्षण स्तब्धता। स्तब्धता तोड़ने के लिए पिता और सोमनाथ चाय सुड़कते हैं।]

पिता — लता, अभी तो तू सोमनाथ के बारे में इतना चहक रही थी अब क्या हो गया?

लता — वह तो मैं इनके स्वागत का बैकग्राउण्ड तैयार कर रही थी।

पिता (हँसकर) अच्छा ! (सोमनाथ से) देखा, कितनी चतुर है हमारी बेटी ! तुम्हारे आने से पहले बारबार घड़ी देख रही थी, लेकिन यह नहीं बताया कि तुम्हारा इन्तजार कर रही है। पहले का रही थी कि मैं शादी नहीं करना चाहती लेकिन जैसे ही हवा को अपने अनुकूल बहते देखा, झट से तुम्हारी प्रशंसा के पुल बाँधने लगी ! (चाय सुड़ककर) भई, मैं तो कम से कम लता की चतुराई, समझदारी और चुनाव का प्रशंसक हो गया हूं। (पत्नी से) कहो, तुम्हारा क्या विचार है ?

माँ (अनिर्णय की मुद्रा में) मैं क्या बताऊँ ? (सोमनाथ, लता और पति पर दृष्टि घुमाकर) आप सब समझदार हैं।

पिता (चाय का प्याला मेज पर रखते हुए) भई वाह, लगता है, तुमने अपने दरवाजे खोल लिए, दीवारें ढहा दीं और ताजी हवा घुसा ली।
[माँ नीचे देखती हैं]

सोमनाथ कैसे दरवाजे ? कैसी दीवारें ? कैसी हवा ?
[लता और हँस पड़ते है ।]

पिता कुछ नहीं। ये हमारी घरेलू बातें हैं। अब बेटा, ऐसा करो ! अपने माता पिता का पता बताओ। तुम और लता भले ही आपस में फ़ैसला कर लो हमें तो तुम्हारे माता पिता से शुरूआत करनी पड़ेगी।

सोमनाथ (खड़ा होकर हाथ जोड़ता है) जी। (जेब से काग़ज निकाल कर पिता को देता हुआ) यह लीजिए। मैं पहले से ही लिख लाया था।
[सब खड़े हो जाते हैं पिता हँसते हुए, माँ सबकी ओर देखती हुई और लता माँ से चिपटती हुई ।]

न्याय

प्रौढ़	युवक का पिता
युवक	प्रौढ़ का पुत्र
किसान	प्रौढ़ का खेत कर्मचारी
टोपीधारी	मंत्री

[गाँव के मकान की एक बैठक। एक कुर्सी बायीं दीवार से लगी मेज के पास। मेज पर कुछ पुस्तकें और एक पेड। एक कुर्सी बैठक के बीच में। दायीं दीवार के साथ बिछी एक चारपाई। सामने की दीवार में खूँटियाँ लगी हैं। एक खूँटी पर पैंट-कमीज, दूसरी खूँटी पर कुर्ता-धोती। चारपाई पर एक प्रौढ़ और मेजवाली कुर्सी पर एक युवक बैठे [redacted]

प्रौढ़ (बीड़ी सुलगाकर) तो तुमने कसम खा रखी है कि रिश्वत नहीं लोगे?

युवक : जी।

प्रौढ़ और यह भी सोच रखा है कि किसी को रिश्वत नहीं लेने दोगे?

युवक जी।

प्रौढ़ फिर तो तुम कर चुके नौकरी। या तो किसी जमाने में एक सत्यवादी हरिश्चन्द्र हुए थे या इस जमाने में तुम हुए हो। लेकिन बेटा अगर आज के जमाने में हरिश्चन्द्र पैदा हुए होते तो उनको साँस लेना भी दूभर हो जाता आत्महत्या कर लेते वे।

युवक मैं हरिश्चन्द्र होने या बनने का दावा नहीं करता लेकिन मेरे कुछ आदर्श हैं, लक्ष्य हैं जिन्हें मैं पाना चाहता हूँ। बस।

प्रौढ़

तो ठीक है। जिन्दगी में कुछ ठोकरें खाने के बाद ही ठोकरों से बचना सीख जाओगे। अगर मुझे पता होता कि पढ़ लिखकर ये सब्जबाग सीखोगे तो तुम्हें पढ़ने के लिए कभी शहर न भेजता।

[एक किसान का प्रवेश]

किसान जुहार ठाकुर साब !

[प्रौढ़ किसान की ओर ध्यान नहीं देता]

युवक (कुर्सी की ओर संकेत कर) आओ प्यारेलाल, बैठो।

किसान (गिड़गिड़ाता सा हाथ जोड़कर) अरे माईबाप, आप ठाकुर हो, मैं चमार। आपके बराबर कैसे बैठ सकता हूँ ? हम तो मिट्टी मिट्टी में ही अच्छे लगते हैं। (फर्श पर बैठ जाता है)

युवक अब वह पुराना जमाना नहीं रहा प्यारेलाल ! ऊँच नीच का जमाना गया। तुम लोग कुछ तो आत्मसम्मान सीखो।

प्रौढ़ (कुछ क्रोध से) ये पाठ तुम अपने शहर में ही पढ़ाना। शहरों की गन्दगी गाँवों में मत फैलाओ।

युवक (साश्चर्य) इसे आप गन्दगी कहते हैं। आदमी को आदमी समझना गन्दगी है ? सबको बराबर समझना गन्दगी है ? आप तो यह मानते हैं कि सब मनुष्यों को ईश्वर ने बनाया है, तो फिर एक ही ईश्वर की सन्तान ऊँची नीची कैसे ?

प्रौढ़ हर समय तर्क करना ठीक नहीं है। तुम नहीं समझोगे ये सब बातें। छोड़ो। क्यों प्यारेलाल ?

किसान (हाथ जोड़कर) जी मालिक ! हम तो अनपढ़ हैं, इतनी ऊँची बातें हम क्या जानें ? सब अपने कर्मों का फल भोगे हैं हजूर। छोटे ठाकुर शहर में बड़े हुए हैं सो वहीं की सी बातें भी करे हैं।

युवक कोई बात शहर या गाँव की नहीं होती प्यारेलाल ! समझदारी की बात किसी जाति में नहीं, बुद्धि में जन्म लेती है। तुम लोग।

प्रौढ़ : (क्रोध से) या तो तू अपनी बकवास बन्द कर, नहीं तो फिर मैं ही जाता हूँ यहाँ से।

[चारपाई से पैर लटकाकर चप्पल पहनने लगता है । किसान हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है । युवक उठकर चला जाता है । प्रौढ़ बैठा रहता है]

किसान जाने दो ठाकुर सा'ब । जवान आदमी को अपनी जबान पर काबू नहीं होवे है ।

प्रौढ़ (युवक के जाने की दिशा की ओर देखता हुआ) मैंने इस लडके की पढ़ाई लिखाई पर कितना रुपया खर्च किया है ।

किसान अजी, पानी की तरह ।

प्रौढ़ जो माँगा, सो दिया । जो कहा, सो माना ।

किसान वह तो है ही ।

प्रौढ़ और आज यही मेरी हर बात का विरोध करने पर तुला हुआ है ।

किसान जमाना बड़ा खराब आ गया है, हजूर ।

प्रौढ़ जमाना ... हुँह ... कहता है-जमाना तो आदमियों के हाथों से बनाया बिगाड़ा जाता है ।

किसान सच कहते हैं हजूर ।

प्रौढ़ (तमतमाकर) कौन सच कहता है ? क्या सच कहता है ?

किसान (कुछ भूल हुई जानकर थरथराने लगता है) कुछ नहीं ... कोई नहीं ... मैंने नहीं कहा हजूर ... ।

[एक कुर्ता-धोती-टोपीधारी का प्रवेश । प्रौढ़ हाथ जोड़ता हुआ खड़ा होता है । दोनों के चेहरे पर औपचारिक मुस्कराहट]

प्रौढ़ आइए मंत्री जी । नमस्कार ।

टोपीधारी नमस्कार । (एक कुर्सी पर बैठ जाता है)

प्रौढ़ (खाट पर बैठता हुआ) आज आप ? अचानक ?

टोपीधारी हाँ, इधर का दौरा बनाकर चला आया हूँ । भतीजी की शादी है ना ।

प्रौढ़ दौरा बनाकर ?

टोपीधारी हाँ और क्या । आजकल अधिवेशन चल रहा है । मुख्यमंत्री जी ने कहा कि कहीं बाहर मत जाना, सो इधर के साम्प्रदायिक दंगों के

कारण जानने के बहाने दौरा बना लिया। परसों शादी है, उसके बाद वापस चला जाऊँगा।

प्रौढ़ — इधर तो कोई दंगा नहीं हुआ है। और फिर, इस इलाके में इतने मुसलमान वोटर्स भी नहीं है कि कोई उन्हें भड़काकर अपना उल्लू सीधा करना चाहे।

टोपीधारी — यह तो ठीक है। मैंने इसीलिए तो कहा कि मैं बहाना बनाकर आया हूँ।

[कुछ क्षण स्तब्धता]

प्रौढ़ — मेरे योग्य कोई सेवा ?

टोपीधारी — हाँ मुझे आपके लड़के सत्यदेव के बारे में कुछ बात करनी है।

प्रौढ़ — (उत्सुकता के साथ) क्या ? उससे कोई गड़बड़ी हो गयी क्या ?

टोपीधारी — आजकल बहुत ईमानदारी भी बड़ी गड़बड़ी पैदा कर देती है।

[प्यारेलाल की ओर देखता है। प्रौढ़ संकेत समझ जाता है]

प्रौढ़ — क्या सत्यदेव को बुलवाऊँ ?

टोपीधारी — हाँ उसको कुछ समझाना जरूरी है।

प्रौढ़ — (प्यारेलाल से) जा, सत्यदेव को बुला ला।

[प्यारेलाल हाथ जोड़कर चला जाता है]

टोपीधारी : आप तो जानते ही हैं कि आजकल सब काम पैसे के लिए किये जाते हैं। पैसे के लिए हम लोग चुनाव लड़ते हैं। आप लोगों को डाकुओं को पुलिस को खुश रखते हैं। प्रचार के लिए जीपें लेनी होती हैं, इसलिए पैसेवालों, विकास अधिकारी, तहसीलदार और दूसरे सरकारी अफसरों को खुश रखते हैं तब कहीं जाकर चुनाव जीत पाते हैं।

प्रौढ़ — जी हाँ यह सब तो करना ही पड़ता है।

टोपीधारी — आपका लड़का सत्यदेव इतने दिन बेरोजगार बैठा रहा। आपके कहने पर मैंने आपसे बिना कुछ लिये उसे विकास प्राधिकरण में इंजीनियर लगवा दिया। और कोई होता तो इस नौकरी के लिए पाँच दस हजार से कम न लेता और उससे कई चक्कर लगवाता।

लेकिन आप अपने आदमी हैं यह सोचकर मैंने आपका काम मुफ्त में कर दिया।

प्रौढ़ वह तो आपकी बड़ी कृपादृष्टि है मुझपर। मैं सत्यदेव को कई बार समझा चुका हूँ कि आदमी को अपना हित पहले देखना चाहिए, पर यह तो समाज और राष्ट्र की बात ज्यादा करता है, अपनी कम।

टोपीधारी भैया, समाज और राष्ट्र की बात हम क्या कम करते हैं? समाज और राष्ट्र अलग चीज है, अपना स्वार्थ अलग चीज। अपना स्वार्थ साधते हुए अगर समाज और राष्ट्र की सेवा भी होती चले तो इससे अच्छी और कौन सी बात हो सकती है?

प्रौढ़ यही तो मैं उसे समझाता रहता हूँ, लेकिन वह है कि चिकने घड़े की तरह मेरी एक बात सहन करने को तैयार नहीं है।

टोपीधारी अभी गर्म खून है। थोड़े दिनों में

प्रौढ़ उसने क्या गड़बड़ी की है?

टोपीधारी अरे, गड़बड़ी तो नहीं की, लेकिन वह होनेवाली गड़बड़ी को रोकना चाहता है। इससे बड़ी गड़बड़ी हो गयी है। विकास प्राधिकरण के द्वारा मिडिल और लो इन्कम ग्रुप के मकान बनाने का प्लान मैंने तैयार करवाया है। और सच्ची बात तो यह है कि मेरा एक भानजा और एक भतीजा खाली बैठे बैठे रोटी तोड़ रहे थे, सो उन मकानों को बनाने का ठेका मैंने उनको दिलवा दिया है। अब आपसे क्या छिपाना। आपका सत्यदेव और मेरे भानजे भतीजे में कोई फ़र्क थोड़े ही है, इसलिए मैं आपसे खुलकर बात कर सकता हूँ। अगर उन मकानों को बनाने में ईमानदारी बरती जाय, तो ठेकेदारों का दीवाला ही पिट जायेगा क्योंकि आजकल हर चीज ब्लैक में मिलती है। मकान बनाने के लिए बीसियों चीजें चाहिएँ। उनको पाने के लिए बीसियों दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। दफ्तरों से काम करवाने के लिए रुपया खर्च करना पड़ता है। इतना सारा खर्च करने के लिए पैसा चाहिए, जो मकानों में कम या घटिया सामान लगाये बगैर निकल नहीं सकता। यहीं आपका लड़का रोड़ा अटका

रहा है। खाना पीना तो दूर, वह इस घपले पर पर्दा डालने की बजाय मुख्यमन्त्री जी के पास शिकायतें लिखकर भेज रहा है। मुख्यमन्त्री जी कह रहे थे कि इस लड़के को समझाकर आओ वर्ना तुम्हारी और मेरी बड़ी बदनामी होगी। मुख्यमन्त्री जी का लड़का भी तो मेरी स्कीम में इंजीनियर लगा हुआ है। वह बहुत बढ़िया काम कर रहा है। हमारे सब बिलों और कागजों पर आँख मूँद कर दस्तखत कर देता है।

प्रौढ़ (पछतावे के स्वर में) पता नहीं, मेरे घर में यह नालायक कहाँ से पैदा हो गया है।

[किसान के साथ युवक का प्रवेश। युवक टोपीधारी को अभिवादन कर खड़ा रहता है]

टोपीधारी (खाली कुर्सी की ओर संकेत कर) आओ बेटा बैठो।

[युवक बैठ जाता है]

प्रौढ़ कहो प्यारेलाल, तुम्हें कुछ काम है?

किसान जी हुजूर।

प्रौढ़ क्या?

किसान बात यह है मालिक कि मेरा लड़का बिजली डिपार्टमेंट में लैनमैन लगा हुआ था।

प्रौढ़ मुझे मालूम है। धोखाधड़ी के आरोप में उसे नौकरी से निकाल दिया गया है।

किसान (झेंपी हँसी के साथ) सही बात है हुजूर लेकिन इन मन्त्री जी का गाँव में आना सुनकर मैं आपके पास चला आया।

प्रौढ़ तो मैं क्या कर सकता हूँ? उसने जैसा किया, वैसा भर रहा है। कई गाँवों के घरों और ट्यूब वैलों के मीटरों में गड़बड़ी करके हजारों रुपये कमाता रहा। सरकार को धोखा देता रहा। जब पाप का घड़ा भर जाता है, तब ऐसा ही होता है। जाओ मैं ऐसे आदमी के बारे में कुछ नहीं कह सकता।

किसान (हाथ जोड़े हुए झुककर) बच्चों से गलती हो ही जावे है हजूर मैं माफी चाहता हूँ। आइन्दा वह ऐसा नहीं करेगा। मैंने तो उससे कहा था कि चलकर मंत्री जी और ठाकुर साहब से माफी माँग ले लेकिन वह सरम के मारे नहीं आवे है। और हजूर, आपके कहने से भी तो उसने कई लोगों के काम बिना कुछ लिये दिये करे हैं।

टोपीधारी अच्छा, तुम थोड़ी देर बाद आना। तुम्हारी बात मैं सुनूँगा। जाओ।

[किसान 'अच्छा मालिक' कहकर प्रणाम की मुद्रा में निकल जाता है]

युवक मुझे किसलिए याद किया गया है ?

टोपीधारी (मुस्कराहट फेंकता हुआ) तुम याद करने लायक हो इसलिए। (मुस्कराहट का प्रत्युत्तर पाने के लिए युवक की ओर देखता रहता है, लेकिन उसके गम्भीर बने रहने पर) मैं यह जानना चाहता था बेटा, कि तुम हमसे नाराज क्यों हो ?

युवक किसने कहा ? मैं आपसे क्यों नाराज होने लगा ?

टोपीधारी तुमने फकीरचन्द और भीखनलाल की बीसियों शिकायतें लिखकर मुख्यमंत्री जी के पास भेजी हैं कि नहीं ?

युवक लेकिन आप तो इन दोनों में से कोई नहीं है ?

प्रौढ़ (तनिक क्रोध) इससे क्या हुआ ? ये दोनों मंत्री जी के घर के लोग तो हैं।

टोपीधारी आप शान्त रहिए ठाकुर साहब।

प्रौढ़ अच्छा, मैं आपके चायपानी का बंदोबस्त करता हूँ। (उठकर बाहर चला जाता है।)

टोपीधारी (कुछ नर्मी के साथ) देखो, तुम ठाकुर साहब के लड़के हो। ठाकुर साहब मेरे शुभचिन्तक हैं, इसलिए मैं भी तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ। यही कारण है कि मैंने तुम्हें नौकरी दिलवायी है और इस नौकरी से निकलने की ताकत भी मुझ में है।

युवक आप मुझे धमकी देने आये हैं ?

टोपीधारी नहीं समझा रहा हूँ। तुम मुख्यमंत्री जी तक शिकायत पहुँचाओ या प्रधानमंत्री जी तक, तुम्हारी इन शिकायतों से कुछ होना जाना नहीं है। प्रशासन में ऊपर से नीचे तक एक ऐसा जाल बुना हुआ है कि उसमें तुम जैसे लोग ही फँसते हैं, हम जैसे नहीं। मकड़ी को कभी तुमने अपने जाल में फँसते देखा है?

युवक इन सब मकड़ियों के जाल साफ़ करने की हिम्मत मुझमें है। मैं ऐसी धमकियों से डर जानेवाला व्यक्ति नहीं हूँ। मैं और ऊपर तक शिकायतें ले जाऊँगा। अभी मैं मुख्यमंत्री के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

टोपीधारी (मुस्कराकर) मुख्यमंत्री जी का उत्तर तो तभी आयेगा जब मैं राजधानी पहुँचकर तुम्हारे खिलाफ़ इन्क्वायरी कमेटी बैठाने की सिफ़ारिश करूँगा। और ऊपर शिकायतें कहाँ ले जाओगे? संयुक्तराष्ट्र संघ में? प्रधानमंत्री तक ही तो शिकायतें करोगे? उनका सचिवालय तुम्हारी शिकायतें हमारे पास ही तो भेजेगा या हमसे बातचीत करने के बाद ही तो उनका कोई फ़ैसला होगा?

युवक (भौंचक्का सा) आपका मतलब है कि मैं कहीं से भी न्याय पाने की आशा नहीं कर सकता।

टोपीधारी न्याय अन्याय की बात छोड़ो। आदमी को जीवन में प्रैक्टीकल होना चाहिए, व्यावहारिक होना चाहिए। तुम जैसे आदर्शवादी हरिश्चन्द्र थोड़े समय में ही टूट जाते हैं। आदर्श और सिद्धान्त की बातें कहने में ही अच्छी लगती हैं। जो आदमी उनको पूरी तरह से अपने जीवन में उतारना चाहता है वह जीवनभर असफल ही रहता है। वह या तो समाज के एक कोने में पड़ा रहता है या पागल कहलाता है। (युवक नीचे देखता रहता है) मेरी बात मानो बेटा हम बूढ़े लोगों ने जीवन में जो कुछ देखा सीखा है वही तुमसे कहते हैं। तुम जैसे नौजवानों में जोश बहुत होता है, होश कम, इसलिए तुम स्वयं तो दुःखी रहते ही हो साथ में पिता को भी दुःखी रखते हो। तुम्हारे

पिता ने कितने अरमान से तुम्हें पढ़ाया लिखाया है ताकि तुम आराम से नौकरी करो और अपने आपको सुखी बनाओ।

युवक लेकिन आप मुझे समझने की कोशिश क्यों नहीं करते ? मैंने आपके रिश्तेदारों की शिकायत अपना घर भरने के लिए तो नहीं की है। वे लोग तो सभी नियमों को ताक पर रखकर खस्ता मकान तैयार कर रहे हैं। जनता से जितना पैसा उन मकानों के लिए वसूल किया जा रहा है, उसका आधा हिस्सा भी उन मकानों पर खर्च नहीं किया जा रहा। सीमेंट और लोहा मकानों में लगाने के बजाय ब्लैक में बेच रहे हैं। आप मुझे समझाने की बजाय उन लोगों को क्यों नहीं समझाते? न वे गलत काम करेंगे, न मुझे शिकायत होगी।

टोपीधारी बेटा, व्यापार और राजनीति की गहराइयों को तुम नहीं समझते, इसलिए ऐसी बातें कर रहे हो। अगर मैं और मेरे साथी अपने रिश्तेदारों को ठेके, लाइसेंस, परमिट न दिलाएँ, कमाई न करवाएँ तो चुनाव का खर्च कौन देगा, मेरी पार्टी को लाखों रुपया चन्दा कहाँ से मिलेगा ? क्या तुम जैसे ईमानदार फटीचर लोग कुछ देंगे? (थोड़ा रुककर) मैं यहाँ तुम्हें राजनीति की बारीकियाँ समझाने नहीं आया हूँ। मैं तुमसे दो-टूक उत्तर चाहता हूँ। बोलो, मेरा कहना मानते हो कि नहीं ? अगर तुम्हारा उत्तर 'नहीं' में हो तो उसका परिणाम भी सोच लेना।

युवक (आक्रोश के साथ) ठीक है। मेरा उत्तर 'नहीं' है। देखता हूँ कि आपका भ्रष्ट प्रशासन जीतता है या मैं। जरा यह भी देख लूँ कि आदमी की आत्मा कहाँ तक मर चुकी [redacted]।

टोपीधारी (क्रोध में खड़ा होकर) आत्मा गई भाड़ में और साथ में गये तुम। अब तो तुम्हें कोई नहीं बचा सकता। गीदड़ की जब मौत आती है तो शहर की ओर भागता है। यहाँ बड़े बड़ों को सीधा कर दिया है, तुम्हारी तो हस्ती ही क्या है ?

युवक : (शान्त स्वर में) आप इतना भौंक क्यों रहे हैं। जाइए, जो कुछ करना है कीजिए।

[टोपीधारी तमतमाता हुआ चला जाता है। युवक मेज के पास की कुर्सी पर बैठ जाता है और मेज पर रखे पैड को खोल कुछ लिखने लगता है। कुछ सोचता है, फिर लिखने लगता है। कुछ क्षण अन्धकार, फिर प्रकाश। युवक कुछ सोच रहा है। प्रौढ़ का प्रवेश]

प्रौढ़ क्या लिख रहे हो ?

युवक मैं इस मंत्री के सारे घोटाले की रिपोर्ट प्रधानमंत्री के पास लिखकर भेज रहा हूँ।

प्रौढ़ फ़ायदा ?

युवक फ़ायदा क्या होता है ? (क्रोध के कारण स्वर तीखा हो जाता है) आप तो हर जगह फ़ायदा देखना चाहते हैं, चाहे दूसरों का कितना ही नुकसान क्यों न हो जाय। आप जैसे लोगों ने ही तो ऐसे धातू और बेईमान नेताओं का दिमाग खराब कर रखा है।

प्रौढ़ (क्रोध रोककर) बेटा, जवानी के जोश में ऊलजलूल बक देना अलग बात है समझदारी का व्यवहार करना और बात है।

युवक तो क्या ग़लत बातों का विरोध करना नासमझी है ? अपने कर्तव्य को पहचानना मूर्खता है ? भ्रष्टाचार का विरोध करना ऊलजलूल बकना है ?

प्रौढ़ (अपना कुर्ता उतारकर एक खूँटी पर टाँगते हुए) तुम पहले अपना गुस्सा शांत कर लो फिर बात करूँगा। गुस्से में तुम मेरी हर बात का विरोध करते रहोगे उसपर विचार करने की कोशिश नहीं करोगे। (चारपाई पर लेट जाता है)

युवक : (शान्त स्वर में) विचार क्या करूँ ? आप इस मंत्री के हर ग़लत काम का समर्थन मुझसे करवाना चाहते हैं और मैं ऐसा कर नहीं सकता। यह खुद सीमेंट का व्यापारी है, फिर भी कहता है कि उन्हें सीमेंट ब्लैक में मिलता है। अपने रिश्तेदारों की आड़ में खुद ही मकानों का ठेकेदार है और कम सीमेंट कम लोहा लगाकर सारा सामान ब्लैक में बेचता है। आर्किटेक्ट से मकानों का ठेका दिल

नक्शा बनवाया है कि मकान बनाने की लागत कम से कम आये, फिर भी अनाप-शनाप रेट बढ़ाकर जनता को लूट रहा है। प्रशासन के सारे ढाँचे को ऐसे लोगों ने ही भ्रष्ट बनाकर रख दिया है। और आप ? आप फिर भी मुझसे उसका समर्थन करवाना चाहते हैं।

[किसान जल्दी-जल्दी अन्दर आता है]

प्रौढ़ तुम चाहे जितना आदर्शवाद बघारो, समाज को तो जिधर जाना है उधर ही जायेगा।

युवक (खड़ा होकर) मैं प्रधानमंत्री के पास शिकायत लिखकर अवश्य भेजूँगा। देखता हूँ, वहाँ से क्या जवाब आता है, क्या कार्यवाही होती है।

प्रौढ़ (बैठता हुआ) होगा क्या ? शिकायत ऊपर से नीचे आयेगी और रफ़ादफ़ा हो जायेगी। साथ में तुम्हारी नौकरी भी चली जायेगी। (किसान से) कहो प्यारेलाल ! बात की मंत्री जी से अपने लड़के की नौकरी के बारे में ?

किसान हाँ हजूर। लेकिन काम बनता नहीं दीखे है।

प्रौढ़ क्यों ?

किसान ये मंत्री जी बड़े नीच आदमी हैं।

[प्रौढ़ और युवक एक-दूसरे के मुँह की ओर देखते हैं]

प्रौढ़ क्या हो गया ?

किसान कह रहे थे --प्यारेलाल ! तू सत्यदेव के पिता की जमीन पन्द्रह बीस साल से जोत रहा है। मैं पटवारी और तहसीलदार के कागजों में वह सारी जमीन तेरे नाम करवाये देता हूँ।

प्रौढ़ (चौंकर) क्या ?

किसान हाँ, हजूर, सच ! मैं यह सुनकर भौंचक्का रह गया, तो वो कहने लगे - हाँ, सच कह रहा हूँ। अगर वह मुकदमेबाजी करेगा तो मैं तेरी सहायता करूँगा और तेरे लड़के को भी फिर से नौकरी दिलवा दूँगा।

प्रौढ़ : बड़ा नीच आदमी है। (युवक की ओर देखता है। वह मुस्कराता है)

किसान लेकिन मैंने तो कानों को हाथ लगाकर फौरन कह दिया कि यह काम मुझसे नहीं होगा। बीस साल से ठाकुर सा'ब का नमक खा रहा हूँ, मैं नमकहरामी नहीं कर सकता।

प्रौढ़ (खड़ा होकर) फिर क्या हुआ?

किसान जो होना था ठाकुर सा'ब सो हो गया। मेरे लड़के की नौकरी जाये तो जाये। आखिर मुझे भी तो परमात्मा के दरबार में जवाब देना पड़ेगा। मुझसे यह नीचता नहीं हो सकती।

युवक (मुस्कराकर) अब मंत्री जी तुम्हें परमात्मा के दरबार में भी नहीं पहुँचने देंगे, स्वर्ग के दरवाजे के सन्तरियों की मुट्ठी गर्म कर देंगे। (किसान बात को समझ न पाने की मुद्रा में देखता है। प्रौढ़ विचलित होकर टहलता है) परमात्मा भी तो इन लोगों की बनायी हुई चारदीवारी में कैद रहता है।

प्रौढ़ (रुककर युवक से) यह सब तुम्हारे कारण हो रहा है। न तुम ईमानदारी दिखाते, न यह सब होता। देखो, प्यारेलाल! आज से तुम मेरे नौकर की तरह रहकर खेत का काम करना चाहो तो कर सकते हो। मैं तुमसे हर महीने तनखा की रसीद लिया करूँगा। पता नहीं साला यह मन्त्री कब मुझे कंगाल बना दे।

किसान (भौचक्का सा) यह क्या कह रहे हैं ठाकुर सा'ब। खेत आपका, मैं आपका। मैं भला आपसे गद्दारी करूँगा?

प्रौढ़ यह तो ठीक है, लेकिन सावधानी के लिए मैं ऐसा कर रहा हूँ। आदमी का दिमाग़ पलटते क्या देर लगती है। कल तक यह मंत्री मेरी चिलम भरा करता था आज मेरी ही जड़ खोद देना चाहता है। खुद तो लोगों के गिरवी रखे हुए सैकड़ों बीघा खेत दबाये बैठा है और मेरा खेत औरों से छिनवा देना चाहता है। चोर कहीं का।

किसान लेकिन मैं तो चोर नहीं हूँ।

प्रौढ़ मैं तुम्हें कहाँ बता रहा हूँ? लेकिन मैं इलाज की बजाय बीमारी को ही पास न फटकने देने में विश्वास करता हूँ।

[युवक फिर लिखना प्रारम्भ कर देता है।]

किसान आप मालिक हैं। जैसा चाहें, करें। (कुछ क्षण रुककर) एक खबर और आपको देनी थी ।

प्रौढ़ क्या ?

किसान सत्यदेव भैया को मंत्री जी अपने आदमियों से पिटवाना चाहते हैं।

[युवक और प्रौढ़ चकित दृष्टि से किसान को देखने लगते हैं]

प्रौढ़ तुम्हें कैसे मालूम ?

किसान मैंने जब उनकी बात नहीं मानी तो गुस्से में मुझसे वहाँ से चले जाने को कहा और अपने पास बैठे कुछ आदमियों से बोले कि कल सत्यदेव नौकरी पर आये तो उसकी जरा अच्छी तरह सेवा कर देना। (युवक से) कल, तुम नौकरी पर मत जाना, भैया ।

प्रौढ़ यह मंत्री है कि गुंडों का सरदार !

युवक पिताजी ! मैं सोचता हूँ कि ऊपर शिकायती पत्र लिखने की बजाय नौकरी से ही इस्तीफ़ा दे दूँ। मैं पहले ही सोच रहा था कि ऐसे घुटनभरे वातावरण में मेरा टिक पाना मुश्किल है और इसीलिए मैं (पैड दिखाकर) यह इस्तीफ़ा लिख रहा हूँ। भाड में जाए इंजीनियरी। मैं अगर अपने खेत को फ़ार्म बनाकर काम करता, तो इस दलदल में फँसने की जरूरत ही न पड़ती। प्यारेलाल ! अब तुम मेरे साथ हमारे फ़ार्म पर काम करोगे। ठीक है ना ?

किसान (प्रसन्नतापूर्वक हाथ जोडकर माथे से लगाता हुआ) जो आप ठीक समझें। मैं तो हर हालत में आपकी ही सेवा करते रहना चाहता हूँ।

युवक और तुम्हारा बेटा भी ?

किसान बहुत अच्छा हजूर। वह तो पहले से ही तैयार बैठा है।

[प्रौढ़ चिन्ता की मुद्रा में बैठ जाता है। युवक लिखने लगता है।]

यन्त्रयुग

सैनिक
वैज्ञानिक
नागरिक
यंत्र सैनिक — कम्प्यूटर चालित सैनिक यंत्र

[मंच प्रकाशयुक्त चौकोर कमरा, जिसकी तीन दीवारें ईंटों से बनी हैं। सामने की दीवार से लगी दो कुर्सियाँ। एक पर एक शिथिलगात्र सैनिक बैठा है जो वास्तव में सैनिक है। दूसरी कुर्सी पर सैनिक-वेश में एक वैज्ञानिक है। सैनिकों के कपड़े फटे हुए और रक्तरंजित हैं। दूसरे कोने में दो मशीनगनें, कुछ हथगोले तथा कारतूसी पेटियाँ रखी हैं। सैनिक किस देश के हैं, यह उनके चेहरे से पता नहीं चलता। आगे आनेवाला सैनिक वास्तव में कम्प्यूटर- चालित यंत्र-सैनिक होगा। इसके अतिरिक्त एक अन्य पात्र का भी प्रवेश होगा, जो नागरिक है। मंच के एक ओर छोटा गोल दरवाजा है, जिसमें से सब पात्र प्रवेश करेंगे।]

सैनिक — (बगल में लटके फ्लास्क को खोलकर पानी पीता है) आह, सारा शरीर दर्द के मारे टूटा जा रहा है। तुमको किन शब्दों में धन्यवाद दूँ, भाई! तुम कौन हो? किस देश के हो? मुझे कहाँ से उठाकर लाए हो?

वैज्ञानिक — (लँगड़ाकर कमरे में टहलने लगता है) भाड़ में गया मेरा देश, भाड़ में गया मैं, भाड़ में गयी वह जगह जहाँ से मैं तुम्हें बेहोशी की हालत में उठाकर लाया हूँ। बस यही समझ लो कि मैं बर्बर हूँ, मेरा देश बर्बर है और यह स्थान बर्बरता के खेल का मैदान है जहाँ से तुम्हें उठाकर लाया हूँ।

[कुछ क्षण शान्ति। सैनिक पृतास्क बन्द कर देता है।]

सैनिक : विश्वयुद्ध चल रहा है ?

वैज्ञानिक : (खड़ा हो जाता है। विकृत हँसी हँसता है) विश्वयुद्ध चल रहा है ? हँ ! अब कहाँ चल रहा है ? कौन चला रहा है ? जब चलानेवाले नहीं रहे तो चलेगा क्या ?

सैनिक : (साश्चर्य) क्या ? युद्ध समाप्त हो गया ? (चेहरे पर प्रसन्नता की झलक)

वैज्ञानिक : (आकर कुर्सी पर बैठ जाता है) हाँ, सब कुछ समाप्त हो गया। अब तो बस बचेखुचे सैनिक या तो तड़प रहे हैं या हमारी तरह अपनी जान बचाते फिर रहे हैं।

सैनिक : (शिथिल होकर) सब समाप्त हो गया ! आदमी ने आदमी को खा डाला। आदमी ने आदमी को छेद दिया, कुचल दिया। ओफ्फ ! इतनी भयकर लड़ाई मैंने अपने जीवन में कभी न देखी न सुनी। ऐसे ऐसे नये हथियारों का प्रयोग किया गया है, जिनकी कि कल्पना भी नहीं की गयी थी। हम सैनिक हैं, लेकिन हमें भी नहीं पता कि ये नये हथियार कौन से थे ! सैनिकों की पाँत की पाँत झुलसती गयी और उनके गोलाबारूद उनके ही शरीरों को फाड़ते गये। पीठ पर बँधे गोले, कन्धे पर लटकी कारतूसों की श्रृंखला स्वय फट पड़े। पलक झपकते एक नि शब्द यान आता और सभी सैनिक न जाने कैसे चिथड़े चिथड़े होकर बिखर जाते ! आश्चर्य [redacted] ! न जाने मैं कैसे बच गया ! वे यान किस देश के थे ? वे क्या कर जाते थे ? सभी सैनिक उनके आते ही कैसे चिथडे चिथड़े होकर बिखर जाते थे ? (छत की ओर देखकर) मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

वैज्ञानिक : आश्चर्य करने की कोई आवश्यकता नहीं [redacted]। सभी देश चुपचुप सैनिक तैयारियों में लगे हुए थे। वैसे तो सभी चिल्ला चिल्लाकर विश्वशान्ति के पैगम्बर बन रहे थे लेकिन इन्हीं पैग़म्बरों के घरों में महाविध्वस की तैयारी चल रही थी। कम्प्यूटरचालित यानों का निर्माण हो रहा था जो प्रकाश की गति से चलते थे। कम्प्यूटर ही

	उनका नियंत्रण चालन और निर्देशन करते थे। प्रकाशगति से तेज उड़नेवाले उन यानों से सेना पर लेजर किरणें फेंकी जाती थीं। उन्हीं किरणों के प्रभाव से सभी सैनिकों के हथियार उन्हें ही फाड़ डालते थे, उनके अंगरक्षक अस्त्र उनके ही अंगभक्षक बन जाते थे।
सैनिक	(भय से खड़ा होने का प्रयत्न करता है, लेकिन लड़खड़ाकर फिर बैठ जाता है) ऐं ! सच ! तुम्हें कैसे मालूम ?
वैज्ञानिक	घबराओ मत, बैठे रहो। तुम्हारे पैर झुलस चुके हैं।
सैनिक	(चीखकर) लेकिन तुम्हें कैसे मालूम कि वे यान कम्प्यूटरचालित थे? वे विमान प्रकाश की गति से तेज चलते थे और लेजर किरणें छोड़ते थे यह सब तुम्हें कैसे मालूम ?
वैज्ञानिक	इन बातों से तुम्हें क्या लेना देना ? आराम से बैठो। बाद में बताऊँगा। (बदहवास नागरिक प्रवेश करता है। वैज्ञानिक खड़ा हो जाता है) कौन है ?
नागरिक	(जिसे अँधेरे में कुछ सूझ नहीं रहा है, घिग्घी बँध जाती है) ई ई (बेहोश होकर गिर पड़ता है)
सैनिक	अरे ! बेहोश हो गया बेचारा, घबराहट के मारे। (फ्लास्क खोलकर पानी छिड़कता है और नागरिक के चेहरे की प्रतिक्रिया देखता है।)
नागरिक	(धीरे धीरे होश में आकर) मैं मैं तुम आप कौन हैं ?
वैज्ञानिक	(नागरिक को सहारा देकर बैठाता है) डरो मत। हम तुम्हारे दोस्त हैं।
नागरिक	नहीं नहीं। (चीख पड़ता है) वे लोग मुझे मारने आ रहे हैं।
वैज्ञानिक	कौन ?
नागरिक	(लड़खड़ाता खड़ा हो जाता है) कुछ सैनिक हैं। वे लोग बचेखुचे नागरिकों को चुन-चुनकर मार रहे हैं। मैं उनसे बचता हुआ भाग रहा था। एक गड्ढे में छिपने के लिए घुसा तो मुझे यह कोठरी सी

दिखाई पडी, सो मैं घुस आया। (हाथ जोड़ता है, फिर ऊपर उठा देता है) मैं निर्दोष हूँ, मुझे मत मारना।

वैज्ञानिक अरे भाई, कह तो दिया कि हम से मत डरो। हमें अपना दोस्त समझो।

सैनिक कौन दोस्त? किसका दोस्त? इस युद्ध से पहले सभी देश अपने आपको एक दूसरे का दोस्त कहते-कहते नहीं थकते थे और जब युद्ध छिड़ा तो सबके मुखौटे उतर गये। सबके सिद्धान्त बारूद की तरह उड़ गये। अब तक के इतिहास में इससे अधिक क्रूर और भयकर युद्ध कभी नहीं हुआ। (कराहकर) ओह! मेरे पैरों में और सारे शरीर में भयकर दर्द हो रहा है।

नागरिक (फर्श पर बैठकर) चारों ओर दर्द ही दर्द है। गाँव के-गाँव, शहर के शहर वीरान पड़े हैं। खेत सूने हैं, पेड़ों के नाम पर केवल ठूँठ खड़े हैं। वनस्पति और जीवन का नाम तो, ऐसा लगता है, पृथ्वी पर रहा ही नहीं। कुछ लूटमार करते सैनिक ही जीवित घूम रहे हैं। पता नही कैसे, मैं बच गया हूँ।

वैज्ञानिक यह सब लेजर किरणों का ही प्रभाव है। जो उनकी चपेट में आ जाता है, जीवित नहीं बचता, ध्वस्त हो जाता है। निर्जीव पदार्थ बच जाते हैं, सजीव मर जाते हैं।

सैनिक लेकिन इस भयकर अस्त्र का निर्माण किस देश ने किया है? ये सैनिक कैसे बच गये हैं? किस देश के हैं?

[वैज्ञानिक इधर-उधर देखने लगता है।]

नागरिक : (उदास आवाज में) मेरा तो सब कुछ लुट गया। बीबी बच्चे सब जल गये।

सैनिक : बच किसका गया है? सभी तो नष्ट हो गये हैं। यह तो ईश्वर की कृपा हो गयी, जो इन महोदय ने (वैज्ञानिक की ओर संकेत करता है) समय पर मेरी जान बचा ली, लेकिन मेरा जीना भी अब क्या जीना है। न देश बचा, न साथी, न घर। मेरा शरीर भी बेकार हो

गया है। लगता है, दोनों पैर झुलस गये हैं, इस कारण कटवाने पड़ेंगे।

[वैज्ञानिक कमरे में टहलने लगता है]

नागरिक — (उठने का प्रयत्न करता है, लेकिन उठ नहीं पाता। घबराई आवाज में) मेरे पैरों को क्या हो गया? मेरा शरीर शिथिल क्यों होता जा रहा है? हाथ क्यों नहीं उठ पाते?

[हाथों को उठाने का प्रयत्न करता है, किन्तु केवल कन्धे उचककर रह जाते हैं। सैनिक असहाय-सा बैठा देखता रहता है और वैज्ञानिक पास आकर नागरिक की नब्ज थामकर 'हूं' की ध्वनि निकालता है]

सैनिक — क्या हो गया इसे?

वैज्ञानिक — विषैली गैसों का प्रभाव पड़ गया है। (नागरिक से) क्या बाहर बम भी गिरे थे?

नागरिक — (घबराई दृष्टि से देखता हुआ) हाँ, एक बम गिरा था और उससे सारे शहर की हवा में कड़वाहट भर गयी थी।

वैज्ञानिक — बस, यह उसी बम की विषैली गैस का ही प्रभाव है। अब तुम नहीं बच सकते।

नागरिक — (चौंककर) क्या?

वैज्ञानिक — हाँ, यहाँ से हजारों किलोमीटर दूर से राकेट द्वारा यह बम फेंका गया है?

सैनिक — तुम्हें कैसे मालूम?

नागरिक — (चीखता है) मुझे किसी तरह बचा लो भैया! मैं मरना नहीं चाहता। मैं जीना चाहता हूं।

वैज्ञानिक — (शान्त स्वर में) इस धरती पर मरना कौन चाहता है? यहाँ तो मारा जाता है। राजनीति का विषधरा दांत सब पर चोट करता है, किसी को क्षमा नहीं करता।

नागरिक — मुझे तुम्हारे दर्शन शास्त्र तुम्हारे राजनीति शास्त्र पर भाषण नहीं सुनना।

वैज्ञानिक : सुनना कौन चाहता है, सुनाया जाता है।

सैनिक : तुम्हें अचानक यह क्या हो गया है मेरे भाई ? वह बेचारा मौत की घड़ियाँ गिन रहा है और तुम प्रवचन देने में लगे हो।

वैज्ञानिक : मौत की घड़ियाँ कौन नहीं गिन रहा ? इसे अब मरना है तो मरना ही है। अब मैं क्या कर सकता हूँ ?

नागरिक : (गिड़गिड़ाकर) अरे, किसी डॉक्टर को बुलाओ। मुझे अस्पताल पहुँचाओ।

वैज्ञानिक : (मुस्कराता हुआ) डॉक्टर ? अस्पताल ? अभी तो तुम कह रहे थे कि गाँव के गाँव, शहर के शहर वीरान पड़े हैं, तो डॉक्टर और अस्पताल क्या अब तक साँस ले रहे होंगे ?

नागरिक : (लेटकर) हाय, अब मैं क्या करूँ ? (रोता है) हे भगवान् !

सैनिक : (वैज्ञानिक से) तुम बड़े निर्दयी हो यार !

[विचित्र शरीरवाले यन्त्र-सैनिक का प्रवेश। उसके कन्धों पर विचित्र हथियार लटके हैं। वह वैज्ञानिक के सामने सावधान की मुद्रा में खड़ा हो जाता है। सैनिक और नागरिक की ओर देखता हुआ वैज्ञानिक यन्त्र-सैनिक का अभिवादन लेता है। सैनिक आश्चर्यचकित होकर वैज्ञानिक और यन्त्र-सैनिक की ओर देखता है। नागरिक थोड़ी गर्दन उठाकर फटी आँखों से सबकी ओर देखता रहता है]

वैज्ञानिक : कहिए ! क्या समाचार हैं ?

यन्त्र-सैनिक : श्रीमन् ! मुख्यालय से आदेश आया है कि नये हथियारों और गैसों का प्रभाव देखने के लिए यहाँ से कुछ नमूने भेजे जाएँ। उन नमूनों का वैज्ञानिक परीक्षण होगा।

वैज्ञानिक : (सैनिक और नागरिक की ओर संकेत करके) ये दोनों प्रकार के नमूने हैं जिन्हें कम्प्यूटर मानव की सहायता से मैंने यहाँ इकट्ठा किया है। मेरा काम अब समाप्त हुआ।

नागरिक : (चीखकर) क्या हम परीक्षण के लिए नमूने हैं ?

सैनिक (काँप जाता है) यह क्या कह रहे हो ? तुम धूर्त हो ! तुम कपटी हो ! तुमने बार बार पूछने पर भी मेरे प्रश्नों का उत्तर शायद इसलिए नहीं दिया कि तुम स्वयं हमलावर हो। मैं तुम सबको मार डालूँगा। (कोने में रखे हथियारों की ओर हाथ बढ़ाता हुआ गिर पड़ता है। वैज्ञानिक हथियारों को उठा लेता है। यन्त्र सैनिक सैनिक की ओर राइफल तान लेता है लेकिन वैज्ञानिक वर्जना का संकेत करता है) तुम नीच हो। हमें विश्वास में लेकर छल करते रहे और अब तक चिकनी चुपड़ी बातों से लुभाते रहे।

वैज्ञानिक (हँसता है) तो राजनीति और किस चीज का नाम है ? राजनीति में तो साम, दाम दण्ड, भेद चलता ही है।

यन्त्र-सैनिक श्रीमन् ! ठीक चौदह बजे चन्द्रग्रह से पृथ्वी की ऑक्सीजन नष्ट करने के लिए बम छोड़े जायेंगे। अब पाँच मिनट शेष हैं। मुख्यालय से आदेश हुआ है कि पृथ्वी के सब वैज्ञानिक और हमारे बड़े सैनिक अधिकारी चन्द्र ग्रह की ओर रवाना कर दिये जायें। कम्प्यूटर और लेजर किरणों के आपके आविष्कारों ने अब मानव सैनिकों की आवश्यकता समाप्त कर दी है, इसलिए उनके समेत सब व्यक्ति पृथ्वी पर ही समाप्त कर दिये जायेंगे।

वैज्ञानिक • (कलाई घड़ी देखकर) ठीक है। अब मैं चलता हूँ, तुम इन दोनों को लेकर आओ। (सैनिक से) यह जो सैनिक तुम देख रहे हो, यह हमारे जैसा मनुष्य नहीं है, कम्प्यूटर यन्त्र है। इस पर किसी किरण और गैस का प्रभाव नहीं पड़ता। ये कम्प्यूटर, ये लेजर किरणें और गैसें मेरे आविष्कार हैं। समझे ? तुम बार बार प्रश्न पर प्रश्न किये जा रहे थे, अब तो तुम्हें सबका उत्तर मिल गया ? तुम मेरे देश का नाम जानना चाहते थे, सो अब बताना बेकार है। चार मिनट बाद मैं चन्द्र ग्रहवासी हो जाऊँगा। मैं अपने आविष्कारों के प्रभाव को परखने के लिए यहाँ ठहरा हुआ था और अब तुम दोनों को अपने साथ ले जाकर अपने आविष्कारों का तुम्हारे शरीरों पर पड़े प्रभावों का परीक्षण करूँगा।

नागरिक : क्या तुम हम पर परीक्षण करोगे ? मार डालोगे ?

वैज्ञानिक : अवश्य।

[नागरिक यह सुनते ही बेहोश हो जाता है]

सैनिक : तुम बहुत क्रूर हो। क्या तुममें मनुष्यता का कण मात्र भी नहीं है ? क्या तुम यंत्र के दास बनकर सारी सृष्टि का विनाश करने में जरा भी नहीं झिझकते ? (तेजी के साथ सुदककर वैज्ञानिक के दोनों पैर अपने हाथों में लपेट लेता है) मैं तुम्हें यहाँ से नहीं जाने दूँगा।

वैज्ञानिक : (यंत्र सैनिक द्वारा सैनिक की ओर निशाना लगाया जाता देखकर) नहीं। इसको मत मारो। क्या मुख्यालय ने इसको मारने का आदेश दिया है ?

यंत्र-सैनिक : नहीं।

वैज्ञानिक : इसको जीवित ही ले जाना है, इसलिए मारना नहीं चाहिए।

[यंत्र-सैनिक हथियार नीचे कर लेता है। वैज्ञानिक सैनिक को हटाने के लिए [redacted] झटकता है, लेकिन वह नहीं छोड़ता।]

सैनिक : नहीं, मैं तुम्हें नहीं जाने दूंगा।

यंत्र-सैनिक : मुख्यालय से आदेश आया है कि आप जल्दी से इस कमरे को खाली कर दीजिए और राकेटयान में बैठ जाइए। हमें आदेश हुआ है कि इन दोनों व्यक्तियों को राकेटयान में पहुँचा दिया जाय। राकेटयान के चालक कम्प्यूटर ने यान के यंत्र चालू कर [redacted] हैं।

वैज्ञानिक : (झुककर सैनिक को अलग हटाने का प्रयत्न करता हुआ) छोड़ो, छोड़ो मुझे।

सैनिक : (और अधिक कसता हुआ) नहीं छोड़ूँगा। यदि मरना ही है तो तुम्हें मारकर क्यों न मरूँ, जिसने बिना सोचे समझे अपनी बुद्धि यंत्रों के हाथों में सौंप दी है। सारे विश्व के प्राण हरकर अब अपने प्राण बचाना चाहते हो ? मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

यंत्र-सैनिक : मुख्यालय से आदेश आया है कि राकेटयान ठीक समय पर पृथ्वी से चल पड़ेगा और उसके रवाना होते ही चन्द्रग्रह से वे राकेट चल

पड़ेंगे, जिनमें पृथ्वी की ऑक्सीजन समाप्त करनेवाले बम रखे हुए हैं, आप जल्दी कीजिए।

वैज्ञानिक (घबराकर पैर खींचना चाहता है, पर गिर पड़ता है। हाथों से सैनिक के हाथ हटाना चाहता है। असफल होने पर सैनिक की पीठ और सिर पर मुक्के जमाता हुआ) छोड़, नीच ! मूर्ख ! !

सैनिक नहीं छोड़ूँगा।

यन्त्र-सैनिक मुख्यालय का आदेश नहीं है, वर्ना इसे गोली मार देता।

वैज्ञानिक (विवशता के शान्त स्वर में) छोड़ दो भाई ! मैं तुम्हें वचन देता हूँ, चन्द्रग्रह पर मैं तुम्हारा बाल भी बाँका न होने दूँगा।

सैनिक (व्यंग्यपूर्वक) आ हा हा ! अब बड़ा भाईचारा सूझ रहा है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कितने बड़े झूठे और अभिनेता हो। मैं तुम्हारे नाटक को अच्छी तरह समझ रहा हूँ। मनुष्य के जब अपने प्राणों पर बीतती है, तब उसे दया धर्म की बातें सूझती हैं। तुम चाहे मुझे मरवा ही क्यों न डालो, मैं तुम्हें नहीं छोड़नेवाला।

यन्त्र-सैनिक श्रीमन्, आपके बिना ही राकेटयान चल पड़ा है और चन्द्रग्रह से भी बमयुक्त राकेट चल पड़े हैं।

वैज्ञानिक (घबराकर खड़ा हो जाता है और पानी में नहाये कुत्ते की तरह सारे शरीर को झुरझुरा देता है, फिर भी पैरों के न छूटने पर) लो, अब तुम तो मरोगे ही और मुझे भी मरवाओगे। अरे, अब तो कम से कम छोड़ दो।

[बाहर धड़ाका होता है। धड़ाके के साथ ही वैज्ञानिक गिर पड़ता है। सैनिक तथा वैज्ञानिक चीत्कार करते हुए कुछ देर तड़पते हैं, फिर शान्त हो जाते हैं। यन्त्र-सैनिक अभिवादन की मुद्रा में खड़ा रहता है]

लाइलाज बीमार

श्याम प्रसाद	
सुशीला	श्याम प्रसाद की पत्नी
सत्येन्द्र	श्याम प्रसाद का लड़का
सुधा	श्याम प्रसाद की लड़की
करोड़ीमल	श्याम प्रसाद का मित्र
डाकिया	

[एक कमरा। कमरे के बीच में चार-पाँच कुर्सियाँ और एक मेज रखे हैं। बायीं दीवार के कोने में एक स्टूल पर पंखा चल रहा है, जिसकी हवा बायीं दीवार के सहारे सोफ़े पर बैठे श्याम प्रसाद को लग रही है जो समाचार-पत्र पढ़ने में तल्लीन हैं। उनकी अवस्था लगभग पचास वर्ष, वेशभूषा सादी है। सामने दीवार पर घड़ी लगी है, जिसमें आठ बज रहे हैं।]

श्याम — (अचानक अपनी नाड़ी पर हाथ रखते हुए धीरे धीरे दृष्टि उठा कर) अरे, सत्येन्द्र की माँ !

सुशीला — (अन्दर से) अभी आई। (कमरे में आकर) कहो अब क्या मुसीबत आ गयी ?

श्याम — तुम इतना रूखा क्यों बोलती हो ? मुसीबत नहीं, बुखार आ गया है।

सुशीला — किसे ?

श्याम — मुझे, और क्या तुम्हें !

सुशीला — तुम्हें तो कोरा वहम [illegible]। चौबीसों घण्टे कुछ न कुछ कहते ही रहते हो। कभी तो चैन से बैठने दिया करो।

श्याम — बस, तुम्हें तो हर वक्त वहम ही दीखता रहता है। तब कहोगी, जब मैं

पड़ेंगे, जिनमें पृथ्वी की ऑक्सीजन समाप्त करनेवाले बम रखे हुए हैं, आप जल्दी कीजिए।

वैज्ञानिक (घबराकर पैर खींचना चाहता है, पर गिर पड़ता है। हाथों से सैनिक के हाथ हटाना चाहता है। असफल होने पर सैनिक की पीठ और सिर पर मुक्के जमाता हुआ) छोड़, नीच ! मूर्ख !!

सैनिक नहीं छोड़ूँगा।

यंत्र-सैनिक मुख्यालय का आदेश नहीं है वर्ना इसे गोली मार देता।

वैज्ञानिक (विवशता के शान्त स्वर में) छोड़ दो भाई ! मैं तुम्हें वचन देता हूँ, चन्द्रग्रह पर मैं तुम्हारा बाल भी बाँका न होने दूँगा।

सैनिक (व्यंग्यपूर्वक) आ हा हा ! अब बड़ा भाईचारा सूझ रहा है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम कितने बड़े झूठे और अभिनेता हो। मैं तुम्हारे नाटक को अच्छी तरह समझ रहा हूँ। मनुष्य के जब अपने प्राणों पर बीतती है तब उसे दया धर्म की बातें सूझती हैं। तुम चाहे मुझे मरवा ही क्यों न डालो, मैं तुम्हें नहीं छोड़नेवाला।

यंत्र-सैनिक श्रीमन्, आपके बिना ही राकेटयान चल पड़ा है और चन्द्रग्रह से भी बमयुक्त राकेट चल पड़े हैं।

वैज्ञानिक (घबराकर खड़ा हो जाता है और पानी में नहाये कुत्ते की तरह सारे शरीर को झुरझुरा देता है फिर भी पैरों के न छूटने पर) लो, अब तुम तो मरोगे ही और मुझे भी मरवाओगे। अरे, अब तो कम से कम छोड़ दो।

[बाहर धड़ाका होता है। धड़ाके के साथ ही वैज्ञानिक गिर पड़ता है। सैनिक तथा वैज्ञानिक चीत्कार करते हुए कुछ देर तड़पते हैं, फिर शान्त हो जाते हैं। यंत्र-सैनिक अभिवादन की मुद्रा में खड़ा रहता है]

लाइलाज बीमार

श्याम प्रसाद	
सुशीला	श्याम प्रसाद की पत्नी
सत्येन्द्र	श्याम प्रसाद का लड़का
सुधा	श्याम प्रसाद की लड़की
करोड़ीमल	श्याम प्रसाद का मित्र
डाकिया	

[एक कमरा। कमरे के बीच में चार-पाँच कुर्सियाँ और एक मेज रखे हैं। बायीं दीवार के कोने में एक स्टूल पर पखा चल रहा है, जिसकी हवा बायीं दीवार के सहारे सोफ़े पर बैठे श्याम प्रसाद को लग रही है जो समाचार-पत्र पढ़ने में तल्लीन हैं। उनकी अवस्था लगभग पचास वर्ष, वेशभूषा सादी है। सामने दीवार पर घड़ी लगी है, जिसमें आठ बज रहे हैं।]

श्याम (अचानक अपनी नाड़ी पर हाथ रखते हुए धीरे धीरे दृष्टि उठा कर) अरे, सत्येन्द्र की माँ!

सुशीला (अन्दर से) अभी आई। (कमरे में आकर) कहो, अब क्या मुसीबत आ गयी?

श्याम तुम इतना रूखा क्यों बोलती हो? मुसीबत नहीं बुखार आ गया है।

सुशीला किसे?

श्याम मुझे, और क्या तुम्हें!

सुशीला तुम्हें तो कोरा वहम है। चौबीसों घण्टे कुछ न कुछ करते ही रहते हो। कभी तो चैन से बैठने दिया करो।

श्याम बस, तुम्हें तो हर वक्त वहम ही दीखता रहता है। तब कहोगी, जब मैं

सुशीला (उनके मुँह पर हाथ रखती हुई) चुप भी रहो। कैसी बुरी बात मुँह से निकालते रहते हो ! लाओ दिखाओ हाथ। (नाड़ी देखकर) कहाँ है बुखार ? हाथ तो ठंडा पड़ा है।

श्याम तुम क्या जानो, आजकल कई तरह के बुखार चल गए हैं। अंदर बुखार रहता है और बाहर शरीर ठंडा मालूम पड़ता है।

सुशीला (मुस्कराकर) ये बुखार किस कम्पनी ने चलाये हैं ?

श्याम (अखबार एक कुर्सी पर फेंकते हुए) तुम्हें तो बस, हर समय चुहलबाजी ही सूझती रहती है। मेरी कुछ भी चिन्ता नहीं है।

सुशीला तो मैं क्या करूँ ? क्या चाहते हो ?

श्याम करोगी क्या, चार गोलियाँ कुनैन की और साथ में रखी हुई दो पुड़ियाँ ले आओ। दुश्मन को सिर उठाने से पहले कुचल देना अच्छा होता है।

सुशीला (आश्चर्य से) हाय राम ! एक साथ चार गोलियाँ ! बुखार न तो हो जाय।

श्याम मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह करो।

सुशीला तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। (अन्दर चली जाती है)

श्याम कुछ समझो न बूझो बेकार टाँग अड़ाने बैठ जाती हो। तुम्हारी राय मानता चलूँ, तो दो दिन जीना मुश्किल हो जाय।

[सुशीला पानी-भरा गिलास और दवा लेकर आती है]

सुशीला लो निगलो।

[श्याम प्रसाद पानी के साथ गोलियाँ और पुड़ियों की दवा निगल जाते हैं]

सत्येन्द्र (बाहर से प्रवेश कर) पिताजी ! सुबह जब आप सो रहे थे, तब आपसे मिलने करोड़ीमल जी आए थे।

श्याम जरूर किसी मतलब से आया होगा। बिना अपने स्वार्थ के आजकल कौन किसी के यहाँ आता जाता है।

सुशीला हाँ, सभी आप की तरह हैं ना।

श्याम (सुशीला की ओर आँख तरेरते हुए) तुम चुप रहो जी !

[सुशीला आँखें तरेरकर अंदर चली जाती है।]

सत्येन्द्र पिताजी, मैं जरा बाजार हो आऊँ ?

श्याम क्यों ? क्या काम है ?

सत्येन्द्र मुझे एक किताब लानी है।

श्याम मैं खूब समझता हूँ तुम्हारी बहानेबाजी। बाजारू लौंडों के साथ फिरने जा रहे हो ना ?

सत्येन्द्र (क्रोध दबाकर) पिताजी, मैं क्या कोई दो साल का बच्चा हूँ जो अपना बुरा भला नहीं समझ सकता। आप इतना वहम क्यों करते हैं ?

श्याम (क्रोध में भरकर) फिर वही बात। अरे, मैंने धूप में बाल सफ़ेद नहीं किए हैं। मैंने तुम से ज्यादा दुनिया देखी है। (सत्येन्द्र बाहर निकल जाना चाहता है)अरे, सुन तो सही।

सत्येन्द्र (रुककर) जी !

श्याम करोड़ी क्या कह रहा था ?

सत्येन्द्र कह रहे थे कि उन्होंने मैनेजर और प्रिंसीपल से बात कर ली है और मैं कल से कॉलेज में लैक्चररशिप सँभाल लूँ।

श्याम (प्रसन्नतापूर्वक) सच ! तो तूने उन्हें रोका क्यों नहीं ? मुझे उठा लेता।

सत्येन्द्र : वे कहने लगे कि उन्हें जल्दी है।

श्याम अरे, सत्येन्द्र की माँ !

सत्येन्द्र : मैं बाजार जा रहा हूँ। कुछ किताबें खरीदनी हैं। (निकल जाता है।)

सुशीला (प्रवेश कर) क्या है जी ?

श्याम कभी तो 'टैम्परेचर डाउन' कर लिया करो। लो, मैं तुम्हें एक खुशखबरी सुनाऊँ।

सुशीला क्या ?

श्याम देख लो, हमारा ऐसा रौब है। कोई ऐसा आदमी जो मेरा रौब न माने ?

सुशीला अपनी हाँके जाओगे कि कुछ कहोगे भी।

श्याम सत्येन्द्र की कालेज में नौकरी लग गई है।

सुशीला - करोड़ीमल ने लगवाई होगी ?

श्याम — (झेंपकर) अरे ऽ ऽ, वह क्या लगवायेगा। मुझसे कोई काम निकालना चाहता होगा, नहीं तो भला कौन मुफ्त में किसी का काम करने लगा। तभी तो सबेरे ही सबेरे मुझसे मिलने आया होगा।

सुशीला — आपके साथ तो भलाई करना भी बुरा है। मैं ही हूँ जो अट्ठाइस साल से भुगत रही हूँ। और कोई होती तो अब तक कुढ़ कुढ़ कर मर गई होती।

श्याम — (कुर्ते के बटन खोलते हुए) कुढ़नेवाले तो मरते ही हैं

[बाहर से डाकिया एक लिफ़ाफ़ा अन्दर फेंक जाता है। श्याम प्रसाद उसे खोलकर पढ़ने लगते हैं]

सुशीला — कहाँ से आई है ?

श्याम — (पढ़कर) कोई नहीं जायेगा।

सुशीला — कहाँ ?

श्याम — जगदीश की लड़की की शादी है, उसका यह निमन्त्रण पत्र है।

[लिफ़ाफ़ा मेज़ पर फेंक देते हैं]

सुशीला — आप भी अजीब बातें करते हैं। अपने भाई की लड़की की शादी में नहीं जाओगे तो दुनिया क्या कहेगी ?

श्याम — भाड़ में जाये यह दुनिया। मेरे पास इतना पैसा नहीं है कि बेकार लुटाता फिरूँ। यहाँ अपना ही पूरा नहीं पड़ता।

सुशीला — (सोफ़े पर बैठती हुई) अच्छा ! शायद आप यह सोच रहे हैं कि वे आपसे शादी के लिए रुपये माँगेंगे।

श्याम — और क्या !

सुशीला — देखिए, एक बात कहूँ। वहम की दवा विधाता के पास भी नहीं है। भला इतना मालदार आदमी अपनी इकलौती लड़की की शादी के लिए आपसे रुपया माँगेगा।

श्याम — अरे, तुम क्या जानो। आजकल अमीर ही ज्यादा ग़रीब बनते हैं और ग़रीब, अमीर।

सुशीला — (उठती हुई) आपके साथ कौन मग़ज खपाए।

श्याम : (कुर्ता उतारकर एक कुर्सी पर टाँग देते हैं। एक कुर्सी पंखे के सामने रखकर बैठते हुए) गुस्सा फिर हो लेना पहले मेरा हाल देखो। बहुत

गर्मी लग रही है। (पंखा तेज कर रूमाल से पसीना पोंछते हैं) बड़ी खुश्की लग रही है। पेट में पता नहीं कैसी आग जैसी लग रही है।

सुशीला — मैंने कहा था ना कि बिना बुखार के चार कुनैन की गोलियाँ नुकसान करेंगी, पर आप किसी की सुनें, तब ना !

[सत्येन्द्र हाथ में पुस्तक लिए हुए अन्दर आता है। श्याम प्रसाद बेचैन होकर कमरे में टहलने लगते हैं]

सत्येन्द्र — क्यों, क्या हुआ ?

सुशीला — मैंने मना किया था, लेकिन मेरी क्यों सुनने लगे।

सत्येन्द्र — कुछ बात भी बताओगी ?

सुशीला — इन्होंने इकट्ठी चार गोलियाँ कुनैन की और न जाने किस चीज की दो पुड़ियाँ निगल ली हैं।

सत्येन्द्र — (मुस्कराहट दबाकर) डॉक्टर को बुला लाऊँ !

श्याम — (सोफ़े पर लेटते हुए) रहने दो, अभी ठीक हुआ जाता हूँ। ये डॉक्टरी दवाइयाँ सिवाय जहर के और कुछ नहीं होतीं। जरा पंखे को मेरी तरफ़ तेज कर दे।

[सत्येन्द्र वैसा ही करता है]

सुशीला — बड़ा ज्ञान सूझ रहा है, लेकिन चमड़ी जाये, पर दमड़ी न जाये। जा सत्येन्द्र, डॉक्टर को लिवा ला।

[सत्येन्द्र पुस्तक मेज पर रखकर बाहर निकल जाता है।]

श्याम — (उठकर बैठते हुए) जरा और तेज करो इसे। (सुशीला पंखा तेज करती है) और करो।(रूमाल से शरीर पोंछते हैं)

सुशीला — इस पंखे में इससे ज्यादा चलने की ताकत नहीं है। आप भी बेकार की मुसीबत बैठे ठाले पाल लेते हैं। पानी लाऊँ ? शर्बत बनाऊँ ?

[श्याम प्रसाद बेचैनी से कमरे का एक चक्कर लगाकर फिर पंखे के सामने बैठ जाते हैं]

श्याम — घर में दूध है ?

सुशीला — नहीं।

श्याम — (कुछ देर सोचकर) घर में कुछ भी नहीं होता समय पर। जाओ, बाजार से किलो दो किलो दूध ले आओ।अच्छा रहने दो। बेकार

पैसे क्यों डाले जायें। न जाने किस किस का और ऊपर से तालाबों का पानी मिलाकर बेचते हैं। (लेटते हुए) अभी तक सुधा नहीं आई?

[सुशीला माथे पर हाथ रखकर वहीं कुर्सी पर बैठ जाती है। सुधा उछलती हुई बाहर से अन्दर प्रवेश करती है]

सुधा — (प्रसन्नता से) अहा, पिताजी—! (लेकिन श्यामप्रसाद को देखकर चुपचाप खड़ी हो जाती है)

श्याम — (सुधा को देखकर तेज आवाज में) तू कहाँ गई थी?

सुधा — (सहमकर) अपनी सहेलियों के पास।

श्याम — मुझे तेरा यह आवारापन बिलकुल पसन्द नहीं है। मैंने तुझे कभी घर में बैठे नहीं देखा। क्यों गई थी उनके पास?

सुधा — (बुझे स्वर में) आज हमारा 'रिजल्ट' निकला है, उसे देखने गई थी।

श्याम — ले आई न थर्ड क्लास!

सुशीला — (उनकी ओर घूमकर) आपके मुँह से कभी शुभ वचन भी निकलते हैं?

[सुधा उदास बैठ जाती है]

सुशीला — आपके लिए तो कोई खाना पीना छोड़कर बगुले की तरह समाधि लगाकर बैठ जाये तो पढ़ाई है, नहीं तो खेलकूद। जब से इसने पढ़ना शुरू किया है, तब से आप चिल्लाते आ रहे हैं कि यह कुछ नहीं पढ़ती। इस बार जरूर फेल हो जाएगी। लेकिन यह हमेशा 'फर्स्ट' आई है। एक आप हैं कि कभी शाबासी का शब्द मुँह से नहीं निकला। वह खुशी खुशी अपना 'रिजल्ट' बताने आई है तो लगे उसे फटकारने।

श्याम — तो मैं कुछ बुरी बात तो नहीं कह रहा। ऐसा कौन सा पिता है जो अपनी सन्तान को सबसे अव्वल नहीं देखना चाहता?

सुशीला — हमारी सन्तान में कौन सी बुराई है? ऐसे बेटा बेटी आप खोज कर ला तो दें, जो हरेक बात में सबसे अच्छे हों। बच्चों से प्रेम की बातें करना तो जैसे सीखा ही नहीं है। न जाने किस यूनिवर्सिटी ने आपको मनोविज्ञान में एम०ए० की डिग्री दे दी है। (उठकर सुधा के सिर पर हाथ फेरती है)

श्याम — चुप हो गई। जरा सी बात पर तिल का ताड़ बना देती हो।

सुशीला	(सुधा को अपने पास सोफ़े पर बैठाकर) तिल का ताड़ तुम बनाते हो कि मैं बनाती हूँ ? एक दिन की बात हो तो भुगतूँ । यहाँ तो मरने तक यही बक झक करते रहना है । (सुधा से) हाँ बेटी ! मुझे बता, कौन सी डिवीजन आई है ? (सुधा के उत्तर न देने पर सान्त्वना भरे स्वर में उसके सिर पर हाथ फेरती हुई) अब मत दुःखी हो । इनकी तो शुरू से ही ऐसी आदत रही है । तू ही देख, बिना बुखार के चार कुनैन और दो पुड़ियाँ खाकर अब पंखे की हवा से अपनी गर्मी शान्त कर रहे हैं । कुछ कह दो इन्हें तो और गर्मी चढ़ती है । हाँ, बता तो सही, क्या रिजल्ट रहा ?
सत्येन्द्र	(अखबार तथा मिठाई का डिब्बा हाथ में लिए हाँफता हुआ प्रवेश कर) मम्मी ! सुधा की यूनीवर्सिटी में 'फर्स्ट पोजीशन' आयी है । मैं डॉक्टर के पास से लौटकर आ रहा था तो मुझे ध्यान आया कि आज बी०ए० का 'रिजल्ट' निकलेगा । मैंने फ़ौरन अखबार खरीदा और देखा कि सुधा का नाम सबसे ऊपर लिखा है । मैं खुशी के मारे दौड़ता आया हूँ । (सुधा से) सुधा रानी ! (उसे उदास देखकर) रो क्यों रही हो ? शायद किसी ने गलत खबर दे दी है कि तुम फ़ेल हो गई हो ? क्यों यही बात है ना ?
सुशीला	यह बात नहीं है । बेचारी खुशी-खुशी अपना रिजल्ट सुनाने आई तो उन्होंने झट से कह दिया (नकल करती हुई) ले आई न थर्ड क्लास? (सत्येन्द्र पिता की ओर एक दृष्टि डालता है) कोई पूछे या न पूछे, अपनी भविष्यवाणी झट से कर डालते हैं, जैसे कि कोई बड़े भारी ज्योतिषी हों ।
श्याम	अच्छा बाबा, ग़लती हुई । खुश !
सुशीला	हम तो खुश ही खुश हैं । अगर तुम्हारा वहम चैन लेने दे, तब ना । खामखाँ सुधा को नाराज कर दिया ।
सत्येन्द्र	(सुधा का चेहरा ऊपर उठाने की चेष्टा करता हुआ) अच्छा, जाने दो । हाँ, सुधा ! जरा मुस्कराओ तो । हाँ, हँसी आई, आई हँसी, ए SSS, हँस गई । (सुधा मुस्कराकर सत्येन्द्र का हाथ हटा देती है) बड़े लोगों की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए ।
सुशीला	सत्येन्द्र ! डॉक्टर ने क्या कहा ?
सत्येन्द्र	मैंने उन्हें सारी बात बताई तो वे हँस पड़े और बोले - 'चिन्ता की कोई बात नहीं है । बस डटकर दूध और पानी पिलाए जाओ ।' माँ,

आज मैं ही सुधा के बदले सबको मिठाई खिलाऊँगा। पिताजी दूध और पानी पीएँगे और हम सब मिठाई उड़ाएँगे। (मिठाई का डिब्बा खोलता हुआ) लो सुधा, जल्दी-से मिठाई खा लो, नहीं तो अभी तुम्हारी सहेलियाँ आकर सारा घर सिर पर उठा लेंगी।
[सुधा मिठाई उठाकर खाती है और एक-एक टुकड़ा माँ तथा सत्येन्द्र को खिलाती है।]

श्याम डॉक्टर बकवास करता है। किस उल्लू के पास गया था?

सत्येन्द्र राम चाचा के पास।

सुशीला (मुस्कराकर) तुम्हारे खास भाई के पास।
[सत्येन्द्र और सुधा बाहर चले जाते हैं।]

श्याम तुम्हें जरा भी तमीज नहीं आयी। बच्चों के सामने ऐसी बात करती हो।

सुशीला यह तमीज तुममें है?

श्याम छोड़ो भी। सारा जीवन ऐसी ही बकबक में बीतेगा लगता है।

सुशीला मुझे भी लगता है।

श्याम तुम्हारे पास कोई काम नहीं है?

सुशीला तुम्हारे पास ही कोई काम नहीं है। खाली दिमाग़ शैतान का घर।

श्याम हाँ, मैं शैतान हूँ। तुम टलो यहाँ से।

सुशीला तुम्हारे पास आना ही कौन चाहता है? तुम्हीं हो, जो एकांत पाकर सबको बुलाने के लिए कुछ न कुछ करतब कर लेते हो।

श्याम (हाथ जोड़कर माथे से लगाते हुए) अच्छा बाबा, माफ़ करो। मेरा हार्ट फ़ेल हो जायेगा तो भी नहीं बुलाऊँगा।

सुशीला फिर वही

सत्येन्द्र (प्रवेश कर) पिताजी, करोड़ीमल ने

श्याम क्या काम बताया है?
[सुशीला और सत्येन्द्र एक-दूसरे का मुँह देखने लगते हैं]

सुशीला फिर वही

सत्येन्द्र मैं उनकी दूकान पर गया तो उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे लिए

श्याम मालूम है, मुझे मालूम है। मुझे बताकर गया है कि उसने तेरे लिए नौकरी की बात कर ली है।

सत्येन्द्र (कुछ क्षण रुककर) आपमें सुनने का धैर्य क्यों नहीं है ?

श्याम बता, क्या नयी बात उसने कही है ?

सुशीला तुम दो मिनट चुप रहना सीख लो तो घर में बड़ी शान्ति हो जाय।

श्याम नहीं, मैं हमेशा के लिए खामोश हो जाऊँ तो हमेशा के लिए शान्ति हो जाय।

सुशीला तुम्हारे मुँह से कभी कोई शुभ बात नहीं निकलती।

सत्येन्द्र आप लोग लड़ते रहिए, मैं जा रहा हूँ।

श्याम कहाँ ? कितनी बार जायेगा। सारे दिन बाहर घूमता रहता है।

सत्येन्द्र और क्या करूँ ? घर में शान्ति हो तो रहूँ।

सुशीला यही तो मैं कहती हूँ।

श्याम तुमने ही सारा माहौल बिगाड़ रखा है। मैं अशान्ति का कारण हू, तो मैं ही घर से चला जाता हूँ। (खड़े हो जाते हैं।)

सुशीला हाँ, जाओ थोड़ी देर बाद कुछ और करामात करके लौट आओगे। हाँ सत्येन्द्र, क्या कहा लालाजी ने ?

सत्येन्द्र (जेब से लिफ़ाफ़ा निकालकर) उन्होंने मेरे लिए यह अपॉइण्टमेंट लैटर मँगवा दिया है। कल से मैं लैक्चरर हो जाऊँगा।

श्याम हाँ, यों घूमफिरकर लैक्चररशिप

सुशीला जाओ, तुम बाहर घूम आओ। ताजी हवा मिलेगी तो दिमाग स्वस्थ रहेगा।

श्याम यो तुम समझती हो कि मेरा दिमाग

सुशीला मैं कुछ नहीं समझती। चलो सत्येन्द्र, हमीं घूम आते हैं।

[दोनों बाहर निकल जाते हैं]

शोध-विधाता

डॉ० मधुसूदन शर्मा	किसी विश्वविद्यालय में शोध निर्देशक
फणीन्द्र	शोध छात्र
अनूप	शोध छात्र
उमा	प्राध्यापिका पद की प्रत्याशी
उमा के पिताजी	

[कालीन तथा सोफ़ों से सुसज्जित कमरा। सामने खिड़की, दायीं-बायीं ओर दरवाज़े। तीनों पर नीले रंग के पर्दे लटके हैं। एक कोने में लैम्प शेड रखा है। सामने की दीवार पर प्रकाशित ट्यूब लगी हुई है। एक-दो साहित्यकारों के चित्र भी कलात्मकता के साथ टँगे हुए हैं। कमरे के बीच में रखी मेज़ पर टेपरिकार्डर से एक लोकगीत की लय निकलकर गूँज रही है। कुर्ता, धोती, चश्माधारी फणीन्द्र लोक-गीत की पंक्तियाँ लिखता जा रहा है। दायें द्वार से धोती-कुर्ता पहने डॉ० मधुसूदन शर्मा का प्रवेश।]

डॉ० शर्मा — कहो, फणीन्द्र! कितना नोट कर लिया?

फणीन्द्र — (टेप रिकार्डर बन्द कर खड़ा होता हुआ) जी अभी तो

डॉ० शर्मा — अरे, बैठो बैठो। अपना काम किये जाओ और बातें भी किये जाओ। कितना लिख लिया? (बीच के सोफ़े पर बैठ जाते हैं)

फणीन्द्र — (बैठकर) जी अभी आधा और रह गया है।

डॉ० शर्मा — कौन सी पंक्ति चल रही है? ज़रा सुनवाओ तो।

[फणीन्द्र टेपरिकार्डर का बटन दबाता है, जिससे लोकगीत की ये पंक्तियाँ निकलती हैं --

हम्बै हम्बै कि लँगुरिया रे ! तेरी धनि खाइ लई कारे नाग नै।अरु कबु खाई, कबु डसि लाई। अरु कबु मारी फुसुकारि ! लगुरिया रे ! तेरी धनि खाइ लई कारे नाग नै।

डॉ० शर्मा — (अन्तिम पंक्ति समाप्त होने से पहले) बस, बस ! (फणीन्द्र टेपरिकार्डर का बटन दबाकर बन्द कर देता है।) इन पंक्तियों का अर्थ तो समझ में आ ही गया होगा?

फणीन्द्र — जी, कुछ थोड़ी सी

डॉ० शर्मा — अरे, इसका अर्थ समझने में क्या कठिनाई है ? साफ़ है -'अरे लँगुरिया, तेरा धन काले नाग ने खा लिया।' यह लोकगीत है। अनपढ़ लोगों के गीत हैं, इसलिए इसकी भाषा व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। नोट करो। यह नोट करने लायक बात है। थीसिस के भाषा शैली वाले अध्याय में यह बात अवश्य लिखना।

फणीन्द्र — (कुछ सकोच के साथ) लेकिन डॉ० साहब ! मैं तो इस पंक्ति का अर्थ कुछ और समझता हूँ।

डॉ० शर्मा — क्या ?

फणीन्द्र — यही कि अरे लगुरिया ! तेरी स्त्री काले नाग ने काट ली। आगेवाली पंक्तियों से भी इसी अर्थ की पुष्टि होती है।

डॉ० शर्मा — (लापरवाही से) हाँ SS, यह अर्थ भी चल सकता है। वैसे मेरा अर्थ ग़लत नहीं है। यह तो आलोचक धर्म है कि वह ऐसा अर्थ खोज निकाले, जिससे आलोच्य पंक्तियों का लेखक भी चमत्कृत और मुग्ध हो जाए। मैंने यही सोचकर अर्थ किया था अच्छा, खैर। भई, सचाई तो यह है कि सारा काम तो शोध छात्र को ही करना होता है, निर्देशक तो केवल निर्देशन के लिए होता है। निर्देशक के पास बीसियों शोध छात्रों की भीड़ होती है। उसे बीसियों विषयों पर शोध कार्य करवाना होता है। उन सब विषयों की उसे जानकारी हो ही, यह आवश्यक नहीं है।

फणीन्द्र — सो तो है ही। (मुस्कराहट दबाकर) डॉ० साहब ! मुझे डॉ० विनोद प्रकाश मित्तल मिले थे। यह कह रहे थे कि आप उनसे एक मिनट के लिए मिल आयें।

डॉ० शर्मा — क्यों ? क्या कुछ और भी कहा था ?

[हाथों में फल तथा बगल में फाइलें और पुस्तकें लिए [illegible] अनूप का प्रवेश । सामान एक ओर रख देता है ।]

अनूप — (डॉ० शर्मा के चरण छूकर) प्रणाम, गुरुजी ।

डॉ० शर्मा — (वरदान की मुद्रा में हाथ उठाकर) चिरंजीव रहो । कब आये बेटा, अनूप ?

अनूप — कल रात को ही आ गया था, गुरुजी । ट्रेन लेट हो गयी, इसलिए रात को साढ़े ग्यारह बजे पहुँच पाया । आप तो सो चुके होंगे, यह सोचकर मैं सीधा छात्रावास चला गया था ।

डॉ० शर्मा — अरे अरे, तुम तो बड़े मूर्ख हो । मैं रात के एक बजे तक अध्ययन करता हूँ, यह तुम्हें मालूम नहीं है ? मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। रात को खाना बनवाकर रखा था और आज दिन में भी बनवाया, लेकिन तुम्हारे न आने पर सारा का सारा भोजन व्यर्थ हो गया । अब भी खाना खाकर आये होगे ?

अनूप — ऊँ हाँ हाँ, जी खाकर आया हूँ ।

डॉ० शर्मा — (खड़े होते हुए) अच्छा । बैठो । मैं अभी डॉ० विनोद प्रकाश से मिलकर आया । न जाने क्यों बुलाया है ।

[बाहर निकल जाते हैं । अनूप सामनेवाले सोफ़े पर बैठ जाता है ।]

अनूप — (फणीन्द्र की पीठ पर धपत जमाता हुआ) क्या हो रहा है ?

फणीन्द्र — (मुस्कराकर) गुरुवर की बुद्धि परीक्षा ले रहा था । अभी टेपरिकार्डर पर एक लोकगीत तुम्हारे गुरुजी को सुनाया तो वह मुझे उसका उल्टा सीधा अर्थ बताने लगे । मैंने ठीक अर्थ बताया तो कहने लगे कि (नकल करता हुआ) हां, यह अर्थ भी चल सकता है।

अनूप — (हँसता हुआ) भाई गुरु तो तुम्हारे भी हैं केवल मेरे तो नहीं ।

फणीन्द्र — नहीं भई, नहीं । गुरु तो वह केवल तुम्हारे हैं । जब आते हो तो फल लाते हो और बड़े भक्तिभाव से चरणस्पर्श करते हो ।

अनूप — और यह कोने में रखा टेबिल लैम्प यह दीवार पर लगी ट्यूब यह कालीन किसने दिये हैं ?

फणीन्द्र - (झेंपता हुआ) हैं हैं भई, क्या करें। न दें तो पी एच० डी० कैसे मिले ?

अनूप : बस, मैं और किसलिए ले दे रहा हूं ? रही भक्तिभाव की बात, सो तो तुम जानते ही हो कि असलियत क्या है। जैसी जाकी कौमरी, तैसे ताके गीत। गुरु अपने ज्ञान का, अपने प्रेम का प्रदर्शन करते हैं तो हम भक्तिभाव का। मुझे पता था कि डॉ मधुसूदन शर्मा उस मिट्टी के बने हुए नहीं हैं जिसमें प्रेम, दया अथवा ज्ञान के कीड़े रहे हों। मेरे लिए रात के एक बजे तक जागना, मेरे लिए खाना बनवाना- सब बकवास है। दो साल हो गये हमें इनके घर आते जाते कभी एक चाय का प्याला भी पिलाया है ?

फणीन्द्र यार, तुम तो मुझपर ऐसे बरस रहे हो जैसे मैं ही तुम्हारा निर्देशक हूँ।

अनूप (हँसकर सोफ़े पर अधलेटा सा हो जाता है) नहीं, मैं तो एक बात कह रहा हूँ। इन्हीं डॉ शर्मा से एक शोध छात्र उलझ गया था। वह अपने विषय को इनसे अधिक जानता था, इसलिए इनकी बात जब तब काट देता था। उसका फल उसे क्या मिला ? जानते हो? वह अभी पाँच साल बीत जाने पर भी पी एच०डी० नहीं कर पाया है। उसे लटका रखा है।

फणीन्द्र अच्छा, तुम हीरालाल झण्डू की बात कह रहे हो।

अनूप हाँ, वही। वह भी एक नम्बर का स्वाभिमानी लड़का है। अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ विश्वविद्यालय के आवासक्षेत्र में ही जमा हुआ है और उसने अपने लिए अस्थायी और अपनी पत्नी के लिए स्थायी नौकरी भी खोज ली है। देखें, उसका संघर्ष कब फलदायी होता है।

फणीन्द्र यार, उसका शोध प्रबन्ध तो अच्छा है। मैंने स्वयं पढ़कर देखा है।

अनूप लेकिन तुम्हारे पढ़ने से उसको पी एच०डी० की उपाधि तो नहीं मिल जाएगी। यहाँ तो सारे कुएँ में ही भाँग क्या, अफ़ीम ही पड़ी हुई है। यहाँ के हैड, रीडर, लैक्चरर सभी बेताज के बादशाह हो रहे

हैं। आपस में तो मिलकर रह ही नहीं सकते। एक दूसरे की टाँग खींचने के अवसर ताकते रहते हैं और इन भैंसों की लड़ाई में पिस जाते हैं हम बेचारे शोध छात्र। ये लोग एक दूसरे के शोध छात्रों की पी एच०डी० न होने देने का प्रयत्न करते रहते हैं। इनकी राजनीति हमें व्यर्थ ही पीसती रहती है।

फणीन्द्र (जैसे कुछ याद आ गया हो) हाँ, तुम इलाहाबाद गये थे अपने परीक्षक से मिलने, क्या रहा?

[डॉ० मधुसूदन शर्मा का प्रवेश]

डॉ० शर्मा (आकर एक सोफ़े पर बैठते हुए) हाँ, क्या रहा? डॉ दीपचन्द वर्मा से मिले थे?

अनूप (उदासी के साथ) जी, गया तो था, लेकिन काम नहीं बना।

डॉ० शर्मा (चौंककर) क्यों? (जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट होठों में दबाते हैं। अनूप जेब से लाइटर निकालकर जलाता है और आगे बढ़ाता है। डॉ शर्मा उससे सिगरेट जलाकर धुएँ का एक गोला ऊपर हवा में उगल देते [redacted] अनूप लाइटर बुझाकर हाथ में घुमाता रहता है।) क्या तुम भी सिगरेट पीते हो?

अनूप जी नहीं, मैं यह आपके लिए इलाहाबाद से लाया हूँ।

डॉ० शर्मा (एक हाथ आगे बढ़ाकर) दिखाना।

अनूप (लाइटर देता हुआ) लीजिए, आप रख लीजिए। मैं आपको देने ही वाला था।

डॉ० शर्मा : (लाइटर जेब में डालकर) हाँ, फिर क्या हुआ? तुम्हारी बात तो अधूरी ही रह गयी।

अनूप : गुरुजी, जब मैं इलाहाबाद में डॉ दीपचन्द से मिला तो वह अपने शोध छात्रों से घिरे बैठे थे।

डॉ० शर्मा : हाँ, एक सौ बीस लोगों को पी एच०डी० करा रहा है, मजमा लगा ही रहता होगा। फिर क्या हुआ।

अनूप : मैंने एक नौकर के हाथों आपका पत्र उन तक पहुँचाया तो उन्होंने उस नौकर के द्वारा कहलवा दिया कि शाम को आना। शाम को गया

तो सुबह आने को कहला दिया। दूसरे दिन सवेरे गया तो दरवाजे पर खड़े खडे ही बातचीत की। वह कहने लगे कि तुम्हारे गुरुवर मेरे मित्र डॉ कमलसिंह शर्मा को सुपरसीड कर यूनीवर्सिटी के हिन्दी विभागाध्यक्ष बनना चाहते हैं।

डॉ० शर्मा (साश्चर्य) उसे कैसे पता चल गया ?

फणीन्द्र कमलसिंह शर्मा ने उन्हें पत्र में लिख दिया होगा, या वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के गुजराती के बोर्ड आफ स्टडीज के सदस्य के रूप में अभी कुछ दिन पहले गये थे, तब कह आये होंगे ?

डॉ० शर्मा (फणीन्द्र की ओर देखते हुए) हाँ, यह हो सकता है। बड़ा बदमाश आदमी है।

अनूप इतना ही नहीं, वह ढिंढोरा भी पीट आये हैं कि वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष पाण्डे जी उन्हें पुत्रवत् मानते हैं और उन्हीं को अपने बाद हिन्दी विभागाध्यक्ष बनाना चाहते हैं, लेकिन आप अनेक षड्यन्त्र रचकर उन्हें बदनाम करते रहते हैं ताकि वह विभागाध्यक्ष न बन पायें।

डॉ० शर्मा कौन उस मूर्ख को विभागाध्यक्ष बनाना चाहता है, वैसे ही फूक लेता फिर रहा है। तुम लोग तो अच्छी तरह जानते हो कि पाडे जी उसकी शक्ल तक देखना पसन्द नहीं करते, लेकिन वह छाया की तरह जबर्दस्ती उनके पीछे लगा रहता है। अपने घर की खिड़की से झाँकता रहता है कि कब पाडे जी की कार गैरेज से निकले और वह लपककर उसमें बैठे। पांडे जी तो बेचारे उसके बाद ही अपनी कार में बैठ पाते हैं। उनके कार में घुसने के लिए झुकते ही वह बत्तीसी चमकाकर 'आइए, आइए' कहता है, ताकि पाडेजी उससे कुछ कहें नहीं। पांडेजी ठहरे भोले बाबा। उसकी चाटुकारिता का आशय समझ नहीं पाते। समझ भी पाते होंगे तो सज्जनतावश चुप रहते हैं। उसकी वजह से ही तो पांडेजी आज बदनाम हो रहे हैं कि वह कमलसिंह को छाती से चिपकाए फिरते हैं।

अनूप : डॉ साहब! पांडेजी का ड्राइवर कमलसिंह के ऐसे-ऐसे चरित्र उघाड़ता है कि सुनकर हैरानी होती है कि आदमी इतना अधिक नीच भी हो सकता है।

फणीन्द्र — एकाध बात बताओ तो

डॉ० शर्मा — जाने भी दो। उसके दुश्चरित्र की गाथाएँ लिखने के लिए यदि ब्रह्मा भी उतर आयें तो नहीं लिख सकते। इससे अधिक और क्या दुश्चरित्र हो सकता है कि अपने बीबी बच्चों को आगरा छोड़ रखा है और यहाँ छह कमरों के मकान में अकेला रहता है, जहाँ उनके शिष्य शिष्याएँ आकर अहर्निश सेवा करते हैं। (फणीन्द्र सिर झुका लेता है) हाँ, तो, अनूप ! तुम्हारा जाना व्यर्थ ही रहा।

अनूप — जी हाँ, लेकिन वह कह रहे थे कि यदि आप कमलसिंह शर्मा का विरोध करना छोड़ दें तो वह मेरे अनुकूल रिपोर्ट तुरन्त भेज दें।

डॉ० शर्मा — कौन कह रहा था ?

अनूप — वही डॉ दीपचन्द।

डॉ० शर्मा — अच्छा। (कुछ क्षण सोचकर) यदि वह मुझसे और तुमसे ब्लैकमेल करना चाहता है तो यही सही। तुम्हारी रिपोर्ट आने तक मैं चुप रहता हूँ, बाद में कमलसिंह की खाल खींचूँगा। भई, तुम लोग मेरे पुत्र के समान हो, इसलिए तुम्हारा हित तो मुझे सोचना ही होगा, भले ही मुझे कितनी ही हानि उठानी पड़े। (कुछ क्षण चुप्पी के बाद) हाँ, तुम लोगों को पता ही है कि मैं अभी डॉ मित्तल से मिलकर आया हूँ ?

अनूप और फणीन्द्र — जी हाँ।

डॉ० शर्मा — वह संस्कृत में-पी एच०डी० हैं और अब हिन्दी में भी पी एच०डी० करना चाहते हैं। उनके पास इतना समय नहीं है कि मोटा पोथा स्वयं लिख सकें, इसलिए चाहते हैं कि तुम दोनों मिलकर लिख दो। (फणीन्द्र से) अनूप के पास आजकल कोई काम नहीं है और तुम्हारा काम अब समाप्तप्राय है। जब तक नौकरी नहीं मिलती तब तक तुम लोग उनका शोधप्रबन्ध ही लिख डालो। व्यस्त रहोगे और कुछ आमदनी भी हो जाएगी। वह खर्च करने को तैयार हैं। मैंने उनसे पाँच हजार की बात कह दी है। पन्द्रह पन्द्रह सौ तुम

दोनों के लिए और दो हजार अपने लिए तय कर आया हूं। ठीक है ना ? (अनूप और फणीन्द्र एक-दूसरे की ओर देखकर सिर झुका लेते हैं) इसमें सकोच या सोचने की कोई बात नहीं है। बहुत से लोग ऐसा व्यापार कर रहे हैं। तुम समझते हो कि आजकल कोई तुम्हारी तरह परिश्रम करके ही पी-एच०डी० हो जाता है ? ना यदि ऐसा समझते हो तो तुम भ्रम में हो। यू०जी०सी० की कृपा से अब तो दस पन्द्रह हजार तक रेट पहुँच गये हैं। यह मेरे मित्र हैं, इसलिए उनके लिए यह रियायत कर दी है।

फणीन्द्र — लेकिन डॉ साहब

डॉ० शर्मा — अरे भई, इसमें शर्म की अथवा ननुनच की कोई आवश्यकता ही नहीं है। मैं तुम्हें उन थीसिसों के नाम बता दूँगा, जो अभी छपी नहीं है और न कभी छप सकती हैं, क्योंकि परीक्षकों ने उनके प्रकाशन की अनुमति नहीं दी है। उनके एक एक अध्याय निकालकर जोड दोगे तो भी शोधप्रबन्ध तैयार हो जायेगा। (बायें द्वार से उमा का प्रवेश। उसे देखकर फणीन्द्र और अनूप एक-दूसरे की ओर देखते हैं और सिर झुका लेते हैं। डॉ शर्मा की बाँछें खिल जाती हैं। आइए डॉ उमाजी, बैठिये। (अपने पास बैठने का संकेत करते हैं। उमा सकुचाती हुई सोफे के एक छोर पर बैठ जाती है) सुनाइये, सब कुशल से तो है? (उमा क्रमशः फणीन्द्र, अनूप और डॉ शर्मा की ओर देखकर सिर झुका लेती है। डॉ शर्मा जैसे सब कुछ समझ गये हों) अच्छा फणीन्द्र और अनूप ! तुम लोग अब जाओ। कल सवेरे आना। (फणीन्द्र टेपरिकार्डर समेटकर उठा लेता है और अनूप के साथ 'प्रणाम' कहकर निकल जाता है। डॉ शर्मा उमा की ओर थोड़ा खिसक आते हैं।) हाँ अब सुनाओ।

उमा — (जबरन मुस्कराती हुई) जी, सब ठीक है। कल इंटरव्यू है। आपका आशीर्वाद लेने आई हूं। आप यदि पाण्डे जी से मेरे विषय में कुछ कह दें तो मेरी नियुक्ति निश्चित है।

डॉ० शर्मा — (उमा की ओर खिसकते हैं। उमा खड़ी हो जाती है) अरे बैठो। खड़ी क्यों हो गयीं ? तुम तो अपनी बेटी के समान हो, मुझसे कैसा

सकोच ? मैं आजकल जरा ऊँचा सुनने लगा हूँ, इसलिए तुम्हारे पास खिसक रहा था । (उमा लाचार सी बैठ जाती है) हाँ, मैं तुम्हारी सहायता नहीं करूँगा तो कौन करेगा, किसकी करूँगा ? तुम तो अपनी हो । पूरी सहायता करूँगा । विशेषज्ञ कौन कौन आ रहे हैं?

उमा — (दृष्टि झुकाए हुए) डॉ शिरीष और आचार्य विपिन बिहारी लाल।

डॉ० शर्मा — अरे, ये दोनों तो अपने लँगोटिया यार हैं । ये तो अपनी मुट्ठी में हैं।

उमा — (आशान्वित होकर डॉ शर्मा की ओर देखती है) बस मैं इसीलिए आपके पास बड़ी आशा लेकर आयी हूँ । दो साल से मेरी प्रथम श्रेणी और पी एच०डी० कोई नौकरी नहीं दिलवा सके हैं, अब शायद काम बन जाए ।

डॉ० शर्मा — बनेगा क्यों नहीं । (बिजली चली जाती है लेकिन खिड़की में से सड़क का प्रकाश आता रहता है) बिजली चली गयी । कोई बात नहीं । अभी आ जायेगी । इटरव्यू के बारे में चिन्ता मत करो ।

[कुछ क्षण स्तब्धता]

उमा — (घबराई आवाज में) यह क्या करते हैं, डॉ सा'ब !

डॉ० शर्मा — अरे, बैठी रहो । घबराती क्यों हो ?

उमा — (कुछ तीखे स्वर में) डॉ सा'ब !

[खिड़की के पीछे से फणीन्द्र और अनूप की छायाएँ उभरती हैं]

डॉ० शर्मा — बैठो भी । मैं क्या तुम्हें खा जाऊँगा ? नौकरी ऐसे ही मिल जाती है क्या ? (आवाज में कम्पन) बैठ जाओ । थोड़ी देर में बिजली आ जायेगी ।

उमा — (चीखती हुई) छोड़िए, मुझे छोड़िए । पिताजी ! जल्दी आइए ।

[बिजली आ जाती है । खड़ी हुई उमा कपड़े ठीक करती है]

डॉ० शर्मा — (सकपकाकर खड़े हो जाते हैं) क्या तुम्हारे पिताजी भी आये हैं ? तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?

[छड़ी हाथ में लिये उमा के पिताजी का प्रवेश]

पिताजी — क्या बात है ? क्या हुआ ?

[कभी डॉ॰ शर्मा और कभी उमा की ओर देखते हैं। फणीन्द्र और अनूप खिड़की से एक ओर हो जाते हैं।]

उमा (आँखों में आँसू आ जाते हैं। डॉ॰ शर्मा की ओर संकेत करती हुई) ये ... ये ... मुझे ... (पिताजी के कन्धे पर माथा टिकाकर फफक उठती है)

डॉ॰ शर्मा (मुस्कराहट, घबराहट और सकपकाहट के सम्मिलित भाव से) आइए, आइए। उमाजी ने मुझे बताया ही नहीं था कि आप ... आप बैठिए ना।

पिताजी (उमा को एक ओर हटाकर आगे बढ़ते हुए) कुत्ते, नीच कमीने ... (हाथ की छड़ी काँपने लगती है) तू इसी बलबूते, इसी चरित्र पर यूनीवर्सिटी में रीडर बना हुआ है?

डॉ॰ शर्मा (चेहरे पर पसीना झलक आता है) अरे, आप तो व्यर्थ ही गाली गलौज करने लगे। आपको कुछ गलतफहमी हुई है।

पिताजी (भड़ककर) मुझे गलतफहमी हुई है? कमीने, हरामी! आ, तुझे बताऊँ कि गलतफहमी किसे हुई है।

[फणीन्द्र और अनूप मुस्कराते हुए फिर खिड़की से झाँकने लगते हैं और उमा के पिताजी मारने के लिए छड़ी उठा लेते हैं। धीरे-धीरे मंच पर अंधकार बढ़ने के साथ-साथ चट-चट की आवाज और डॉ॰ शर्मा की घबराई आवाजें उभरती हैं--'अरे, सुनिए तो सही', 'ओ हो, ठहरिये तो सही', 'यह आप क्या कर रहे हैं?']

साक्षात्कार

अध्यक्षा	साक्षात्कार मंडल के सदस्य
इंजीनियर	"
कालू	चपरासी
कृपाशंकर	सैनेटरी इन्सपैक्टर पद के लिए प्रत्याशी
दीनानाथ	"
परमिन्दर कौर	"

[मंच के बीच में दो कुर्सियों पर अध्यक्षा और इंजीनियर बैठे हुए हैं। उनके सामने एक मेज रखी है, जिसपर कुछ कागज पत्र रखे हुए हैं। मेज के सामने प्रत्याशियों के बैठने के लिए एक कुर्सी रखी है। कालू आवश्यकतानुसार दरवाजे से आता-जाता रहता है और आवश्यकता न होने पर बाहर खड़ा रहता है।]

अध्यक्षा : इंजीनियर साहब क्या समय हो गया ?

इंजीनियर (घड़ी देखकर) साढ़े दस हो गये।

अध्यक्षा : कोई बात नहीं। इंटरव्यू का समय हमने दस बजे रखा था आधा घण्टा ही तो लेट हुए हैं। अब तक सारे कैण्डिडेट्स आ ही गये होंगे।

इंजीनियर जरा पता तो लगाइये कितने कैंडिडेट्स आ गये हैं ?

अध्यक्षा : लीजिए, अभी पता लगाती हूँ। (घण्टी बजाती है) कालू

कालू : (प्रवेश कर) जी मैडम !

अध्यक्षा : जरा देखकर तो आओ कितने लोग इंटरव्यू देने आ गये हैं ?

कालू : जी, अभी देखकर बताता हूँ। (चला जाता है)

अध्यक्षा : इंजीनियर साहब ! आपको एक बात मालूम है ?

इंजीनियर : क्या ?

अध्यक्षा : यही कि हमने एक सैनेटरी इन्सपैक्टर की पोस्ट के लिए न्यूनतम एजुकेशन मैट्रिक रखी थी किन्तु मैट्रिक तो कोई जरूरी है नहीं।

अधिकतर इंटर और बी०ए० हैं। इतना ही नहीं, एक एम०ए० ने भी एप्लाई किया है।

इंजीनियर — अच्छा !

अध्यक्षा — हाँ।

इंजीनियर — और एप्लिकेंट्स कितने थे ?

अध्यक्षा — यही कोई एक हजार !

इंजीनियर — (आँखें फाड़कर) एक हजार ! आपने बुलाया कितनों को है ?

अध्यक्षा — यही बीस एक को। (थोड़ा रुककर) इंजीनियर साहब, हद हो गई। बेरोजगारी इस कदर बढ़ रही है कि क्या कहा जाय। इसी पोस्ट की बात लीजिए। मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि इस पोस्ट के लिए लड़कियाँ भी एप्लाई करेंगी। किन्तु लड़कियों ने भी एप्लाई किया है।

इंजीनियर — अच्छा, आई सी।

अध्यक्षा — जी हाँ, और हमने दो तीन को बुलाया भी है।

कालू — (अन्दर आकर) सा'ब !

अध्यक्षा — हाँ, तो कितने लोग आ गये हैं ?

कालू — तीन हैं। (एक कागज देकर) मैं नाम लिख लाया हूँ। यह लीजिए।

अध्यक्षा — (साश्चर्य कागज लेकर नाम पढ़ती हैं) बस ! ठीक है, तो इंजीनियर साहब, बुलाया जाय न अब इन लोगों को ?

इंजीनियर — हाँ, हाँ, जल्दी काम निबट जाय, वही अच्छा है।

अध्यक्षा — अच्छा, कालू ! जाओ, (कागज पर देखकर) कृपाशंकर को भेजो।

इंजीनियर — प्रेसिडेन्ट जी, आप कैंडिडेट्स से योग्यताओं के विषय में प्रश्न करें और मैं अनुभव तथा हाबीज के विषय में पूछूँगा।

अध्यक्षा — ठीक है।

कृपाशंकर — (प्रवेशकर) नमस्ते, सर !

अध्यक्षा — आइए, कृपाशंकर जी, तशरीफ़ रखिए।

कृपाशंकर — जी धन्यवाद। (कुर्सी पर बैठ जाता है)

अध्यक्षा — तो आप एम०ए० हैं ?

कृपाशंकर — जी हाँ।

अध्यक्षा — एम०ए० में आपने कौन सा डिवीजन प्राप्त किया था ?

कृपाशकर — अ अ थर्ड डिवीजन, मैडम। जरा ऐसा हुआ, मैडम, कि परीक्षा के दिनों में मुझे जरा जुकाम हो गया था। हाँग-काँग फ्लू की शुरूआत समझिये परीक्षा भवन में दनादन छींक पर छींक आ रही थीं। जो याद था न, सब भूल गया, वर्ना अपनी तैयारी तो फर्स्ट क्लास की थी।

अध्यक्षा — अच्छा अच्छा, कोई बात नहीं, हमें आपसे पूरी सहानुभूति है। तो, आप को यह तो पता ही होगा कि यह सेनेटरी इन्सैक्टर की पोस्ट है?

कृपाशकर — जी हाँ मुझे पता है।

अध्यक्षा — तो आपको यह भी पता होगा कि इसमें काम क्या होता है?

कृपाशकर — जी हाँ, मुझे यह भी पता है। गली मौहल्लों में सफ़ाई कर्मचारियों के काम को देखना भालना गदगी रोकना, प्रदूषण पर नजर रखना

इजीनियर — आप एम०ए० होने के बावजूद यह काम करना पसन्द करेंगे?

कृपाशकर — लाचारी है सर!

इजीनियर — किन्तु इस पोस्ट के लिए चुनाव तो हम योग्यता एव अनुभव के आधार पर करेंगे, लाचारियाँ तो सबके पास हैं। (थोड़ा रुककर) इस काम के अनुकूल कोई अनुभव आपको है?

कृपाशकर — इस पोस्ट का अनुभव तो खैर, साहब, तभी होगा, जब आप यह नौकरी मुझे दे देंगे, मगर यदि आप ठीक इसी तरह के काम को अनुभव मानें तो मैं कह सकता हूँ कि ऐसा काम मैंने काफ़ी दिनों तक किया है।

अध्यक्षा — क्या? आपका मतलब यह है कि आपने सेनेटरी इन्सैक्टर का काम पहले भी किया है?

कृपाशकर — जी, मैंने अर्ज किया है कि सेनेटरी इन्सैक्टर का काम तो नहीं किया, पर कुछ ऐसा ही काम किया है। दरअसल मैं सोशल वर्कर रह चुका हूँ। और आप जानते ही हैं कि इसमें सफ़ाई का काम भी करना होता है। समाज सेवा के रूप में अब तक मैं अनेक मुहल्लों की सफ़ाई कर चुका हूँ।

अध्यक्ष — आई सी।

कृपाशंकर — (कुछ उत्साहित होकर) जी हाँ, मैंने अनेक समाजसेवी संस्थाओं की ओर से अनेक बार श्रमदान में भाग लिया है।

इंजीनियर — लेकिन इस पोस्ट पर तो श्रम करना नहीं, करवाना होता है। आपको कुछ आर्गनाइजेशन का भी अनुभव है?

कृपाशंकर — (उत्साह से) जी हाँ, कालेज के दिनों में मैंने कई बार स्ट्राइक्स आर्गनाइज की थीं। लड़के मेरी मुट्ठी में इस तरह रहते थे कि कालेज के प्रिंसिपल और लैक्चरर्स मुझसे घबराते थे। आपको अगर कोई जुलूस निकलवाना हो, स्ट्राइक करवानी या तुड़वानी हो, या ऐसा ही कोई काम करवाना हो तो मैं अपनी पूरी योग्यता प्रमाणित कर सकता हूँ।

अध्यक्ष — (मुस्कराकर) इंजीनियर साहब! यह तो बड़े प्रतिभावान् व्यक्ति हैं। अच्छा कृपाशंकर जी, धन्यवाद। अब आप जा सकते हैं।

कृपाशंकर — जी, तो फिर मैं आशा लेकर जाऊँ ना?

अध्यक्ष — हम डाक से अपना निर्णय भेज देंगे?

कृपाशंकर — अच्छा जी लेकिन आप मेरे पक्ष में ही निर्णय लीजिए। मैं बड़े काम का आदमी हूँ। अच्छा, नमस्कार। (उठकर चला जाता है)

इंजीनियर — यह तो बड़ा भयंकर लड़का है। पहले कह रहा था कि जुकाम और हाँग काँग फ्लू की वजह से सब कुछ भूल गया, इसलिए फर्स्ट क्लास लेते लेते रह गया। शायद इन्हीं खुराफ़ातों की वजह से थर्ड क्लास आयी होगी। लीडरी के शौक ने साहबजादे को कहीं का नहीं रखा है।

अध्यक्ष — (हँसकर) बिलकुल ठीक कहा आपने। ऐसे आदमी को लगाकर हमें कर्मचारियों में हाँग काँग फ्लू नहीं फैलाना है। (दोनों की सम्मिलित हँसी) कालू... कालू

कालू — (प्रवेश कर) जी सा'ब!

अध्यक्ष — दीनानाथ को बुलाओ। (कालू निकल जाता है)

इंजीनियर — यह शायद बी०ए० पास लड़का है।

अध्यक्ष — (कागज पर देखकर) जी हाँ।

दीनानाथ	(अन्दर आता हुआ) नमस्ते मैडम, नमस्ते सर !
अध्यक्ष	आइये, बैठिए।
दीनानाथ	अच्छा मैडम, अच्छा सर ! (बैठ जाता है)
अध्यक्ष	तो आपने बी०ए० किया है ?
दीनानाथ	जी हाँ मैडम, जी हाँ सर !
अध्यक्ष	बी०ए० में कौन कौन से विषय थे आपके ?
दीनानाथ	जी हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजी।
अध्यक्ष	आपने संस्कृत पढ़ी है तो जरा अपने नाम के अलग अलग हिज्जे करके बताइये कि उसका अर्थ क्या है ?
दीनानाथ	(ऊपर मुँह उठाकर सोचता हुआ) जी जी अ अ दी ना ना थ ही पहले थ बाद में। दी नाना थ। थ माने थाली या थप्पड़। थाली ही अर्थ होगा। ना, ना थप्पड़ क्यों दें ? नाना का अर्थ है --नाना साहब ! मेरा ख्याल है मेरे नाम का अर्थ हो सकता है--नाना ने थाली दी। दी-ना ना थ बराबर थाली दी, यानी दी नाना ने थाली।
	[अध्यक्ष एवं इन्जीनियर की सम्मिलित हँसी]
इन्जीनियर	वाह वाह आपकी बुद्धि तो काफी तेज है।
दीनानाथ	जी सर, जी मैडम, यह आपकी दया है वर्ना मैं (झेंपकर सिर झुका लेता है)
इन्जीनियर	यह सर-मैडम क्या बला है ? तब से देख रहा हूँ, आप सर के साथ मैडम और मैडम के साथ सर जरूर कहते हैं। आखिर बात क्या है?
दीनानाथ	जी सर, (संकेत कर) सर तो आपके लिए और मैडम, मैडम के लिए।
इन्जीनियर	ओ, आई सी।
दीनानाथ	(हँसता हुआ) देखा मुझे तो आप दोनों का ख्याल रखना है ना ?
इन्जीनियर	ओह। थैंक। जरा अपनी हाबीज के बारे में और बताइये।

दीनानाथ हाबीज, यह क्या होता है सा'ब ?

इन्जीनियर रुचियाँ, आपकी रुचियाँ क्या हैं ?

दीनानाथ आपका मतलब पसन्द से है ?

इन्जीनियर जी हाँ।

दीनानाथ जी, मुझे हिन्दी की फिल्में बहुत पसन्द हैं। कभी कभी अंग्रेजी की फ़िल्म देखने भी चला जाता हूँ। हमारा शहर छोटा है ना जी, सो यहाँ एतवार की एतवार अंग्रेजी की फिल्में आती हैं, इसलिए हफ्ते में एक ही अंग्रेजी फिल्म देख पाता हूँ। हिन्दी की फिल्में हफ्ते में तीन बार देखता हूँ।

अध्यक्षा इतनी फिल्में देखने के लिए पैसा कहाँ से मिल जाता है ?

दीनानाथ मेरे पिताजी दुकानदार हैं मैडम ! दिन में एक दफे तो मुझे दुकान पर जाना ही पड़ता है। मैडम। वहाँ पर जब कोई नहीं रहता तब मैं हूँ हूँ

इन्जीनियर अच्छा, अच्छा ठीक है। जरा यह तो बताइए कि आपने सेनेटरी इन्स्पेक्टर की पोस्ट के लिए एप्लाई किया है। जब आपकी इतनी चलती हुई दुकान है तो आपने यह नौकरी क्यों पसन्द की ?

दीनानाथ जी बात यह है कि जब तब पिताजी मुझे मारते हैं और कहते हैं कि अपनी कमाई करके फिल्में देखा कर, इसलिए मजबूरी में ही मुझे यह नौकरी करनी पड़ेगी, वर्ना मैं तो ऐक्टर बनने लायक हूँ। मैंने रामलीला में कई बार अंगद का पार्ट किया है। अगर मेरे हाथ बहुत सारा पैसा लग जाता तो मैं बम्बई जाकर जरूर ऐक्टर बन जाता। अब तो पैसे के बल पर भी एक्टर बन जाते हैं।

अध्यक्षा अच्छा, आप जाइए। यदि आपका चुनाव हो गया हो तो डाक से आपको खबर कर दी जाएगी।

दीनानाथ अच्छा जी, मुझ गरीब पर दया जरूर कीजिए। अगर बम्बई जाने लायक पैसा इस नौकरी से बटोर पाया तो आपको भी बम्बई ले चलूँगा। (हाथ जोड़कर चला जाता है)

इन्जीनियर (हँसकर) बड़ा मूर्ख आदमी है।

अध्यक्षा	(हँसकर घण्टी बजाती है) कालू !
कालू	(प्रवेश कर) जी सा'ब !
अध्यक्षा	परमिन्दर को बुलाओ। (कालू चला जाता है)
इंजीनियर	अगर सभी कैंडिडेट इसी तरह के हुए तो सलैक्शन बड़ा मुश्किल हो जाएगा। एम०ए० और बी०ए० तो परख लिये, अब यह कैंडिडेट क्या है ?
अध्यक्षा	इंटर है।
परमिन्दर	(प्रवेशकर) नमस्ते जी।
	[कृपाशंकर और दीनानाथ नीचे के संवादों के बीच-बीच में भीतर झाँकते रहते हैं।]
अध्यक्षा	आप कौन हैं ?
परमिन्दर	परमिन्दर कौर, जी।
अध्यक्षा	लेकिन आपको तो हमने लड़का समझकर बुलाया था।
परमिन्दर	क्यों जी ! लड़कों ने क्या इस नौकरी का ठेका ले रखा है ?
अध्यक्षा	नहीं, बात ऐसी है कि इस नौकरी में हमें लड़का ही लेना है, यह काम ही ऐसा है।
परमिन्दर	परे करो जी लड़कों को। आज के जमाने में भला ऐसा कौन सा काम है, जिसे लड़कियाँ नहीं कर सकतीं ? हमारी पराइम मिनिस्टर को ही देख लो। दूर क्यों जाएँ आप भी तो कमेटी की परैसीडेंट हैं और बढ़िया काम कर रही हैं।
इंजीनियर	यह तो ठीक है, लेकिन सेनेटरी इन्स्पैक्टर का काम तो पुरुषों के ही बलबूते का है।
परमिन्दर	राख डालो जी पुरुषों पर। क्यों परैसीडेन्ट जी ! ऐसा कौन सा काम है जिसको हम औरतें नहीं कर सकतीं ? क्या हम लोग हजारों साल से सफाई का काम नहीं करती आ रहीं ? जमीन से लेकर जेबों तक साफ करने में हम माहिर हैं।
अध्यक्षा	(मुस्कराकर) यह तो ठीक है लेकिन
परमिन्दर	(उत्तेजित होकर) लेकिन वेकिन क्या कहती हैं जी। आप पुरुषों से डरती क्यों हैं ? आज जमाना कहीं से कहीं पहुँच चुका है।

अध्यक्षा : आप साक्षात्कार देने आई हैं कि बहस करने ?
परमिन्दर : यह क्या होता है।
अध्यक्षा : इंटरव्यू।
परमिन्दर : (सचत होकर) यों बोलो ना। अंगरेजी क्यों बोल रही हैं ? इंटरव्यू देने जी।
अध्यक्षा : तो फिर जो पूछा जाय, केवल उसी का उत्तर दीजिए।
परमिन्दर : अच्छा जी।
अध्यक्षा : इंजीनियर साहब ! आप पूछिए।
इंजीनियर : आपकी हाबीज क्या है ?
परमिन्दर : सीना पिरोना, कढ़ाई बुनाई और नावल पढ़ना।
इंजीनियर : प्रेमचंद का कोई उपन्यास आपने पढ़ा है ?
परमिन्दर : परेम चन्द ! यह कौन हैं जी ?
इंजीनियर : गुरुदत्त का कोई उपन्यास पढ़ा है ?
परमिन्दर : गुरुदत्त का कोई नावल तो नहीं पढ़ा, हाँ, उसकी फिल्में जरूर देखी हैं। बहुत बढ़िया ऐक्टर था। मेरा फेवरिट हीरो था। क्या कमाल की एक्टिंग करता था। हाय, वह तो कब का चल बसा। (रूमाल आँखों से लगाती है) कितना भोला था।
इंजीनियर : (मुस्कराकर) अच्छा, अच्छा, रोइए नहीं। यह बताइए कि अगर आपको सेनेटरी इन्स्पैक्टर बना दिया जाय तो आप सफ़ाई कर्मचारियों से काम कैसे लेंगी ?
परमिन्दर : खूब कसकर काम लूँगी। अगर कोई काम नहीं करेगा तो ऐसी झाड़ू लगाऊँगी उसके मुँह पर कि सिट्टी पिट्टी गुम हो जाय।
अध्यक्षा : अगर कभी सफ़ाई कर्मचारी हड़ताल पर उतारू हों तो आप क्या करेंगी ?
परमिन्दर : हड़ताल करने की हिम्मत ही कैसे होगी जी उनकी ? उनकी चटनी बनाकर न रख दूँगी।
अध्यक्षा : आपको हर काम में जोर जबरदस्ती दिखाने के सिवाय और कुछ भी आता है ?

परमिन्दर जी ?

इंजीनियर आप

कालू (अन्दर आकर) सा'ब ! वह जो लड़का आपके सामने आया था न किरपाशंकर ?

अध्यक्षा हाँ।

कालू वह यह कह रहा है कि आप लोग इस लड़की को नौकरी दे देंगे, इसीलिए इतनी देर तक उसे रोक रखा है।

इंजीनियर एँ ?

परमिन्दर उस मरे की इतनी हिम्मत ? ठहर, मैं देखती हूँ उसे। (खड़ी हो जाती है)

अध्यक्षा अरे, कहाँ जाती हो ? क्या करना चाहती हो ?

परमिन्दर अरे परैसीडेण्ट जी आप नहीं जानतीं कि इन मरदों को कैसे ठीक किया जाता है। ये लोग औरतों की उन्नती से जलते हैं। मैं अभी उस किरपाशंकर को ठीक करके आती हूँ।

अध्यक्षा अरे कालू। इस लड़की को रोको। बड़ी झगड़ालू है।

कालू (दरवाजे और परमिन्दर के बीच दीवार बनकर) ठहरिए जी।

परमिन्दर अरे, हट परे।

[धक्का देकर बाहर निकल जाती है और कृपाशंकर को कॉलर से पकड़कर भीतर ले आती है। पीछे-पीछे दीनानाथ आता है।]

परमिन्दर (कृपाशंकर से) क्यों भाई साहब ! आप क्या कह रहे थे ?

कृपाशंकर कुछ भी तो नहीं।

परमिन्दर झूठ बोलते हो।

कृपाशंकर मैं क्यों झूठ बोलूँगा ?

परमिन्दर तुम नहीं कह रहे थे कि ये लोग मुझे नौकरी दे देंगे इसलिए मुझे इतनी देर तक रोक रखा है ?

कृपाशंकर : हाँ, कह रहा था तो कौन सा पाप कर रहा था ?

परमिन्दर तुझे झूठ बोलते हुए शरम नहीं आती ? अभी कह रहा था कि कुछ नहीं कह रहा था और अब कह रहा है कि हाँ कह रहा था।

कृपाशंकर देखिए बहन जी, जबान सँभाल कर बात कीजिए। मुझे तू तड़ाक सुनने की आदत नहीं है।

परमिन्दर तो तू क्या कर लेगा मेरा ? (निकट आ जाती है)

दीनानाथ बड़ी ढीठ हैं आप।

परमिन्दर ओ, तू चुप कर। तू क्यों बीच में टाँग अड़ाता है ? तेरे से कौन बात कर रहा है ?

कालू (बीच बचाव करता है) देखिए बहन जी, भाई साहब। यहाँ झगड़ा मत कीजिए।

परमिन्दर (धक्का देकर) ओ, परे हट। बड़ा आया मजिस्ट्रेट बन के।

अध्यक्षा आप लोग झगड़ते क्यों हैं ? इंटरव्यू देने आये हैं कि झगड़ा करने ?

कृपाशंकर आये तो हैं हम इंटरव्यू देने लेकिन जब यहाँ खुली धाँधली चल रही है तो चुपचाप कैसे रह सकते हैं ?

अध्यक्षा क्या धाँधली हो रही है यहाँ ?

कृपाशंकर आपने इस लड़की को इतना समय क्यों दिया इंटरव्यू में ? साफ है कि आप इसे काम पर लगाना चाहते हैं।

दीनानाथ हाँ, साफ है।

परमिन्दर (चिढ़ाने के स्वर में) हाँ, साफ है। ये मुझे काम पर लगाना चाहती हैं तो तुम लोगों को क्यों जलन होती है ? जो इस नौकरी के लायक होगा, उसे ही तो रखा जाएगा।

कृपाशंकर : (दीनानाथ से) देखा, मैंने ठीक कहा था ना कि ये लोग इस लड़की को काम पर रखना चाहते हैं। देख लो खुद सुन लो- यह लड़की क्या कह रही है।

अध्यक्षा : या तो आप लोग शान्त हो जाइए, वर्ना यह इंटरव्यू पोस्टपोन कर दिया जाएगा। (सब चुप होकर अध्यक्षा को देखने लगते हैं) न तो अभी किसी लड़के को रिजेक्ट किया गया है और न इस लड़की को सलेक्ट किया गया है। आप सबका इंटरव्यू हो जाने के बाद डिसीजन होगा।

परमिन्दर डिसीजन अभी होगा, यहीं होगा और मेरे फेवर में होगा। अगर मुझे न लिया गया तो मैं भूख हड़ताल कर दूँगी, घेराव कर दूँगी।

अध्यक्षा ऐसी धमकियों से वश में नहीं हो सकती मैं।

कृपाशंकर कैसे कर देगी भूख हड़ताल घेराव। तुझे उठाकर बाहर फेंक देंगे।

दीनानाथ हाँ, फेंक देंगे।

परमिन्दर अच्छा तुम्हारी इतनी हिम्मत ? जरा हाथ लगाकर तो देख मुझे।

[और निकट आ जाती है]

कृपाशंकर जा, जा। तू लड़की है, इसलिए छोड़े देता [redacted], वर्ना

परमिन्दर वरना तू क्या कर लेता मेरा ?

कृपाशंकर अच्छा, यह बात है ? (परमिन्दर की ओर बढ़ता है)

इंजीनियर अरे, अरे, यह क्या कर रहे [redacted] आप लोग ? ठहरो परमिन्दर, कृपाशंकर। यह अच्छी बात नहीं है।

[अध्यक्षा खड़ी होकर कृपाशंकर को पकड़ लेती है।]

कृपाशंकर छोड़िए मैडम मुझे छोड़ दीजिए।

परमिन्दर हाँ, हाँ छोड़ दीजिए। यह मुझे हाथ लगाकर तो देखे।

इंजीनियर ओफ्फोह।

अध्यक्षा झगड़ना बन्द करते हो कि नहीं ?

कृपाशंकर आप, बस चुप रहिए।

परमिन्दर हाँ, हाँ, आप क्यों टपकते हैं बीच में ?

[अध्यक्षा और इंजीनियर आपस में कानाफूसी करते [redacted]। फिर प्रत्याशियों को देखते हैं]

अध्यक्षा हम लोगों ने यह इंटरव्यू कैंसिल करने का फ़ैसला किया है, इस लिए अब आप लोग यहाँ से जा सकते हैं।

[सभी प्रत्याशी एक-दूसरे की प्रतिक्रिया देखते हैं।]

सूत्रधार

गौरीशंकर	नेता
बुधुआ	नेता का नौकर
राकेश	छात्र नेता
बनर्जी	प्रिंसीपल
कालीचरण	सेठ, मिल-मालिक
जोशी	पुलिस इंस्पेक्टर
सिपाही	

[एक सजी हुई बैठक। सोफ़े, मेज और मेज पर टेलीफ़ोन। खद्दर के पर्दे दरवाजों और खिड़की पर टँगे हैं। खद्दरधारी गौरीशंकर दोनों पैर समेटकर एक सोफ़े पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं। टेलफ़ोन की घंटी बोलती है। गौरीशंकर एक हाथ में अखबार थामे फ़ोन उठाते हैं]

गौरीशंकर — हैलो अच्छा कालीचरण जी हैं। नमस्कार, नमस्कार। सुनाइए, क्या हाल है? हाँ, कल पी एम ने पार्टी में बुलाया था। वहीं मैंने आपके बारे में सारी बातें फ़ाइनेन्स मिनिस्टर से कर ली थीं। एक लाख रुपये से बात नहीं बनेगी। हाँ, यह तो है ही। जितना बड़ा काम, उतने दाम। वह दस लाख कह रहे थे, मैंने पाँच लाख तक मना लिया है। अरे भैया! वह तो अपने सामने गिनकर परखा लेनेवाला आदमी है। ब्रीफ़केस में रखकर चले आने से काम नहीं चलेगा। वह बड़ा शक्की आदमी है। क्या पता, आप पाँच हजार रख लायें और पाँच लाख बतायें। हाँ, हाँ आप हाँ आप ऐसा कीजिए कि ब्रीफ़केस में पूरे रुपये भरकर मुझे दे जाइए। मैं पहुँचा

दूँगा । फिर सामने गिनने की जरूरत नहीं पड़ेगी । हाँ, आप इधर आ जाइए । बाकी बातें भी यहीं कर लेंगे । ठीक है नमस्कार भैया । (फ़ोन रखकर) बुधुआ !

बुधुआ (आकर) जी मालिक !

गौरीशंकर (सोफ़े पर बैठते हुए) आज इतवार है । कई लोग आयेंगे । बाजार से कुछ खाने पीने का सामान ले आओ । बीबी जी तो घर में हैं नहीं, जो मेहमानों के लिए अन्दर से कुछ बनकर आ जायेगा ।

बुधुआ जी !

गौरीशंकर घासी हलवाई के पास जाना । कहना कि हमने मिठाई और नमकीन मँगवाया है।

बुधुआ जी !

गौरीशंकर जी, जी क्या ? जाओ ।

बुधुआ सा'ब ! पैसे ।

गौरीशंकर पैसे किसलिए ? घासी से हमारा नाम लोगे तो वह बिना पैसे लिए दे देगा । आखिर उसे हमने इतनी पार्टियों के आर्डर दिलवाये हैं ।

बुधुआ अच्छा सा'ब ! मैं अभी लाता हूँ । (बाहर निकल जाता है । कुछ क्षण पश्चात् राकेश के साथ लौटता है) मालिक, ये आपको पूछ रहे थे ।

गौरीशंकर (तपाक से उठकर राकेश से हाथ मिलाते हुए) हल्लो राकेश भाई, अब के तो बड़े दिनों में दर्शन दिए । (बुधुआ से) तू जा । (बुधुआ के चले जाने पर) आओ बैठो । कैसे भटक गए आज ?

राकेश आप तो जानते ही हैं कि आप के पास बिना मतलब के तो कोई आता नहीं है ।

[दोनों बैठ जाते हैं]

गौरीशंकर (मुस्कराकर) हाँ यह तो ठीक है । बताइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

राकेश हम अपने कालेज में स्टूडैण्ट्स यूनियन की ओर से हड़ताल करना चाहते हैं, उसमें आपके सहयोग की आवश्यकता है।

गौरीशंकर ऐसी क्या बात हो गई?

राकेश आपके सामने झूठ बोलना बेकार है, क्योंकि आप, बकौल आपके, चेहरा देखकर ही आदमी के दिल की बात जान जाते हैं।

गौरीशंकर हाँ, वह तो है ही।

राकेश बात यह है कि परीक्षा में नकल करते हुए सुपरिंटेंडैण्ट ने हम चार लड़कों को पकड़ लिया। हमने सोचा कि कुछ ले देकर काम बन जाए, लेकिन वह साला बड़ा काइयाँ निकला। साफ़ मना कर दिया और हमारी कापियाँ छीनने लगा। हमने कहा कि हम नहीं देते। इसपर उसने पुलिस को बुला कर हमें हॉल से निकलवा दिया। हम लोगों ने प्रिंसीपल से जाकर कहा तो उसने भी साफ़ कह दिया "मैं इस मामले में नहीं पोंक ऑक्स।" हमने बहुत कहा कि हम माफ़ी माँग लेंगे, आप सुपरिटेंन्डेण्ट से कह तो दीजिए। इसपर वह उठकर चल दिया और बोला "मेरा कोई अधिकार नहीं है। आप लोगोन को आपनी कॉरनी का फॉल तो मिलना ही चाहिए।" अब हम चाहते है कि हम तो तीन साल के लिए गए ही इस प्रिंसीपल को भी कालेज से निकलवा कर छोड़ें। यूनियन के प्रेसीडैण्ट और सेक्रेटरी तो अपने इशारों पर नाचते ही हैं, हम प्रिंसीपल को निकलवाने के लिए हड़ताल क्यों न करवा दें?

गौरीशंकर (सोचकर) देखिए, मेरी आप लोगों से जितनी मित्रता है, उतनी ही प्रिंसीपल से भी है। और फिर

राकेश वह तो मुझे पता है। परन्तु इतना आप भी जानते [redacted] कि आपके काम जितने हम लोग आयेंगे, उतना वह प्रिंसीपल नहीं आयेगा। हम आपके कितने काम आते हैं। आपके हर काम के लिए हम तैयार रहते हैं। बस, आपके इशारों की आवश्यकता होती है। और चुनाव भी तो आप हम जैसों की सहायता से ही जीतते हैं।

गौरीशंकर — सो मैं सब समझता हूँ। आप लोग अपने आदमी हैं इसीलिए तो काम पड़ने पर हम एक दूसरे के पास आते जाते हैं।

राकेश — बिलकुल।

गौरीशंकर — तो ठीक है आप लोग हड़ताल करवा दीजिए। मगर किसी को पता नहीं चलना चाहिए कि इस हड़ताल का सूत्रधार कौन है।

राकेश — बिलकुल नहीं साहब आप भी क्या बात करते हैं। हमें तो बस आपके आशीर्वाद की जरूरत थी, वह हमें मिल गया।

[बनर्जी प्रवेश करते हैं]

गौरीशंकर — (उठकर हाथ मिलाते हुए) आइए प्रिंसीपल साहब आप से मिलने की मेरी कई दिनों से इच्छा हो रही थी। आइए, बैठिए।

[बनर्जी राकेश पर एक उड़ती दृष्टि फेंककर बैठ जाते हैं]

राकेश — (उठकर) अच्छा जी, मैं चलता हूँ। नमस्ते। (निकल जाता है)

गौरीशंकर — (बैठकर) कोई सेवा ?

बनर्जी — यह किसलिए आया था ?

गौरीशंकर — अरे साहब, क्या बताऊँ। आजकल के लौंडे बड़े अनुशासनहीन होते जा रहे हैं। यह मुझे बताने आया था कि आपने इन्हें कालेज से निकाल दिया है।

बनर्जी — ये लोग हॉड़ताल करने पर तुले हुए हैं, क्योंकि सुपरिन्टेण्डेण्ट ने इन्हें नकल करने के कारण एग्जामिनेशन हाल से निकाल दिया है और यूनिवर्सिटी तक इनकी शिकायत पहुँचा दी है।

गौरीशंकर — शिकायत।

बनर्जी — हाँ शिकायत। यह शायद हॉड़ताल के मामले में आपकी सलाह लेने आया था।

गौरीशंकर — (घबड़ाकर) लेकिन, मैंने तो आपसे यह नहीं कहा।

बनर्जी — आपने नहीं कुछ लॉड़कों ने मुझे रिपोर्ट दी है कि ये लॉडके कालेज में हॉड़ताल करवा कर मुझे निकलवाना चाहते हैं।

गौरीशंकर — कुछ कुछ भनक तो मेरे कानों में भी पड़ी है। मैंने तो इसको वह लताड़ पिलाई है कि बच्चू का मुँह फीका हो गया। आपने देखा था

ना ? (व्यग्यपूर्वक) ये भारत के भावी कर्णधार है । इनको सिवाय लड़ाई-झगड़े और छुरेबाजी के और कोई काम नहीं सूझता है ।

बनर्जी — मैंने भी सोच लिया है कि इनकी हॉडताल का सामना करूँगा, चाहे कुछ हो जाए । आखिर इन लोगों ने समझ क्या रखा है !

गौरीशंकर — ऐसा करना ही चाहिए । नहीं तो आपको कालेज से निकलवाने की धमकी दे रहे हैं तो कल सारे स्टाफ को निकलवाने की धमकी देंगे । प्रशासन इन लोगों की सलाह से थोड़े ही चल सकता है ।

बनर्जी — आप मेरे ऑपने अंतरंग मित्रों में से हैं आप की क्या राय है ?

गौरीशंकर — (सोचने के बाद) मेरी राय तो बनर्जी साहब, यही [illegible] कि इन लोगों को हड़ताल करने दीजिए, आगे मैं निपट लूँगा । एस०पी० मेरे हाथों में हैं । इन दादाओं को जेल में न डलवा दिया तो मेरा नाम गौरीशंकर नहीं ।

[मूँछों पर हाथ फेरता [illegible]]

बनर्जी — बस, मैं यही चाहता हूँ । पहले आप इन लोगों को समझाने की कोशिश कीजिए । न मानें, तो चारा ही क्या है ? मैं नहीं चाहता कि मेरी प्रिंसीपलशिप में कोई हॉड़ताल वॉड़ताल हो ।

गौरीशंकर — हाँ, जो काम समझौते से, शान्ति से हो सके उसे क्यों न किया जाय? आप बेफिक्र रहिए, आपका कोई नुकसान नहीं होगा ।

बनर्जी — मेरा क्या नुकसान हो सकता है ?

गौरीशंकर — अरे साहब, ये लड़के बड़े गुण्डे हैं । कहीं छुरेबाजी कर बैठें तो ! इन लड़कों के पिता कोई साधारण हैसियत के आदमी तो हैं नहीं । ऊपर तक इन लोगों की पहुँच होती है । जमानत दे दिला कर छूट जायेंगे । हमारी और आपकी हैसियत ही क्या है ?

बनर्जी — मैं सब भुगत लूँगा । देखें कोई मेरा क्या बिगाड़ता है ।

गौरीशंकर — आप मेरे परम मित्र हैं, इसलिए आपको यह सलाह दे सकता हूँ कि आप अपनी ओर से पहल करके समझौता कर लें ।

बनर्जी — मैं समझौता अपनी ओर से क्यों करूँ ? मेरा इसमें क्या दोष है ?

गौरीशकर वह तो ठीक है, लेकिन आप कालेज में नौकरी करते हैं। कालेज आपका नहीं है। प्राइवेट कालेजों में तो झुककर चलने में ही भलाई है। ये लोग मैनेजिंग कमेटी में अपना प्रभाव रखते हैं। कालेज को चन्दा देते हैं। अगर हड़ताल होने पर कुछ तोड़ फोड़ हुई, अथवा लड़ाई झगड़ा हुआ, तो सारा दोष आपका ही माना जाएगा। (बनर्जी सोचने लगते हैं) प्रिंसीपल साहब, मैंने दुनिया देखी है। आजकल न्याय और योग्यता की कोई पूछ नहीं है। जी हुजूरी से काम निकलता है और फिर स्टूडेन्ट्स यूनियन के लड़कों का किसी न किसी राजनैतिक दल से गठबन्धन होता है। आप मेरे दोस्त हैं। दोस्ती के नाते आपको पहले ही समझाना या सलाह दे देना मेरा कर्त्तव्य है, वर्ना मुझे क्या पडी है कि

बनर्जी बात तो आप ठीक कहते हैं लेकिन मैं भी देखना चाहता हूँ कि कौन सा राजनैतिक दल हड़ताल करवाता है या कौन सा रईस मुझे कालेज से निकलवाता है। (उठकर) अच्छा, मैं चलता हूँ।

गौरीशकर कुछ जलपान तो कर लीजिए। (खड़े होते हैं)

बनर्जी : धन्यवाद। अब मैं चलूँ।

बुधुआ (खाली हाथ प्रवेश कर) मालिक लाला ने कहा (गौरीशंकर चुप रहने का संकेत करते हैं लेकिन वह कहता जाता है) कि आपने उसे पार्टियों के ठेके दिलवाए हैं तो कौन सा अहसान किया है। कमीशन के नकद रुपये भी तो लिए हैं

गौरीशकर (क्रोधित स्वर में) चुप रहो।

बुधुआ पहले पूरी बात तो सुन लो मालिक, उसने फिर कहा - उन्होंने नकद रुपये नहीं लिए क्या ?

बनर्जी : यह क्या कह रहा है ? रुपए नकद लेने की कौन सी बात है जिस पर आपको गुस्सा आ गया ?

गौरीशकर (घबड़ाहट और क्रोध का भाव छिपाते हुए) पागल है।

बनर्जी होगा लेकिन बात क्या हुई ?

गौरीशकर आपसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। यह पागल है।

बनर्जी	मुझे तो ऐसा मालूम नहीं पड़ता। अच्छा, मेरी बात का ध्यान रखना। (निकल जाते हैं)
गौरीशंकर	(गुस्सा पीते हुए) यह अच्छा मूर्ख नौकर पल्ले पड़ा है। बेवकूफ को कितनी बार समझाया है कि ! तू निकल जा मेरे घर से।
राकेश	(प्रवेशकर) यह प्रिंसीपल क्या कह रहा था ?
गौरीशंकर	(मुस्कराकर) आप अभी तक यहीं हैं ?
राकेश	मैंने सोचा कि प्रिंसीपल यहाँ आया है तो जरूर हमारे बारे में बात करने आया होगा, इसलिए मैं बाहर घूम रहा था।
गौरीशंकर	डर के मारे भागा भागा फिर रहा है। मुझसे कह रहा था कि कुछ सहायता कीजिए। मैंने तो साफ साफ कह दिया है कि मैं इस मामले में आपका पक्ष नहीं ले सकता। दोष आपका ही था। आपने अपने कालेज के लड़कों की सहायता क्यों नहीं की ? यह सुनकर वह भीगी बिल्ली बना चला गया है। (चिन्ताभरे स्वर में) वैसे मामला बड़ा टेढ़ा पड़ गया है।(बुधुआ से) खड़ा क्यों है ? साहब के लिए पानी लाओ।
बुधुआ	जी मालिक। (अन्दर चला जाता है)
राकेश	क्यों ? क्या हो गया ?
गौरीशंकर	वह कह रहा था कि यदि लड़कों की हड़ताल हुई तो वह तुम लोगों को पुलिस द्वारा पकड़वा कर जेल भिजवा देगा।
राकेश	जब तक आप हैं, हमें कोई खतरा नहीं है (जेब में हाथ डालकर) अगर आपको रुपये पैसे चाहिएँ तो हम से कहिए।
गौरीशंकर	हाँ, वह तो कहना ही पड़ेगा। एस०पी० और दूसरे अफ़सरों को देने के लिए रुपयों की ज़रूरत तो पड़ेगी ही।
राकेश	(जेब से नोट निकालकर देते हुए) हम सबने यही अन्दाज लगाया था। इस समय सौ रुपये लीजिए, बाकी फिर दे जाऊँगा। स्टूडैण्ट्स यूनीयन का फंड और किस दिन काम आयेगा ?
बुधुआ	(पानी के दो गिलास लेकर आता है) लीजिए, मालिक !

गौरीशंकर (राकेश से रुपये लेते हुए) कोई बात नहीं। ऊपर से मेरे भी कुछ लग जाएँ तो परवाह नहीं। अपने ही आदमी हो, फिर आ जाएँगे। आप निश्चिन्त हो जाइए, मैं सब सुलट लूँगा।

[राकेश निकल जाता है]

बुधुआ मालिक।

गौरीशंकर तू चुपचाप चला जा यहाँ से।

बुधुआ अच्छा महाराज, मैं चला तो जाऊँगा, पर मेरी एक बात तो सुन लीजिए।

गौरीशंकर क्या है ?

बुधुआ जब मैं घासीराम की दुकान पर पहुँचा

गौरीशंकर मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। जा, भाग।

(सेठ कालीचरण हाथ में ब्रीफ़केस लेकर प्रवेश करते हैं। गौरीशंकर उन्हें आदरसहित कुर्सी पर बैठाते हैं। बुधुआ गिलास अंदर रख आता है और कपड़ा लाकर सफ़ाई करने लगता है। कभी-कभी उन दोनों की बातचीत सुनने के लिए खड़ा हो जाता है।)

गौरीशंकर आइए, सेठ जी। सुनाइए, क्या समाचार हैं ?

कालीचरण अरे साहब, क्या बताऊँ! बुरे समाचार हैं। इन मजदूरों के मारे तो मेरी जान आफ़त में हो गई है। रोज कोई न कोई झगड़ा टण्टा उठाए रखते हैं। कभी अपने वेतन बढ़वाने की बात कहते हैं और कभी फ्री क्वार्टर, अस्पताल और स्कूल बनवाने की माँग रखते हैं। कभी ग्रेच्युटी, कभी लिफ्ट कभी शिफ्ट। मैं तो इन रोज की माँगों से तंग आ गया हूँ। मैंने बिजिनेस में इतना सारा रुपया पैसा केवल इनको पालने के लिए ही लगा रखा है।

गौरीशंकर हाँ सेठ जी कुछ नेता टाइप लोग ही पर्दे के पीछे से इन लोगों को भड़काते रहते हैं। ये मजदूर अन्धों की तरह उनके बताये रास्ते पर चलने लगते हैं, चाहे इससे उनका अपना कितना ही नुकसान क्यों न हो जाय।

कालीचरण — जी हाँ, लेकिन मैंने भी अब सोच रखा है कि बिना कड़ा रुख अपनाये काम चलेगा नहीं।

गौरीशंकर — आपने ठीक सोचा है।

कालीचरण — इसके लिए मुझे आपकी सहायता चाहिए।

गौरीशंकर — (प्रसन्नता से) अजी साहब, क्यों नहीं! मैं सत्य और न्याय की रक्षा के लिए सदैव तैयार हूँ!

कालीचरण — इसीलिए तो आपके पास आना पड़ा। आप मेरी सहायता कीजिए। अगले चुनावों में मुझसे आपकी जो सेवा बन पड़ेगी, वह मैं करने को तैयार हूँ!

गौरीशंकर — यह तो आपकी दया है सेठ जी ! आप जैसे भले आदमियों के भरोसे ही तो मैं इस शहर में टिका हुआ हूँ, वर्ना यह शहर मुझ जैसे आदमियों के योग्य है नहीं।

कालीचरण — सो तो है। अच्छा, तो जरा मेरा काम सुन लीजिए।

गौरीशंकर — सुनाइए।

कालीचरण — बात यह है कि मजदूरों ने मेरे सामने कई माँगें रखी हैं, जैसे वेतन में बढ़ोतरी, बोनस उनके बच्चों की मुफ्त शिक्षा का प्रबन्ध मुफ्त मकान। माँगें पूरी न होने पर वे हड़ताल करने की धमकी दे रहे हैं। आप जानते ही हैं कि हमारे पास तनखा आदि बाँटने के बाद थोड़ा-सा रुपया बचता है, जिसमें से हमें सारे टैक्स चुकाने होते हैं, हिस्सेदारों को देना होता है चन्दे देने होते हैं। और फिर अपने घर का खर्च भी तो कम नहीं है।

गौरीशंकर — जी हाँ मजदूरों की माँगें बिलकुल अनुचित हैं। मैं डी सी , लेबर आफिसर और मजिस्ट्रेट से मिलूँगा आप चिंता न करें। अगर मजदूरों ने कुछ तोड़ फोड़ की तो पुलिस की गोलियों से भुनवा दूँगा। इन्होंने समझ क्या रखा है ?

कालीचरण — (ब्रीफकेस उठाकर गौरीशंकर की ओर बढ़ाते हुए) बस, मैं इसीलिए यहाँ आया था। इस ब्रीफकेस में

गौरीशंकर : (बुधुआ से) तुम्हारा काम खत्म नहीं हुआ ? जाओ, सेठ जी के लिए पानी लाओ।

[बुधुआ अन्दर चला जाता है]

कालीचरण अगर आपको और जरूरत हो तो, बेखटके कह दीजिएगा। मैं आपकी सेवा में और रुपये पहुँचा दूँगा।

गौरीशंकर अरे सेठ जी, आप चिन्ता मत कीजिए। (ब्रीफकेस ले लेते हैं बुधुआ एक ट्रे में पानी के दो गिलास ले आता है) मैं रख लेता हूँ। इससे काम चल जायेगा तो ठीक है वर्ना

कालीचरण ठीक है। आजकल तो इसके बिना कोई काम ठीक तरह से हो ही नहीं पाता। (उठते हुए) अच्छा, अब मैं चलता हूँ। (एक गिलास उठाकर पानी पी लेते हैं और खाली गिलास ट्रे में रख देते हैं)

बुधुआ अजी साहब ! आप कुछ जलपान तो कर जाइए।

गौरीशंकर (खड़े होकर) हाँ बुधुआ ! सेठ जी के लिए कुछ ले आ।

कालीचरण अजी इसकी क्या जरूरत है।

बुधुआ (ट्रे को मेज पर रख कर बाहर जाता हुआ) जरूरत तो है सा'ब ! आप बैठिए तो सही। (निकल जाता है)

कालीचरण (हँसकर बैठते हुए) आपका नौकर तो बड़ा होशियार है।

गौरीशंकर (धीरे धीरे बैठते हुए) जी हाँ।

कालीचरण एक बात और है, नेता जी !

गौरीशंकर क्या ?

कालीचरण आप मुझे नयी मशीनरी के लिए कुछ परमिट और फारेन एक्सचेंज दिलवा दें तो बड़ी कृपा होगी।

गौरीशंकर यह बड़ा मुश्किल काम है। परमिट और फारेन एक्सचेंज पर सरकार ने बहुत प्रतिबन्ध लगा रखे हैं, यह तो आपको मालूम ही है।

कालीचरण अरे साहब ! आपके लिए क्या मुश्किल काम है ? आप चाहें तो आज ही दिलवा सकते हैं। आपका तो सब जगह प्रभाव है। मिनिस्टर तक आपके आगे सिर झुकाते हैं।

गौरीशंकर यह तो ठीक है लेकिन

कालीचरण : लेकिन वेकिन कुछ नहीं। जो कुछ खर्च आप माँगेंगे मैं देने को तैयार हूँ।

गौरीशंकर : आप तो (आगे कहने के लिए जैसे शब्द नहीं मिलते)

कालीचरण : बस ठीक है दस परसेण्ट आपका रहा।

गौरीशंकर : आप तो, सेठजी, मुझसे जबर्दस्ती काम करवा लेते हैं। मैं आपसे 'न' भी तो नहीं कह सकता। (बुधुआ का प्रवेश) तू फिर आ गया? चल बाहर। कुछ लेकर नहीं आया?

बुधुआ : लेकर आया हूँ।

गौरीशंकर : क्या?

बुधुआ : पुलिस।

गौरीशंकर : पुलिस? क्यों?

बुधुआ : (जेब से परिचयपत्र निकालकर दिखाते हुए) आई एम जोशी इन्स्पेक्टर सी०आई०डी०।

[गौरीशंकर और कालीचरण सकपकाकर एकदम खड़े हो जाते हैं और एक-दूसरे का मुँह देखते हैं]

गौरीशंकर : क्या कहते हो?

कालीचरण : कुछ नहीं।

गौरीशंकर : (जोशी से) क्या? क्यों?

जोशी : हम आपको गिरफ्तार करने आए हैं।

गौरीशंकर : (विस्मय से) मुझे? क्यों? मेरा क्या अपराध [redacted]?

जोशी : आपके कई अपराध हैं। एक हो तो बताऊँ।

गौरीशंकर : (खोखली हँसी से) आप भी खूब मजाक करते हैं, इन्स्पेक्टर साहब! आइए, बैठिए। चाय पीएँगे या कॉफी या कुछ और ?

जोशी : धन्यवाद। चलिए, आपके घर में तो कुछ है नहीं। जो कुछ पीना होगा, थाने में ही पीएँगे। (कालीचरण से) और सेठ जी! आपको भी थाने चलकर रिपोर्ट पर दस्तखत करने होंगे। यह ब्रीफकेस आप मुझे दीजिए। (इन्सपेक्टर ब्रीफकेस ले लेता है)

गौरीशंकर लेकिन मेरा अपराध तो बताइए।

जोशी आप अपने कितने अपराध जानना चाहते हैं ? आपके अपराध बहुत-से [redacted] और उन सबके प्रमाण हमारे पास हैं। अभी उस लड़के को अपने हड़ताल के लिए उकसाया है और उससे सौ रुपए लिए [redacted]। अभी इन सेठ जी से रुपए ऐंठे हैं। इसका प्रमाण सेठ जी और यह ब्रीफ़केस हैं। आपकी हमारे पास और भी रिपोर्टें हैं, लेकिन अभी इतना ही काफ़ी है। बाहर जीप खड़ी है। आप दोनों थाने चलिए। (गौरीशंकर सिर झुका लेता है। कालीचरण चेहरे पर रुमाल फेरते रहते हैं) चलिए।

[सब बाहर जाने के लिए कदम बढ़ाते [redacted]]

हँसी-हँसी मे

नारायण	पिता
सुधाकर	पुत्र
मीरा	पुत्री

[एक मध्यवर्गीय परिवार का दृश्य । मीरा एक कुर्सी पर बैठी कोई पुस्तक पढ़ रही है]

सुधाकर (प्रवेश कर) मीरा ! पिताजी कहाँ हैं ?

मीरा क्यों ? क्या काम है ?

सुधाकर तू क्यों बीच में टाग अड़ाती है ? मैं जो कुछ पूछ रहा हूँ, उसका उत्तर दो ।

मीरा मुझे नहीं पता । (पुस्तक पढ़ने लगती है)

सुधाकर (चापलूसी के स्वर में) मीरा रानी ! बता दोगी तो कुछ घट नहीं जायेगा । मीरा ! मुझे तग न करो ।(हाथ जोड़ता हुआ थोड़ा सा झुककर) बहिन जी ! मेरे अपराध को क्षमा किया जाय । अब तो बताओ ।

मीरा (पुस्तक एक ओर रखकर, मुस्कराती हुई) हाँ, ऐसे । अब आ गए न राह पर !

सुधाकर : (वैसे ही हाथ जोड़े हुए) जी, आ गया । लेकिन मैं कुछ पूछ रहा था ।

मीरा : (रौब की आवाज में) सब कुछ पता लग जायगा । (एक कुर्सी की ओर इंगित कर) पहले यहाँ बैठिए । (सुधाकर बैठ जाता है) हाँ, अब पूछिए ।

सुधाकर : मुझे जितनी जल्दी है, तुम इतनी देर लगा रही हो ।

मीरा : (मुस्कराहट दबाकर) फिर ऊटपटाग बातें

सुधाकर अच्छा, अच्छा, मैं जानना चाहता था कि पिताजी कहाँ हैं ?

मीरा : लेकिन आप यह पूछ क्यों रहे हैं ?

सुधाकर : मीरा ! तुम भी अजीब हो । मुझे आज एक कवि सम्मेलन में

हरि भजन को, ओटन लगे कपास । (सोचकर) अच्छा, यह कैसे मानें कि वह वहाँ ठीक होने के बाद यहाँ भी ठीक रहेगी ?

मीरा वहाँ आप ठीक करते रहेंगे ।

सुधाकर बस मैं समझ गया । पिताजी मेरे लिए मुसीबत मोल लेने गए हैं ।

मीरा मुसीबत नहीं उसे ।

सुधाकर (खड़ा होकर) क्या मतलब ?

मीरा यह भी कोई पूछने की बात हुई । पिताजी उसे मोल लेने गए हैं ।

सुधाकर अर्थात् वे उसे खरीदकर घर में लावेंगे । क्यों यही बात है ना ?

मीरा जी हाँ । (हँसी रोकती है)

सुधाकर पिताजी को मेरे लिए और कोई अच्छी लड़की नहीं मिली । (रुआँसा हो जाता है)

मीरा (मुस्कराकर) मिल तो जाती, परन्तु पिताजी नहीं चाहते ।

सुधाकर क्यों ? क्यों नहीं चाहते ? न जाने पिताजी को क्या हो गया है ।

मीरा आपके भले के लिए ही तो वह यह सब कर रहे हैं और एक आप हैं कि उनपर दोष पर दोष लगाये जा रहे हैं ।

सुधाकर और क्या उनकी प्रशंसा करूँ ? मैं समझ गया पिताजी चाहते हैं कि वे उसे खरीदकर लायें और अपने वश में रखें ।

मीरा वह आपके भी तो वश में रहेगी । हम सबके दबाव में रहेगी ।

सुधाकर मुझे नहीं चाहिए ऐसी पत्नी । पिताजी इतने पढ़े लिखे हैं, फिर भी इस ढंग से काम करना चाहते हैं । मुझे दासी नहीं, पत्नी चाहिए । मैं तो बाहर जा रहा हूँ । कह देना कि मुझे यह शादी नहीं करनी है । [बाहर जाना चाहता है]

मीरा (बाहर देखकर) लो, पिताजी आ गए । अब आप स्वयं मना कर दीजिए ।

नारायण (थके से प्रवेश कर कुर्सी पर बैठते हुए) हे राम । मैं तो थक गया मीरा । जरा एक गिलास पानी तो पिला ।

मीरा (अन्दर जाती हुई) पिताजी । वह आपको पसंद तो आ गई ना ?

नारायण हाँ । वह पुरानी जरूर है पर बिलकुल नई सी लगती है । दाम भी ज्यादा नहीं हैं - केवल सवा सौ रुपये माँगता है ।

मीरा (अन्दर से) तब तो ठीक है । भैया इतने दिनों से पीछे पड़े थे, अब

खुश हो जायेंगे ।

नारायण इसीलिए तो मुझे और जल्दी थी । आज एक आफत से छुटकारा मिला । (सुधाकर से) तुम कहीं जा रहे हो क्या ?

सुधाकर जी हाँ, एक कवि सम्मेलन में जा रहा था ।

नारायण : तो गये क्यों नहीं ?

[मीरा पानी-भरा गिलास लाकर देती है । वे पीने लगते हैं]

सुधाकर : मैं आपसे ।

मीरा (बीच में ही) मैं बताऊँ पिताजी ! ये आपसे आज्ञा लेने आये थे । लेकिन जब मैंने आपके वहाँ जाने की बात मेरा मतलब है, उसे देखने जाने की बात सुनाई तो नहीं गये ।

नारायण हाँ, बात ही खुश होने की है । मन में लड्डू फूट रहे होंगे । लेकिन तुमने यह चेहरा क्यों लटका रखा है ? (गिलास एक ओर रख देते हैं)

मीरा लड्डू नहीं, बम फूट रहे हैं पिताजी ! आप उसे साथ क्यों नहीं लाये, इसलिए ।

सुधाकर नहीं पिताजी ! यह बात नहीं है ।

नारायण तो क्या बात है ?

सुधाकर बात यह है कि इस बारे में आपको मेरी सलाह लेनी चाहिए थी ।

नारायण इसमें सलाह लेने की क्या बात थी ? तुम ही तो महीनों से पीछे पड़े थे कि ।

सुधाकर : मैंने आपसे इस बारे तो एक शब्द भी नहीं कहा । आप मुझसे बिना पूछे ही बातचीत कर आये और वह भी भाव ताव करके ।

नारायण तो क्या कोई मुफ्त में ही दे देगा । आखिर उसने भी तो खरीदी ही थी । उसे किसी ने मुफ्त में दे दी होती तो वह भी हमें मुफ्त में पकड़ा देता ।

मीरा हाँ यह कोई पेड़ पर थोड़े ही लगती है ।

सुधाकर पिताजी ! आप खरीदी हुई बहू लाकर मेरी जिन्दगी बर्बाद कर देना चाहते हैं (आँसू पोंछता है । मीरा खिलखिला कर हँस पड़ती है)

नारायण (आश्चर्य से) खरीदी हुई बहू ! यह तुम क्या कह रहे हो ?

सुधाकर आप मेरे लिए बहू खरीदने नहीं गये थे ?

नारायण — तुम्हें किसने बताया ?

सुधाकर — मीरा ने।

नारायण — (मीरा से) तुमने ?

मीरा — मैंने कब बताया ?

सुधाकर — तुमने नहीं बताया था कि पिताजी मेरे लिए बहू खरीदने गये हैं ?

मीरा — मैंने ऐसा कब कहा ?

सुधाकर — झूठ बोलती है। तूने नहीं कहा था कि पिताजी एक तलाकशुदा को देखने और खरीदने गये हैं जिससे वह सबके दबाव में रहेगी और सबके काम आयेगी ?

मीरा — मैं क्यों झूठ बोलने लगी ?

सुधाकर — तूने नहीं कहा था कि पिताजी उसे देखने गये हैं और उसके कुछ पुर्जे ढीले हैं, जिन्हें ठीक करवा लेंगे ?

मीरा — मैंने ऐसे नहीं कहा था। मैंने कहा था

सुधाकर — (हाथ उठाकर) लगाऊँगा एक झापड़। झूठ पर झूठ बोले जा रही है।

मीरा — (मुस्कराकर हाथों पर वार रोकने की तैयारी करके) मैंने कहा था

नारायण — (हँसकर) ओह अच्छा! लगता है मीरा ने तुमको बुद्धू बनाया है ?

सुधाकर — (हाथ उठाये हुए) क्या ? कैसे ? (धीरे धीरे हाथ नीचे लाता है)

नारायण — क्यों मीरा, तुमने क्या कहा था ?

मीरा — (अपने हाथ नीचे करती हुई) मैंने केवल इतना कहा था देखने गये हैं। और भैया ने अपने आप रिक्त स्थान की पूर्ति करते हुए कह दिया कि क्या बहू देखने गये हैं ? मैंने कह दिया हाँ।

नारायण — (खिलखिला कर) बहुत खूब! बहुत अच्छे। अच्छा मजाक रहा।

मीरा — भैया को शायद बहू की चिन्ता लगी रहती है, इसलिए इन्हें कुछ और नहीं सूझता।

सुधाकर — चुप! बेवकूफ!

मीरा — बेवकूफ कौन है ? मैं या तुम ?

नारायण — बेवकूफ तो तुम बन गये। अरे बेटा, मैं बहू नहीं तुम्हारे लिए साईकिल देखने गया था। सैकण्डहैण्ड साईकिल।

[नारायण और मीरा हँसते हैं। सुधाकर झेंपता है]



डॉ० सुधीन्द्र कुमार

जन्म 28 6 1940
स्थान मुयर (आगरा)
शिक्षा एम० ए०, पी एच० डी० (हिन्दी)
सम्प्रति रीडर हिंदी विभाग पत्राचार पाठ्यक्रम विद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
कृतियाँ रीतिकालीन शृंगारभावना के स्रोत, संन्यास से पूर्व चारदीवारी के पार अपनी अपनी गृह वैदिरी हिमा हिमा न भवति वदवली की गुशत् हिन्दी साहित्य का इतिहास परिप्रेक्ष्य और प्रवत्तियाँ, पर्यायवाची कोश अभिनव पत्रकारिता सन्दर्भ-कोश, सूत्रधार
सम्प्राप्ति साहित्य सगम दिल्ली द्वारा सम्मानित
निवास मा 3 ए/20 बी जनकपुरी नई दिल्ली 110058